– अनिल कुमार आर्य
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आर्य युवक
उद्घोष
ओ३म्
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद
CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

"हमारी भाषा, हिन्दी राष्ट्रभाषा"

व्यक्तिगत-परिचय

नाम: ....

पूरा पता ....

.... दूरभाष ....

विद्यालय/कार्यालय का पता ....

जन्मतिथि .... आयु ....

वजन .... दिनांक ....

कद .... खून ग्रुप ....

शाखा: ....

परिषद् प्रवेश सं० .... कब से सदस्य हैं ....

पद ....

पुस्तकालय कार्ड सं० ....

साईकिल नं० ....

स्कुटर नं० ....

दूरभाष: घर .... कार्यालय ....

बीमा पालिसी नं० ....

बैंक खाता सं० ....

विशेष विवरण ....

....

आभार

श्री चिरंजीलाल आर्य, सी—२१८ न्यू रणजीत नगर ने मुख्य का चित्र बना कर निःशुल्क भेंट किया।

पं० गुरुदत्त पुष्पमाला का प्रथम पुष्प

आर्य युवक उद्घोष

दैनिक सन्ध्या-यज्ञ, चुने हुए ८१ प्रेरणाप्रद धार्मिक व राष्ट्रीय गीत, आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर का पूर्ण शिक्षा क्रम तथा वैदिक प्रश्नोत्तरी का अद्भुत संग्रह।

संकलनकर्ता व सम्पादक
अनिलकुमार आर्य
महामन्त्री
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश

—: प्रकाशक :—

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

दिल्ली प्रदेश

मूल्य ५.०० रु०

प्रकाशक :—मंत्री
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली आर्यसमाज मार्ग,
कबीर बस्ती, पुरानी सब्जीमण्डी, दिल्ली-७

मूल्य : ५.०० रुपये
प्रथम संस्करण २२००

आर्यसमाज स्थापना दिवस
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २०३९ वि०तद्नुसार
२६ मार्च १९८२ ई०,दयानन्दाब्द-१५७

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. न्यू आर्य ज्वैलर्स ३८१, मेनबाजार सब्जीमण्डी, दिल्ली-७
२. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१
३. फाईन ब्लाक सर्विस ७२८२, पुराना रोहतक रोड
   आजाद मार्केट, दिल्ली-६
४. आर्य प्रकाशन ८१४, कूण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-६
५. श्री मद्दयानंद वेद विद्यालय ११९, गुरुकुल गौतम नगर
   नई दिल्ली-४९
६. ब्र० पवनकुमार आर्य, मकान नं० ३८६ सैक्टर-२२ फरीदाबाद
७. भारत ट्रंक एण्ड हार्डवेयर स्टोर १३९।२ मेन बाजार रानी बाग
   दिल्ली-३४
८, आर्य युवक परिषद्, गुरुतेग बहादुर नगर, आई० डी० अस्तपाल
   के सामने, दिल्ली-९

मुद्रक :—भाटिया प्रेस, गांधी नगर, दिल्ली-३१

ओ३म्

सिंहनाद करना होगा ?

अपनी बात

किसी भी देश, जाति या समाज का भविष्य उसकी युवा पीढ़ी की अपने कर्तव्य के प्रति जागरूकता पर निर्भर करता है। क्योंकि कोई भी वदल या मोड़ युवा शक्ति ही लाया करती है। आज के अज्ञान, अन्याय, अभाव से बुरी तरह उत्पीड़ित समाज को नयी दिशा देने के लिये युवाओं को अपना दायित्व समझना ही पड़ेगा।

क्या कारण है कि आजादी के ३४ वर्षों बाद भी देश की राष्ट्र-भाषा हिन्दी अपने स्थान पर सुशोभित नहीं हो पायी। आज भी पीढ़ी दर पीढ़ी गुलामी की बन्धक पम्परा चालु है। आज भी प्रातः उठने से पहले चन्द डालरों की खातिर हजारों गऊओं को मौत के घाट उतार दिया जाता है। आज फिर साम्प्रदायिक शक्तियां सिर उठाने लगी हैं, और साथ ही देश की अखण्डता के सामने कई सवाल चुनौती बनकर खड़े हो गये हैं। दहेज, जाति-पाति व ऊंच-नीच की दीवारें देश की जड़ों को खोखला करती जा रही हैं। भारतीय संस्कृति के सामने ये कामुकता प्रधान सिनेमा व अश्लील साहित्य एक प्रश्न चिह्न बनकर उपस्थित हैं। नित नये पैदा होते भगवान देश में अन्धविश्वास और भ्रष्टाचार की जड़े मजबूत करने में रत हैं।

इन सब चुनौतियों का जवाव वन कर, जागरूक, नौजवान ही समाज का नयीं दिशा एवम् चेतना प्रदान कर सकता है।

एक ऐसी पुस्तक की कमी खटक रही थी, जो कि युवकों के शिक्षा क्रम को स्थान ले। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् युवकों के चौमुखी विकास के लिए कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करता है। आखिर इस पुस्तक "आर्य युवक उद्घोष" के माध्यम से, इस कमी को पूरा करने का बीड़ा उठा लिया। युवकों की शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इसमें दैनिक

सन्ध्या, यज्ञ-हवन, राष्ट्रीय व भक्ति भावना से ओतप्रोत प्रेरणा गीत और साथ ही आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर तीन वर्ष का सैनिक शिक्षण का पाठ्यक्रम दिया है। जिससे यह आर्य युवकों के लिये ही नहीं अपितु सर्वसाधारण के लिये भी समान रूप से उपयोगी वन गयी है।

इस पुस्तक को आर्यसमाज स्थापना दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २०३६ वि० पर प्रकाशित करते हुए आशा करता हूं कि समस्त आर्य वीर दल, आर्य युवक परिषद् व अन्य आर्य युवक संगठनों तथा आर्य जनता में यह लोकप्रिय होगी।

मैं उन सभी लेखकों जिनकी रचनाओं का समावेश किया है, सभी दानियों का जिनके सहयोग से यह प्रकाशित होने जा रही है व सभी साथियों का जो निरन्तर मेरा उत्साह पुस्तक प्रकाशनार्थ बढ़ाते रहे हैं तथा **आदरणीय डा० देवव्रत आचार्य, ब्र० राजसिंह आर्य, श्री चन्द्रमोहन आर्य व फाईन ब्लाक सर्विस** जिन्होंने समस्त ब्लाक निःशुल्क देकर पुस्तक की शोभा वढ़ाई, सभी का आभार व्यक्त करता हूं। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है आर्य जनता का भरपूर सहयोग व आर्शीवाद सदैव मिलता रहेगा, हम भी विश्वास दिलाते हैं, महर्षि दयानन्द की सेना का यह काफिला निरन्तर बढ़ता जायेगा और आर्यसमाज एकवार फिर अंगडाई लेकर खड़ा हो जायेगा।

अनिल कुमार आर्य

महामंत्री
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
दिल्ली प्रदेश

निवास
आर्य भवन
एन-२२, डा० मुखर्जी नगर
दिल्ली-९

बलमुपास्व

डा० देवव्रत आचार्य
संरक्षक
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्,
व सहायक प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल

दिनांक—१४-३-८२

सन्देश

आय समाज का भविष्य आर्य युवकों पर निर्भर है। यह प्रसन्नता की बात है कि युवक अपने उत्तरदायित्व को समझ कर कार्य क्षेत्र में आगे आ रहे हैं। आर्य-युवक एक मंच पर संगठित होकर देव दयानन्द के उद्देश्य को पूरा करें इस दिशा में यह पुस्तक एक सुप्रयास है।

डा० देवव्रत आचार्य
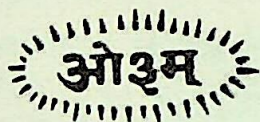
गायत्री–मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्

Om Bhur Bhuvah Swah Tat Savtur Vareniam Bhargo Devasya Dhimahi Dhiyo Yo nah Prachodayat.

तूने हमें उत्पन्न किया पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम दुखियों के कष्ट हरता है तू।
तेरा महान तेज है छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में तू हो रहा हैं विद्यमान।
तेरा ही धरते ध्यान हम मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।

ओ३म्
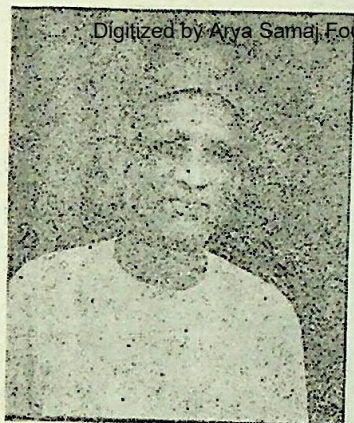
स्व०श्री माधोराम की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र श्रीकमल किशोर आर्य १०ए१५ शक्ति नगर ने१०१रु०का सहयोग दिया
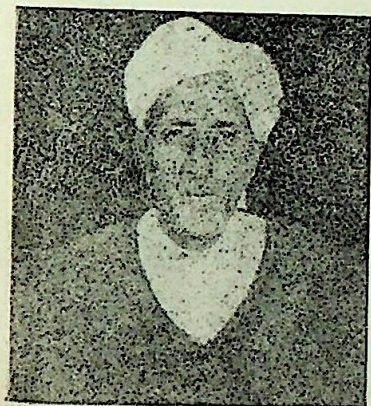
स्व० श्रीऋषिराम सपड़ा की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र श्री मनोहर लाल सपड़ा मुहल्ला कलां, सोनीपत ने १०१ रु० का सहयोग दिया।
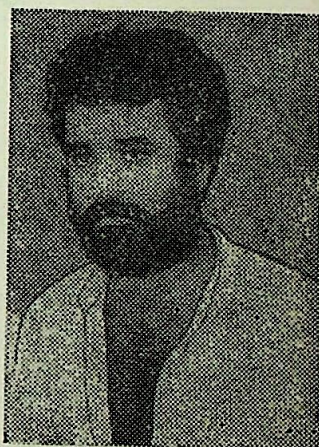
स्व० ब्र० हीरालाल आर्य की पुण्य स्मृति में उनके पिता श्री कन्हैयालाल आजादमार्केट ने २५० रु० का सहयोग दिया

ओ३म्
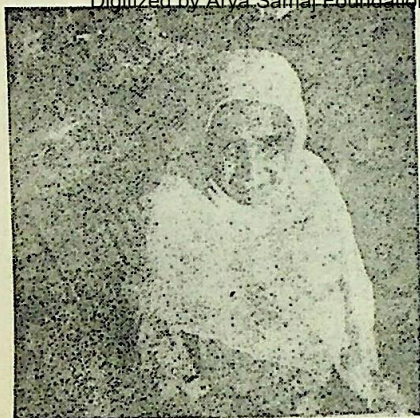
श्री मति थारी बाई सपड़ा ऐन-२२डा० मुखर्जी नगर ने १००रु० का सहयोग दिया।

स्व० श्रीमति पुष्पादेवी सपड़ा की पुण्य स्मृति में उनकेसुपुत्र श्री प्रमोद चन्द सपड़ा स्व० मुखर्जीनगर १०१ रु० का सहयोग दिया।

स्व० श्रीमति नेमवती की पुण्य स्मृति में उनके पति श्रीश्याम सुन्दर आर्य ६९ ई कमलानगर ने २५० रु० का सहयोग दिया।

ओ३म्

वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

यजु० २२ । २१ ॥

हिन्दी-अर्थ

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी ॥
होवें दुधारू गौएं, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें ॥
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी ।
हो योग - क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

कविता-अर्थ

हों विप्र हमारे वेद धनी क्षत्रिय इकले ले रोक अनी ।
गौएँ हों उजले दूध भरी, वृष भार वहन में महाबली ॥
वाहन दें जब से शैल हिला, नगरी की लाज रखें महिला ।
युवकों की रण में कीर्ति बजे, हों सभा भवन में विनय से ॥

जब मांगे अम्बर जल बरसे, सुख संपत्ति से धरती सरसे।

हम को न किसी से कुछ भय हो, तेरी जय हो जय हो जय हो

ध्वज-गान

ध्वजेयं मुदा वर्द्धते व्योम वातैः, समुड्डीयमानान्तरिक्षे विशाले
महामण्डले मण्डिते रक्त वर्णे, सुभासै रवैभासते ओ३म् पताका
प्रबुद्धार्यवर्तक देशे प्रशस्ता समस्तार्यवीरैर्धृता या समन्तात्। पुरा
ज्ञान ज्योतिः प्रदन्तं, पृथिव्यां, सुधा वेदवाण्या नुता गीतये च
समुद्धतुं कामा वयम् आर्यवीराः, समुत्थाप्य तां विश्वमेतत्प्रसुप्तम्
इयम् आर्य राष्ट्रांगभूता ध्वजासीत्, परा शक्ति रूपा ददातु
स्वशक्ति ॥

महामंगले विश्व शान्त्येक मूर्तें, सुकीर्तिः सदा वर्द्धताते प्रशस्या
समुद्घोषणा घोष्यतेवीरघोषैः, विजयिनीपताका विजयतां-२ ॥

ध्वज-गान

जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी।
विश्व—प्रेम—प्रतिमा अति प्यारी॥
सत्य-सुधा बरसाने वाला, स्नेहलता सरसाने वाला।
साम्य-सुमन विकसाने वाला, विश्व-विमोहक भव-भयहारी॥
इसके नीचे बढ़ अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरीजन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी॥
इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्गति, दानव, द्वैष दमन हों।
अति उज्जवल अति पावन मन हों, प्रेम-तरंग बहे सुखकारी॥
इसी ध्वजा के नीचे आकर ऊँच, नीच का भेद भुलाकर।
मिले विश्व मुदमंगल गाकर, पंथाई पाखण्ड बिसारी॥
इसी ध्वजा को लेकर कर में, भर दें वेद-ज्ञान घर-घर में।
सुभग शांति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अंधियारी॥

विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य—अहिंसा को अपनावें।

जग में जीवन—ज्योति जगावें, त्यागपूर्ण हो वृत्ति हमारी ।।

आर्य जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य ध्वजा की अविचल जय हो।

आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी ।।

प्रतिज्ञा

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयम्।
तन्मे राध्यतामिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ।।

१. मैं आर्य संस्कृति व सभ्यता में जो वेद के आधार पर विश्व कल्याण का मूल है, आस्था रखता हूँ।

२. व्यक्ति तथा समष्टि का शारीरिक एवं शस्त्रास्त्र सम्बन्धी बल पराक्रम आवश्यकता और अवसर के अनुरुप साधुजनों के रक्षार्थ आततायी आदि दुर्वृतों के विनाश तथा धर्म मर्यादा की स्थापना करने में ही लगाना चाहिये। इस सर्वसम्मत क्षात्र धर्म के सिद्धान्त पर आचरण करता रहूंगा।

३. शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करने के लिए नियम पूर्वक सतत व्यायाम, प्राणायाम, सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं सन्ध्या करूंगा।

४. पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वत् अर्थात् सर्वदा और सर्वथा मानव मानव का परिपालन करना मेरा परम कर्त्तव्य है।

५. अपने को सब प्रकार से समृद्ध, शक्तिशाली और सम्पन्न बनाना मेरा परम कर्तव्य है।
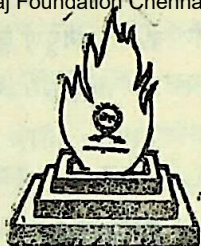
वैदिक-सन्ध्या

सन्ध्या शब्द का अर्थ

भली-भांति ध्यान किया जाए परमेश्वर का जिसमें, वह सन्ध्या है। (पञ्च०)

सन्ध्या करने का समय

रात और दिन के संयोग समय दोनों सन्ध्याओं में सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना, और उपासना करनी चाहिए (पञ्च०)

सन्ध्या करने का प्रकार

जैसे समाधिस्थ होकर योगी लोग परमात्मा का ध्यान करते हैं, वैसे ही सन्ध्योपासन किया करें। (सत्यार्थ०)

१. पहले वाह्य, जलादि से शरीर की शुद्धि।
२. और राग-द्वेष, असत्यादि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिए।
३. तब कुशा वा हाथ से मार्जन करें।
४. फिर कम-से-कम तीन प्राणायाम करें अर्थात् भीतर के वायु को बल से निकालकर यथाशक्ति बाहर ही रोक दे फिर शनैः-शनैः ग्रहण

करके कुछ भी भीतर ही रोककर बाहर निकाल दे और वहां भी कुछ रोंके। और मन में 'ओ३म्' का जप करता जाए। इससे आत्मा और मन की स्थिति सम्पादन करें।

५. इसके अनन्तर गायत्री[1] से शिखा को बांधकर रक्षा करे।

अथाचमनमन्त्रः

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥
यजु० ३६।१२

अर्थ—(देवीः आपः) सबका प्रकाशक, सबको आनन्द देनेवाला और सर्वव्यापक ईश्वर (अभिष्टये) मनोवाञ्छित आनन्द के लिए और (पीतये) पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए (नः) हमको (शम्) कल्याणकारी (भवन्तु) हो, अर्थात् हमारा कल्याण करे। वही परमेश्वर (नः) हम पर (शयोः) सुख की (अभिस्रवन्तु) सर्वथा वृष्टि करे।

इस प्रकार इस मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन आचमन करें।

'आचमन' उतने जल को हथेली में लेकर उसके मूल और मध्य देश में ओष्ठ लगाकर करें कि वह जल कण्ठ के नीचे हृदय तक पहुंचे, न उससे अधिक न न्यून।

अथेन्द्रियस्पर्शः

पश्चात् पात्र से बाईं हथेली में जल लेकर दक्षिण हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से जल स्पर्श करके प्रथम दक्षिण और पश्चात् वाम पार्श्व का निम्नलिखित मन्त्रों से स्पर्श करे।

---

१. गायत्रीमन्त्रः—

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ओं वाक् वाक्—इस मन्त्र से मुख का दक्षिण और वाम पार्श्व।

ओं प्राणः प्राणः—इससे दक्षिण और वाम नासिका के छिद्र।

ओं चक्षुश्चक्षुः—इससे दक्षिण और वाम नेत्र।

ओ श्रोत्रं श्रोत्रम्—इससे दक्षिण और वाम श्रोत।

ओं नाभिः—इससे नाभि।

ओं हृदयम्—इससे हृदय।

ओं कण्ठः—इससे कण्ठ।

ओं शिरः—इससे मस्तक।

ओं बाहुभ्यां यशोबलम्—इससे दोनों भुजाओं के मूल स्कन्ध।

ओं करतलकरपृष्ठे—इससे दोनों हाथों के ऊपर-तले स्पर्श करें।

अर्थ—हे ईश्वर आपकी कृपा से (वाक् वाक्) मेरी वाणी और रसना (प्राणः प्राणः) मेरा श्वासोच्छ्वास अथवा प्राण और अपान (चक्षुः चक्षुः) मेरे दोनों नेत्र, (श्रोत्रम्, श्रोत्रम्) मेरे दोनों कान (नाभिः) मेरी नाभि, प्रजनन यन्त्र का केन्द्र (हृदयम्) मेरा हृदय (कण्ठः) मेरा कण्ठ (शिरः) मेरा शिर, (बाहुभ्याम्) मेरी भुजाएं और (करतलकरपृष्ठे) मेरे हाथ की हथेली और पीठ-सभी अंग सुदृढ़, यश और बल से युक्त हों।

इस प्रकार से ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक इन्द्रियाँ का स्पर्श करें। इसका अभिप्राय यह है कि ईश्वर की कृपा से हमारी सब इन्द्रियां बलवान् रहें।

अथेश्वरप्रार्थनापूर्वकमार्जनमन्त्राः

पश्चात् मार्जन अर्थात् मध्यमा और अनामिका अंगुली के अग्रभाग से नेत्रादि अङ्गों पर जल छिड़कें।

ओं भूः पुनातु शिरसि—इस मन्त्र से शिर पर।

ओं भुवः पुनातुः नेत्रयोः—इस मन्त्र से दोनों नेत्रों पर।

ओं स्वः पुनातु कण्ठे—इस मन्त्र से कण्ठ पर।

ओं महः पुनातु हृदये—इस मन्त्र से हृदय पर।

ओं जनः पुनातु नाभ्याम्—इससे नाभि पर।

ओं तपः पुनातु पादयोः—इससे दोनों पैरों पर।

ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि—इससे पुनः मस्तक पर।

ओं खम्ब्रह्म पुनातु सर्वत्र—इस मन्त्र से सब अंगों पर छींटा देवें।

अर्थ—(भूः पुनातु शिरसि) सत्यस्वरूप ब्रह्म सिर में पवित्रता करे। (भुवः पुनातु नेत्रयोः) चित्स्वरूप=ज्ञानस्वरूप ब्रह्म हमारे नेत्रों में पवित्रता करे। (स्वः पुनातु कण्ठे) आनन्दस्वरूप ब्रह्म कण्ठ में पवित्रता करे। (महः पुनातु हृदये) सबसे बड़ा और सबका पूज्य ब्रह्म हमारे हृदय में पवित्रता करे। (जनः पुनातु नाभ्याम्) सब जगत् का उत्पादक ब्रह्म हमारी नाभि में पवित्रता करे। (तपः पुनातु पादयोः) दुष्टों को सन्ताप-कारी और ज्ञानमय ब्रह्म हमारे पैरों में पवित्रता करे। (सत्यं पुनातु पुनः शिरसि) अविनाशी ब्रह्म पुनः हमारे सिर में पवित्रता करे। (खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र) आकाश के तुल्य व्यापक ब्रह्म सर्वत्र पवित्रता करे।

इस प्रकार ईश्वर के नामों के अर्थों का स्मरण करते हुए मार्जन करें।

प्राणायाममन्त्रः

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्॥

तैत्ति० प्रपा० १। अनु० २७

अर्थ—(ओम् भूः) सर्वरक्षक परमात्मा प्राणों का प्राण है। (ओम् भुवः) शुद्धस्वरूप परमात्मा दुःख विनाशक है। (ओम् स्वः) सर्व व्यापक परमात्मा आनन्दस्वरूप है। (ओम् महः) महत्तम परमात्मा सब जगत् में व्यापक होने से सबसे बड़ा और सबका पूजनीय है। (ओम् जनः) सर्व जगत् का उत्पादक होने से परमेश्वर का नाम 'जनः' है। (ओम् तपः) दुष्टों को सन्तापकारी और ज्ञानस्वरूप होने से ईश्वर को 'तप' कहते हैं। (ओम् सत्यम्) अविनाशी होने से परमेश्वर का 'सत्य'

नाम है।

इसके उच्चारण और अर्थ विचारपूर्वक प्राणायामों को करें। इस प्रकार प्राणायाम करके अर्थात् भीतर के वायु को बल से नासिका के द्वारा बाहर ही रोक के पुनः धीरे-धीरे भीतर लेके, पुनः बल से बाहर फेंक के रोकने से मन और आत्मा को स्थिर करके, आत्मा के बीच में जो अन्तर्यामी रूप से ज्ञान और आनन्दस्वरूप व्यापक परमेश्वर है, उसमें अपने आपको मग्न करके, अत्यन्त आनन्दित होना चाहिए। जैसे गोताखोर जल में डुबकी मारके शुद्ध होके बाहर आता है, वैसे ही सब जीव लोग अपने आत्माओं को शुद्ध ज्ञान, आनन्दस्वरूप व्यापक परमेश्वर में मग्न करके नित्य शुद्ध करें।

अघमर्षणमन्त्राः

तत्पश्चात् सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर और सृष्टिक्रम का विचार नीचे लिखे मन्त्रों से करें और जगदीश्वर को न्यायकारी, सर्वत्र, सर्वदा सब जीवों के कर्मों के द्रष्टा को निश्चित मानके पाप की ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने देवे, किन्तु सदा धर्मयुक्त कर्मों का वर्तमान रखें।

ओम्। ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो ऽअर्णवः॥ १॥

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो ऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥ २॥

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥ ३॥

अर्थ—(अभीद्धात्) ईश्वर के ज्ञानमय (तपसः) सामर्थ्य से (ऋतम्) सब विद्या का खजाना वेद (अजायत) प्रकट हुआ (च) और उसी परमेश्वर के अनन्त सामर्थ्य से (सत्यम्) त्रिगुणात्मक अर्थात् सत्व, रजो और तमोगुण से युक्त प्रकृति जिसके नाम अव्यक्त, अव्याकृत, सत्,

प्रधान हैं जो स्थूल और सूक्ष्म जगत् का कारण है वह प्रकृति कार्यरूप में प्रकट हुई। (च) तथा (तत) उसी ज्ञानमय ईश्वर के अनन्त सामर्थ्य से (रात्रीः) महारात्रि अर्थात् हजार चतुर्युगी प्रमाण की प्रलय (अजायत) उत्पन्न हुई। (ततः) उसी ज्ञानमय सामर्थ्य से (अर्णवः समुद्राः) पृथिवी और मेघमण्डल में जो महासमुद्र है वह उत्पन्न हुआ।

(अर्णवात् समुद्रात् अधि) उस जल से भरे समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् (संवत्सर अजायत) संवत्सर अर्थात् क्षण, मुहूर्त्त, प्रहर आदि काल उत्पन्न हुआ। (वशी) वश में रखने वाले परमेश्वर ने (मिषतः) सहज स्वभाव से (विश्वस्य) जगत् के (अहोरात्राणि) रात्रि, घटिका, पल और क्षण आदि (व्यदधत्) रचे हैं।

(धाता) सब जगत् का धारण और पोषण करने वाले उसी ज्ञान-मय प्रभु ने अपने अनन्त सामर्थ्य से (सूर्याचन्द्रमसौ) सूर्य और चन्द्रमा को (च) और (दिवम्) द्युलोक को (च) और (पृथिवीम्) पृथिवीलोक को (च) और (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष को (अथो) तथा (स्वः) मध्य-वर्ती लोक-लोकान्तरों को और उन लोकों में सुख विशेष के पदार्थों को (यथापूर्वम्) पूर्व कल्प के अनुसार और जैसा कि उसके सर्वज्ञ विज्ञान में जगत् के रचने का ज्ञान था और जिस प्रकार पूर्व कल्प की सृष्टि में जगत् की रचना थी और जैसे जीवों के पाप-पुण्य थे, उनके अनुसार ईश्वर ने मनुष्य आदि प्राणियों के देह बनाये हैं।

वेद से लेके पृथिवी पर्यन्त जो यह जगत् है, सो सब ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से ही प्रकाशित हुआ है और ईश्वर सबको उत्पन्न करके, सब में व्यापक होके अन्तर्यामीरूप से सबके पाप-पुण्यों को देखता हुआ, पक्षपात छोड़के सत्यन्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है।

ऐसा निश्चित जानके, ईश्वर से भय करके सब मनुष्यों को उचित है कि मन, कर्म और वचन से पापकर्मों को कभी न करें। इसी का

नाम अघमर्षण है अर्थात् ईश्वर सबके अन्तःकरण के कर्मों को देख

रहा है इससे पापकर्मों का आचरण मनुष्य लोग सर्वथा छोड़ देवें।

पुनः **शन्नो देवी**···इस मन्त्र से तीन आचमन करें।

तदनन्तर गायत्र्यादि मन्त्रों के अर्थ विचारपूर्वक परमेश्वर के गुण और उपकार का ध्यान कर पश्चात् प्रार्थना करें अर्थात् सब उत्तम कार्यों में ईश्वर का सहाय चाहें और सदा पश्चात्ताप करें कि मनुष्य शरीर धारण करके हम लोगों से जगत् का उपकार कुछ भी नहीं बनता। जैसा कि ईश्वर ने सब पदार्थों की उत्पत्ति करके सब जगत का उपकार किया है वैसे हम लोग भी सबका उपकार करें। इस काम में परमेश्वर हमको सहाय करे कि जिससे हम लोग सब को सदा सुख देते रहें।

तदनन्तर ईश्वर की उपासना कर, सो दो प्रकार की है—एक सगुण और दूसरी निर्गुण।

सगुण उपासना—जैसे ईश्वर सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, चेतन, व्यापक, अन्तर्यामी सबका उत्पादक, धारण करनेहारा, मङ्गलमय, शुद्ध, सनातन, ज्ञान और आनन्दस्वरूप है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पदार्थों को देने वाला, सबका पिता, माता, बन्धु, मित्र, राजा और न्यायाधीश है, इत्यादि ईश्वर के गुण विचारपूर्वक उपासना करने का नाम सगुणोपासना है।

निर्गुण-उपासना...निर्गुणोपासना इस प्रकार से करनी चाहिए कि ईश्वर अनादि अनन्त=जिसका आदि और अन्त नहीं, अजन्मा, अमृत्यु=जिसका जन्म और मरण नहीं, निराकार, निर्विकार=जिसका आकार और जिसमें कोई विकार नहीं। जिसमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, अन्याय, अधर्म, रोग, दोष, अज्ञान और मलिनता नहीं है। जिसका परिमाण, छेदन, बन्धन, इन्द्रियों से दर्शन, ग्रहण और कम्पन्न नहीं होता है। जिसको भूख, प्यास, शीतोषण, हर्ष और शोक कभी नहीं

होते । जो उलटा काम कभी नहीं करता इत्यादि जो जगत् के गुणों से ईश्वर को अलग जानके ध्यान करना वह निर्गुणोपासना कहाती है ।

अथ मनसापरिक्रमा मन्त्राः

निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना करें—

ओ३म् । प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्योनमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। १ ।।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमोअधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। २ ।।

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षि तान्नमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो3स्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। ३।।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिता शनिरिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। ४ ।।

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपति कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। ५ ।।

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। ६ ।।

अर्थ—(**प्राची दिक्**) जिस ओर अपना मुख हो उस ओर (**अग्निः**)

ज्ञानस्वरूप परमेश्वर (अधिपतिः) स्वामी है। वह (असितः) बन्धन-रहित प्रभु (रक्षिताः) सब प्रकार से रक्षा करने वाला है। (आदित्या इषवः) प्राण और किरण उसके बाणों के तुल्य हैं। (तेभ्यः अधिपतिभ्यः नमो नमः) इन सब गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों को हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं। (रक्षितृभ्यः नमः) जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत की रक्षा करने वाले हैं, उनको नमस्कार हो। (एभ्यः इषुभ्यः नमः अस्तु) जो पापियों को बाण के समान पीड़ा देने वाले और धर्मात्माओं की रक्षा के साधन प्रभु के रचे बाण तुल्य हैं उनके लिए हमारा नमस्कार हो। (यः) जो कोई प्राणी अज्ञान से (अस्मान्) हमसे (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिस अज्ञान से धार्मिक पुरुष का तथा पापी पुरुष का (वयम्) हम लोग (द्विष्मः) द्वेष करते हैं (तं वो जम्भे दध्मः) उन सब की बुराई को उन बाणों के बीच में दग्ध कर देते हैं, जिससे किसीसे हम लोग वैर न करें और कोई भी प्राणी हम से वैर न करे किन्तु हम लोग परस्पर मित्रभाव से वर्तें ॥ १ ॥

(दक्षिणा दिक्) जो हमारे दाहिनी ओर दक्षिण दिशा है (इन्द्रः) परमैश्वर्ययुक्त परमेश्वर उसका (अधिपतिः) स्वामी है। (तिरश्चिराजिः) कीट, पतङ्ग, वृश्चिक आदि की पंक्ति (रक्षिता) रक्षक है (पितरः) ज्ञानी लोग (इषवः) बाण के तुल्य हैं तेभ्यो॰ आदि पूर्ववत ॥ २ ॥

(प्रतीची दिक्) अपने पीछे की ओर (वरुणः) सर्वोत्तम परमेश्वर (अधिपतिः) सब का राजा है। वह (पृदाकू) बड़े-बड़े अजगर, सर्प आदि विषधारी प्राणियों से=के द्वारा (रक्षिता) रक्षा करनेवाला है। (अन्नम् इषवः) पृथिव्यादि पदार्थ उसके बाणों के तुल्य हैं। तेभ्यो॰ आदि पूर्ववत् ॥ ३ ॥

(उदीची दिक्) जो अपने बाईं ओर की दिशा है उसमें (सोमः) सर्व-जगदुत्पादक और शान्त्यादि गुणों से आनन्द देने वाला प्रभु (अधिपतिः) स्वामी हैं। (स्वजो रक्षिता) अजन्मा प्रभु रक्षा करने वाला है।

(अशनि: इषव:) विद्युत् उसके बाणतुल्य हैं। तेभ्यो आदि पूर्ववत् ॥ ४ ॥

(ध्रुवा दिक्) जो अपने नीचे की ओर दिशा है। उसमें (विष्णु:) सर्वव्यापक परमेश्वर (अधिपति:) स्वामी है। (कल्माषग्रीव:) हरित रंग वाले वृक्षादि ग्रीवा के समान हैं जिसके ऐसे वनादि (रक्षिता) रक्षक हैं। (वीरुध:) वृक्ष (इषव:) बाणतुल्य हैं। तेभ्यो० आदि पूर्ववत ॥ ५ ॥

(ऊर्ध्वा दिक्) अपने ऊपर की ओर जो दिशा है उसमें (बृहस्पति:) वाणी, वेद-शास्त्र और आकाशादि का पति परमेश्वर (अधिपति:) स्वामी है। (श्वित्र:) ज्ञानमय प्रभु (रक्षिता) रक्षक है। (वर्षम् इषव) वर्षा के बिन्दु बाण के तुल्य हैं। तेभ्यो० आदि पूर्ववत् ॥ ६ ॥

इन मन्त्रों को पढ़ते जाना और अपने मन से चारों ओर बाहर-भीतर परमात्मा को पूर्ण जानकर निर्भय, निश्शङ्क, उत्साही, आनन्दित पुरुषार्थी रहना।

अथोपस्थानमन्त्राः

तत्पश्चात् परमात्मा का उपस्थान अर्थात् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अति निकट परमात्मा है, ऐसी बुद्धि करे।

ओ३म्। उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ १ ॥

अर्थ—(**वयम्**) हम (**तमसः**) सब अविद्या-अन्धकार से (**परि**) पृथक् (**स्व.**) आनन्द एवं प्रकाशस्वरूप (**उत्तरम्**) प्रलय के पश्चात भी सदा वर्तमान (**देवत्रा**) सब दिव्य गुण वाले पदार्थों में भी अनन्त दिव्य गुणों से युक्त, प्रकाश करने वालों में भी (**देवम्**) प्रकाश करने वाले तथा धर्मात्माओं और मुक्ति की इच्छा करने वाले तथा योगयुक्तों को पूर्ण आनन्द देने वाले और प्रसन्न करने वाले (**सूर्यम्**) चराचर जगत् के आत्मा, सञ्चालक (**उत्तमम्**) सर्वोत्कृष्ट (**ज्योतिः**) ज्ञानस्वरूप और अपने प्रकाश से प्रकाशित आपको (**पश्यन्तः**) साक्षात्कार करते हुए

(उत्) सत्य एवं उत्कृष्ट श्रद्धा से युक्त (अगन्म) प्राप्त होवें अथवा प्राप्त हुए हैं, हमारी रक्षा करनी आपके हाथ है क्योंकि हम लोग आपके शरण हैं।

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ २॥

अर्थ—(जातवेदसम्) जिससे ऋग्वेदादि चार वेद प्रसिद्ध हुए हैं, जो प्रकृत्यादि सब भूतों में व्याप्त हो रहा है, जो सब जगत् को जानता है तथा जो सब जगत् का उत्पादक है (देवम्) देवों के देव (सूर्यम्) चराचर जगत् के सञ्चालक, सब जीवादि जगत् के प्रकाशक (त्यम्) उस परमात्मा को (विश्वाय दृशे) विश्व-विद्या की प्राप्ति के लिए हम लोग उपासते हैं। (केतवः) वेद की श्रुतियाँ और विविध जगत् के पृथक् पृथक्-रचना आदि गुण (उ) तर्क-वितर्क के साथ (उद्वहन्ति) उसी परमेश्वर को जनाते और प्राप्त कराते हैं। उस विश्व के आत्मा अन्तर्यामी परमेश्वर ही की हम उपासना सदा करें, अन्य किसीकी नहीं॥ २॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ॐ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा॥ ३॥

अर्थ—(जगतः च तस्थुषः) जो प्राणी और जड़ जगत् का (आत्मा) आत्मा है उसको (सूर्यः) सूर्य कहते है (द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम् आ अप्राः) जो द्युलोक, पृथिवीलोक और अन्तरिक्षलोकों को बनाके धारण और रक्षण करने वाला है, जो इन सब लोकों को पूर्ण कर रहा है जो (मित्रस्य) रागद्वेष रहित मनुष्य, सूर्यलोक और प्राण का (चक्षुः) प्रकाशक है (वरुणस्य) सब उत्तम कामों में वर्तमान मनुष्य का, चन्द्रलोक और अपान का (अग्नेः) ज्ञान से प्रकाशमान का, अन्य सब जीवाग्नियों तथा विद्युत आदि अग्नि का प्रकाशक है (चित्रम्) जो अदभुत स्वरूप है (देवानाम्) जो विद्वानों के हृदय में सदा प्रकाशित रहता है (अनीकम्) जो सकल मनुष्यों के सब दुःखनाश करने के लिए परम उत्तम बल है वह परमेश्वर (उद् अगात्) हमारे हृदयों में यथावत्

प्रकाशित रहे ॥ ३॥ 卐

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ॐ शृणुयाम शरद शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरद शतात ॥४॥

। यजु० ३६।२४

अर्थ—

(चक्षुः) जो ब्रह्म सबका द्रष्टा, धार्मिक विद्वानों का परम हित-कारक तथा (पुरस्तात्) सृष्टि से पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्य स्वरूप से वर्तमान रहता (शुक्रम्) सब जगत् का बनाने वाला और तीनों कालों में शुद्ध रहने वाले (उच्चरत्) उत्कृष्टता से सर्वत्र व्याप्त, विज्ञानस्वरूप प्रलय के पश्चात भी वर्तमान रहने वाले (तत्) उस ब्रह्म को हम लोग (शरदः शतं पश्येम) सौ वर्ष पर्यन्त देखें और उसकी कृपा से (शरदः शतं) सौ वर्ष (जीवेम) प्राणों को धारण करें तथा (शरदः शतम्) उसी ब्रह्म को सौ वर्ष (शृणुयाम) सुनें। उसी ब्रह्म को और उसके गुणों को (शरदः शतम्) सौ वर्ष तक (प्रब्रवाम) अन्यों के लिए उपदेश करें। इस प्रकार उसकी उपासना, उस पर विश्वास करने और उसकी कृपा से (शरदः शतम्) सौ वर्ष (अदीनाः स्याम) स्वतन्त्र रहें किसी के अधीन न रहें। (भूयश्च शरदः शतात्) उसी परमेश्वर की आज्ञा पालन और कृपा से सौ वर्षों के उपरान्त भी हम लोग देखें, जीवें, सुनें सुनावें और स्वतन्त्र रहें अर्थात् आरोग्य शरीर, दृढ़ इन्द्रिय, शुद्ध मन और आनन्द सहित हमारा आत्मा सदा रहे।

यही एक परमेश्वर सबका उपास्य देव है, जो मनुष्य इसको छोड़के दूसरे की उपासना करता है वह पशु के समान होके सब दिन दुःख भोगता रहता है।

इसलिए प्रेम में अत्यन्त मग्न होके अपने आत्मा और मन को परमेश्वर में जोड़के इन मन्त्रों से स्तुति और प्रार्थना सदा करते रहें।

卐 (स्वाहा) यह मेरी सत्य हार्दिक कामना है।

अथ गुरुमन्त्रः

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अर्थ—(**ओम् भूर्भुवः स्वः**) जो अकार, उकार और मकार के योग से 'ओम्' यह अक्षर सिद्ध है, सो यह परमेश्वर के सब नामों में उत्तम नाम है जिसमें सब नामों के अर्थ आ जाते हैं। जैसे पिता-पुत्र का प्रेम सम्बन्ध है, वैसे ओंकार के साथ परमात्मा का सम्बन्ध है। इस एक नाम से ईश्वर के सब नामों का बोध होता है। जैसे—

अकार से—(**विराट्**) जो विविध जगत् का प्रकाश करने वाला है (**अग्निः**) जो ज्ञानस्वरूप और सर्वत्र प्राप्त हो रहा है (**विश्वः**) जिसमें सब जगत् प्रवेश कर रहा है और जो सर्वत्र प्रविष्ट है इत्यादि नामार्थ अकार से जानने चाहिएं।

उकार से—(**हिरण्यगर्भः**) जिसके गर्भ में प्रकाश करने वाले सूर्यादि लोक हैं और जो प्रकाश करने हारे सूर्यादि लोकों का अधिष्ठान है (**वायुः**) जो अनन्त बल वाला और सब जगत् का धारण करनेहारा है (**तैजसः**) जो प्रकाशस्वरूप और सब जगत् का प्रकाशक है, इत्यादि अर्थ उकार से जानने चाहिएं।

मकार से—(**ईश्वरः**) जो सब जगत् का उत्पादक, सर्वशक्तिमान्, स्वामी और न्यायकारी है (**आदित्यः**) जो नाशरहित है (**प्राज्ञः**) जो ज्ञान-स्वरूप और सर्वज्ञ है, इत्यादि अर्थ मकार से समझ लेना।

अब संक्षेप से महाव्याहृतियों का अर्थ लिखते हैं (**भूरिति वै प्राणः**) जो सब जगत् के जीने का हेतु और प्राण से भी प्रिय है, इससे परमेश्वर का नाम 'भूः' है। (**भुवरित्यपानः**) जो मुक्ति की इच्छा करने वालों, मुक्तों और अपने सेवक धर्मात्माओं को सब दुःखों से अलग करके सर्वदा सुख में रखता है इसलिए परमेश्वर का नाम 'भुवः' है। (**स्वरितिव्यानः**) जो सब जगत् में व्यापक होके सबको नियम में रखता और सबका

ठहरने का स्थान तथा सुखस्वरूप है इससे परमेश्वर का नाम 'स्वः' है। यह व्याहृतियों का संक्षेप में अर्थ लिख दिया।

अब गायत्री मन्त्र का अर्थ लिखते हैं—(सवितुः) जो सब जगत् का उत्पन्न करनेहारा और ऐश्वर्य का देने वाला है, (देवस्य) जो सबके आत्माओं का प्रकाश करने वाला और सब सुखों का दाता है उसका (वरेण्यम्) जो अत्यन्त ग्रहण करने के योग्य (भर्गः) शुद्ध विज्ञानस्वरूप है (तत्) उसको (धीमहि) हम लोग सदा प्रेमभक्ति से निश्चय करके अपने आत्मा में धारण करें। किस प्रयोजन के लिए! कि (यः) जो पूर्वोक्त सविता देव परमेश्वर है वह (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) कृपा करके सब बुरे कामों से अलग करके सदा उत्तम कामों में प्रवृत्त करे।

इसलिए सब लोगों को चाहिए कि सत्, चित्, आनन्दस्वरूप, नित्यज्ञानी, नित्यमुक्त, अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, कृपालु सब जगत् के जनक और धारण करनेहारे परमेश्वर ही की सदा उपासना करें कि जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जो मनुष्य देहरूप वृक्ष के चार फल हैं वे उसकी भक्ति और कृपा से सर्वथा सब मनुष्यों को प्राप्त हों। यह गायत्री मन्त्र का अर्थ संक्षेप से हो चुका।

अथ समर्पणम्

इस प्रकार से सब मन्त्रों के अर्थों से परमेश्वर की सम्यक् उपासना करके आगे समर्पण करें।

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयानेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

हे ईश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जो-जो उत्तम काम हम लोग करते हैं वे सब आपके अर्पण हैं, जिससे हम लोग आपको प्राप्त होकर, धर्म—जो सत्य न्याय का आचरण करना है, अर्थ—जो धर्म से पदार्थों की प्राप्त करना है, और काम—जो धर्म और अर्थ से इष्ट भोगों का सेवन करना है और मोक्ष—जो सब दुःखों से छूटकर सदा आनन्द

में रहना है—इन चार पदार्थों की सिद्धि हमको शीघ्र प्राप्त हो।

तत ईश्वरं नमस्कुर्यात्

ओ३म् । नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ यजु० १६।४१

अर्थ—(**नमः शम्भवाय च**) जो सुखस्वरूप (**मयो भवाय च**) संसार के उत्तम सुखों का देने वाला (**नमः शंकराय च**) कल्याण का कर्त्ता, मोक्षरूप, धर्मयुक्त कामों को ही करने वाला (**मयस्कराय च**) अपने भक्तों को सुख का देने वाला और धर्मकार्यों में युक्त करने वाला (**नमः शिवाय च शिवतराय च**) अत्यन्त मङ्गलस्वरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष-सुख देनेहारा है, उसको हमारा वारम्बार नमस्कार हो !

॥ इति सन्ध्योपासनविधिः ॥

दैनिक-यज्ञ

॥ आचमनमन्त्राः ॥

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥ इससे एक

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥ इससे दूसरा

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥

तैत्ति[illegible]आरण्यक प्र० १० । अनु० ३२, ३५ ॥

इससे तीसरा आचमन करके तत्पश्चात् जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रों से अंगों को स्पर्श करें।

॥ अंगस्पर्शमन्त्राः ॥

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु ॥ इस मन्त्र से मुख

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों आँख

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों कान

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों बाहु

ओं ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों जंघा और

ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥

पारस्कर गृ० का० । कण्डिका ३ । सू० २५ ॥

इस मन्त्र से दाहिने हाथ से जल स्पर्श करके मार्जन करना ।

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनामंत्राः

सब संस्कारों के आदि में निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ और अर्थ द्वारा एक विद्वान् वा बुद्धिमान् ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना स्थिरचित्त होकर परमात्मा में ध्यान लगा के करे, और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें और विचारें—

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रन्तन्न आ सुव ॥१॥ यजु० अ० ३०। मन्त्र ३ ॥

अर्थ—हे (सवितः) सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्रऐश्वर्ययुक्त (देव) शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (परा, सुव) दूर कर दीजिये। (यत्) जो (भद्रम्) कल्याण-कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है, (तत्) वह सब हमको (आ सुव) प्राप्त कीजिये ॥१॥

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥ यजु० १३ । ४ ॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥ यजु० २५ । १३ ॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव । य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥ यजु० २५ । ११ ॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः । यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥ यजु० ३२ । ६ ॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते

जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥ ऋ० १०।१२१।१०।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥ यजु० ३२। १० ॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

यजु ४०। १६ ॥

निम्न मंत्र से अग्नि प्रदीप्त करें, फिर अगले मंत्र को बोलकर उस अग्नि को हवनकुण्ड में रख दें।

अग्न्याधान मन्त्रः

ओं भूर्भुवः स्वः ॥ गोभिल० गृ० प्र० १। खं १ सू० ११ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण करके ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य के घर से अग्नि ला अथवा घृत का दीपक जला, उससे कपूर में लगा, किसी एक पात्र में धर कर उसमें छोटी-छोटी लकड़ी लगा के यजमान वा पुरोहित उस पात्र को दोनों हाथों से उठा, यदि गर्म हो तो चिमटे से पकड़ कर अगले मन्त्र से आधान करे। वह मन्त्र यह है—

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥ यजु० ३। ५॥

इस मन्त्र से वेदी के बीच में अग्नि को धर कर उस पर छोटे-छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर, अगला मन्त्र पढ़ के व्यजन से अग्नि प्रदीप्त करे।

अग्नि प्रज्जवलित करने का मन्त्र

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ऊं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

यजु० १५।५४॥

एक-एक मन्त्र से एक-एक समिधा अग्नि में चढ़ावें। वे मन्त्र ये हैं—

समिदाधान के मन्त्र

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे। इदं न मम॥१॥ इससे पहली

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नयेइदन्न मम॥२॥ इससे और

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे। इदन्न मम॥३॥ इससे दूसरी समिधा

तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदं न मम॥४॥ यजु० अ० ३। मं० १, २, ३॥

इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें।

इन मन्त्रों से समिदाधान करके नीचे लिखे मन्त्र से पांच घृत की आहुति देवें।

घृताहुति-मन्त्रः

ओं अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजयापशु भिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे। इदं न मम॥१॥

तत्पश्चात् अञ्जलि में जल लेके वेदी के पूर्व दिशा आदि चारों ओर छिड़कावें, इसके ये मन्त्र हैं:—

जल-प्रसेचन के मन्त्र

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व। इस मन्त्र से पूर्व में

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ इससे पश्चिम में

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ इससे उत्तर में और—

गोभिल गृ० प्र० १ । खं० ३ । सू० १-३ ॥

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ यजु० अ० ३० । मं० १ ॥

इस मन्त्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कावें।

इसके पश्चात् मुख्य होम के आदि और अन्त में जो आहुति दी जाती हैं उनमें से यज्ञ-कुण्ड के उत्तर भाग में जो एक आहुति और यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में दूसरी आहुति देनी होती है, उन का नाम "आघारावाज्याहुति" कहते हैं। और जो कुण्ड के मध्य में आहुतियां दी जाती हैं उनका नाम "आज्यभागाहुति" कहते हैं। सो घृतपात्र में से स्रुवा को भर अंगूठा मध्यमा अनामिका से स्रुवा को पकड़ के—

आघारावाज्याहुतिमन्त्रः

ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये। इदं न मम ॥

इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग अग्नि में,

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय। इदं न मम

॥ गो० गृ० प्र०१। खं० ८ । सू०१-३ ॥

इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति

---

१. जल छिड़कने की विधि ऐसी है, पूर्व में—दक्षिण से उत्तर की ओर, पश्चिम में—दक्षिण से उत्तर की ओर, उत्तर मे—पश्चिम से पूर्व की ओर तथा 'देव सवितः' मन्त्र से पूर्व से आरम्भ करके वेदी के चारो ओर जल छिड़कना चाहिए।

—सम्पादक

देनी, तत्पश्चात् ।

आज्यभागाहुतिमन्त्रः

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम ।।

ओं इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय। इदं न मम ।।

इन दो मन्त्रों से वेदी के मध्य में दो आहुति देनी।

प्रातःकाल प्रधान होम 'मुख्य होम'

आघारावाज्यभागाहुति चार देके नीचे लिखे हुए मन्त्रों से प्रातः काल अग्निहोत्र कर।

प्रातःकाल आहुति के मन्त्र

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।।१।।

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।२।।

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।३।।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।४।।

अब निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातः सायं आहुति देनी चाहिए।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय। इदं न मम ।।१।।

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय। इदं न मम ।।२।।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय। इदं न मम ।।३।।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्नि-वाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः। इदं न मम ।।४।।

ओं आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।।५।।

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं

कुरु स्वाहा ।।६।। यजु० अ० ३२ । मं० १४ ।।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ।।७।।

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।।८।।

यजु० अ० ४० । मं० १६ ।।

आहिताग्नि होम

अब नीचे लिखे मन्त्र सायंकाल में अग्निहोत्र के जानो—

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।१।।

ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।२।।

इस तीसरे मन्त्र को मन में उच्चारण करके तीसरी आहुति देनी ।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।३।।

ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।।४।।

यजु० अ० ३ । मं० ९-१० ।।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।।१।।

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।।२।।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।।३।।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।।४।।

ओम् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।। ५।।

ओम् सर्वं वै पूर्णं ॐ स्वाहा ।

(इससे तीन वार आहुति देवें)

यज्ञ प्रार्थना

पूजनीय प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये ।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिये ।।
वेद की बोलें ऋचाएं, सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक-सागर से तरें ।।
अश्वमेधादिक रचाएँ यज्ञ पर-उपकार को ।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को ।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग-पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहे ।।
भावना मिट जाय मन से पाप अत्याचार की ।
कामनाएं पूर्ण होंवे यज्ञ से नर-नार की ।।
लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिये ।
वायु, जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये ।।
स्वार्थभाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो ।
इदन्न मम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ।।
प्रेम रस में पूर्ण होकर वन्दना हम कर रहे ।
नाथ करुणारूप करुणा आपकी सब पर रहे ।।

प्रातःकाल पाठ करने के मंत्र

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ।।१।। ऋ०म०७।सू०४१।मं०१

ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो

विधर्त्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं
भक्षीत्याह ॥२॥
ओं भग: प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा
ददन्न: ।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्त:
स्याम ॥३॥
ओं उतेदानीं भगवन्त: स्यामोत प्रपित्व उतमध्ये
आह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानांसुमतौ
स्याम ॥४॥
ओं भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्त:
स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता
भवेह ॥५॥

सोते समय पाठ करने के मन्त्र

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मन:
शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥
ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति
विदथेषु धीरा: ।
यदपूर्वं यक्षमन्त: प्रजानां तन्मे मन: शिवसंकल्प-
मस्तु ॥२॥

ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं
प्रजासु ।
यस्मान्नऽऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥३॥
ओं येनेदं भूतम् भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन
सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्प-
मस्तु ॥४॥
ओं यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता
रथनाभाविवारा ।
यस्मिश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥५॥
ओं सुषारथिरश्वान्निव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशु-
भिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥६॥
यजु० ११।८३॥

भोजन से पूर्व बोलने का मन्त्र

ओं अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यन्नमीवस्य शुष्मिणः ।
प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहिद्विपदे चतुष्पदे ॥

भोजन समाप्ति पर बोलने वाला मन्त्र

ओं मोघमन्नं विन्दते अप्रचेता सत्य ब्रवीमि वध इत्स तस्य ।
नार्यमणं पुष्यतिनो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ॥

यज्ञोपवीत का मन्त्र

ओं यज्ञोपवीतं परम पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।२।।
ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोऽपनह्यामि ।।३।।
पार०गु०२।२।११।।

आर्य युवकों के उद्घोष

संगठन गीत—१

संगठन हम करें आपदों से लड़ें हमने ठाना।
हम बदल देंगे सारा जमाना ।।

वीर प्रताप के शेर जागो, वीर बन्दा की शमशेर जागो।
बज रहा है बिगुल नौजवां तू निकल रण में
जाना ।।१।। हम बदल……

शेर शिवराज की तेग खड़के, ध्वनि हर-
हर महादेव भड़के।
शक्ति हो साथ में ओ३म् ध्वज हाथ में बढ़ते
जाना ।।२।। हम बदल……

चाहे आंधी या तूफान आये वर्षा ओले या
बादल हों छाये।
हम रुकेंगे नहीं और झुकेंगे नहीं बढ़ते जाना।।३।।
हम बदल……

आर्य युवकों ने ये राग गाया, वैदिक राज्य
का डंका बजाया।
हम जियें या मरें छल बलों से लड़ें हमने ठाना ।।४।।
हम बदल……

व्यायाम-गान २

जीवन से प्यार यदि तुमको व्यायाम, व्यायाम करो, ऐ नौजवानों ।

बनना चाहो बलवान यदि व्यायाम करो व्यायाम ।

ऐ नौजवानों ।।

सबसे पहले जीवन अपना शुद्ध और सरल

बनाओ तुम ।

ब्रह्मचर्य का पालन करके बल और तेज

बढ़ाओ तुम ।।

सब अङ्गों की होती पुष्टि बने बुद्धि भी बलवान ।

ऐ नौजवानों ।।१।।

बलहीनों का इस दुनियां में नहीं कोई साथी

बनता है ।

शक्तिशाली संसार के ऊपर शासन अपना करता है ।।

चींटी से कोई नहीं डरता सिंहों से डरे जहान ।

ऐ नौजवानों ।।२।।

नित्य प्रति व्यायाम का सेवन श्रद्धा से जो

करता है ।

सब रोगों से हो मुक्ति सब दुःखों से तरता है ।।

मृत्यु भी डरती है उससे पाता है सुख महान ।

ऐ नौजवानों ।।३।।

इसीलिये सब बड़ प्रेम से इस औषध का पान करो ।

देश धर्म सेवा के हेतु सबके सब बलवान बनों ।।

आर्य युवक परिषद् करती है इसका प्रचार ।

ऐ नौजवानों ।।४।।

भक्तिगीत ३

सदा ओ३म् मुख से उचारे चला जा।
सकल कष्ट अपने निवारे चला जा।

मनुष्य जन्म मिलता है खुश किस्मती से।
उसे नेकियों से संवारे चला जा।

करेगा हरी तेरी आशा की खेती।
तू सीधा उसी के द्वारे चला जा।

अगर धर्म रक्षा में आये मुसीबत।
तू हँस हँस के प्रभु के सहारे चला जा।

भजन—४

वेला अमृत गया, आलसी सो रहा बन अभागा।
साथी सारे जगे तू न जागा

झोलियां भर रहे भाग्य वाले, कितने पतितों ने जीवन सम्भाले।
रंक राजा बने, भक्ति रस में सने, कष्ट भागा।
साथी सारे जगे……

कर्म उत्तम थे नरतन जो पाया, आलसी बन के हीरा गंवाया।
उल्टी हो गई मति, करके। भारी क्षति, रोवे लगा।
सारी सारे जगे तू न जागा।

धर्म मार्ग को देखा न भाला, वेला अमृत गया न सम्भाला।
सौदा घाटे का कर, हाथ माथे पै धर, रोने लगा।
साथी सारे जगे तू न जागा।

प्राणी कुछ न तूने विचारा, सिर से ऋषियों का
ऋण न उतारा।
हंस का रूप था, गन्दला पानी किया, बन के कागा।
साथी सारे जगे………

भजन—५

तू ही इष्ट मेरा तू ही देवता है,
तू ही मेरा बन्धु तू ही तो पिता है।
नहीं है कोई चाहना और दिल में,
तुझे चाहता हूँ यही चाहना है।
वृथा ढूंढता फिर रहा है जमाना,
तू दिल में है, दर्दे दिल की दवा है।
जहालत से हम तुम को देखें न देखें,
मगर तू हमें हर घड़ी देखता है।
बहुत कोशिशें की बहुत सिर खपाया,
समझ में न आया कि संसार क्या हैं।
जवानो ! जवानी में कुछ काम कर लो,
समझते हो जिसको जवानी हवा है।
पता पत्ता-पत्ता तेरा दे रहा है,
सरासर गलत है कि तू लापता है।
"मुसाफिर" जरा इस मुसाफिर से पूछो,
कहां से चला है किधर जा रहा हैं।

भजन—६

करो प्रभु से प्यार अमृत बरसेगा।
हो जाये बेड़ा पार अमृत बरसेगा।
दया धर्म भवसागर तर ले।
प्रेम प्रीति से भक्ति कर ले।
हो जाये बेड़ा......
सत्य ज्ञान की पहनो चुनरिया।
छोड़ कपट चलो प्रेम नगरिया।
हो जाये तेरा उद्धार अमृत बरसेगा।
करो प्रभु से प्यार......

परोपकार की बान जकड़ ले।
दस इन्द्रिय ओर मन को पकड़ ले।
कर दे देश सुधार अमृत बरसेगा।
करो प्रभु से प्यार……

तू है सच्चा पिता, सारे संसार का ओ३म् प्यारा।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा, तू है…
चाँद सूरज सितारे बनाए, पृथ्वी, आकाश, पर्वत, सजाए।
अन्त पाया नहीं तेरा, पाया नहीं पारावार।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा, तू है…
पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव जन्तु भी सर हैं झुकाते।
उसको ही सुख मिला, तेरी राह पर चला जो प्यारा।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा, तू है…
पाप पाखण्ड हमसे छुड़ाओ, वेद मार्ग पै हमको चलाओ।
लगे भक्ति में मन, करें संध्या हवन जग सारा।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा, तू है…
अपनी भक्ति में मेरे मन को लगाना।
कष्ट 'नन्द लाल' के सब मिटाना।
दुःखिया, कंगालों का और धनवालों का तू सहारा।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा, तू है…

भजन—८

तर्ज—फकीरा चल चला चल
ओ चल के वेदानुसार
करले जीवन को अपने प्राणी भव से पार.
हिम्मत ना हार
चल चला चल ओ मानुष चल चला चल

अकेला चल चला···

१—सारा जीवन वेद विरुद्ध हुआ,
तू कुछ भी ना कर पाया,
दुनियां के सुखों में फंसकर
सच्चा सुख बिसराया, ओ करदी काया बेकार···

२—सच्चा साथी परमेश्वर है, दूजा ना कोई सच्चा मीत
उसी की शरण में जा तू बन्दे, उसी को बनाले तू अपना मीत
ओ करले जीवन को पार···

३—ऋषि दयानन्द एक अकेला, उसका था प्रभु साथी,
फिर क्यों "जगदीश" तू घबराये,
तू भी बनाले उसको साथी,
हो जाए तेरा बेड़ापार·········

—ब्र० जगदीश आर्य

भजन ९

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है॥
उठ नींद से अखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीति करन की रीति नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है॥
जो कल करना है आज करले, जो आज करना है अब करले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है॥
नादान भुगत करनी अपनी, ओ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सीस धरी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है॥

आरती १०

ओम् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे॥ १॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ २॥

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम विन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ।। ३ ।।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी।
परम ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ४ ।।

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता।
दीन दयालु कृपालु, कृपा करो भर्त्ता ।। ५ ।।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती ।। ६ ।।

दीनवन्धु दुःख - हर्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणा - हस्त वढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे ।। ७ ।।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा - भक्ति वढ़ाओ, सन्तन की मेवा ।। ८ ।

भजन ११

अजव हैरान हूँ भगवन् ! तुम्हें क्योंकर रिझाऊ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं ।।अजव०।।
करें किस तरह आवाहन कि तुम मौजूद हो हर जा।
निरादर है बुलाने को अगर घण्टी वजाऊँ मैं ।।अजव०।।
तुम्ही हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान् पर भगवान् को क्योंकर चढ़ाऊँ मैं ।।अजव०।।
लगाना भोग कुछ तुमको, यह एक अपमान करना है।
खिलाता है जो सव जग को, उसे क्योंकर खिलाऊँ मैं ।।अजव०।।
तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं सूरज, चाँद और तारे।
महा अन्धेर है कैसे तुम्हें दीपक दिखाऊँ मैं ।।अजव०।।
भुजायें हैं न गर्दन है, न सीना है न पेशानी।
तुम हो निर्लेप नारायण ! कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं ।।अजव०।।

भजन—१२

सुखी वसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन्! पूरी होय।।
विद्या, बुद्धि, तेज, बल सब के भीतर होय।
दूध-पूत धन-धान्य से वंचित रहे न कोय।।
आपकी भक्ति-प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।
हमें बचाओ पाप से, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनायकर, हमको करो निहाल।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
धैर्य हृदय में वीरता, सबको दो करतार।।
नारायण तुम आप हो, पाप-विमोचनहार।
क्षमा करो अपराध सब, करदो भव से पार।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिये कृपानिधान।
साधु-संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान।।

कव्वाली १३

जिस नर में आत्म-शक्ति है, वह शीश झुकाना क्या जाने।
जिस दिल में ईश्वर भक्ति है, वह पाप कमाना क्या जाने।।
मन-मन्दिर में भगवान् बसा, जो उसकी पूजा करता है।
मन्दिर के देवता पर जाकर, वह फूल चढ़ाना क्या जाने।।
जिस.........

माँ-बाप की सेवा करता जो, उनके दुःखों को हरता जो।
वह मथुरा काशी हरिद्वार वृन्दावन जाना क्या जाने।।
जिस.........

जो प्राणी शाम-सवेरे उठ ईश्वर का चिन्तन करता है।

दो काल करे संध्या व हवन, नित सत्संग में जो जाता है।
भगवान् का है विश्वास जिसे, दुःख में घवराना क्या जाने ॥
जिस.........

जो खेला है तलवारों से और अग्नि के अंगारों से,
रण-भूमि में जाकर पीछे, वह कदम हटाना क्या जाने ॥
जिस.........

जो कर्मवीर और धर्मवीर वेदों का पढ़ने वाला हो।
वह निर्बल दुखिया वच्चों पर तलवार चलाना क्या जाने ॥
जिस.........

जिसका ऊँचा आचार नहीं और धर्म से जिसको प्यार नहीं।
जिसका सच्चा व्यवहार नहीं, 'नंदलाल' का गाना क्या जाने ॥
जिस.........

गीत—१४

प्यारा ओम, प्यारा ओम, प्यारा ओम, प्यारा ओम।
सव ऋषि मुनि करते हैं तेरा जपन,
और वेद भी गाते हैं तेरे भजन,
तेरे भक्त भी करते हैं यही यतन,
हम पापी पड़े हैं तेरी शरण ॥ प्यारा ओम......
एक बार जो अमृत पीता है,
वो उसके सहारे पे जीता है,
जाता व्यर्थ समय तेरा बीता है,
देती शिक्षा हमें ये गीता है ॥ प्यारा ओम......
भक्त प्रहलाद को जब सताते रहे,
और आग में उसको बिठाते रहे,
प्याले विष के भी उसको पिलाते रहे,
वो तो केवल यही शब्द गाते रहे ॥ प्यारा ओम......

आओ प्रेम से उसको रिझायें सभी,
घूनी दाता के दर पे रमायें सभी,
आँसू प्रेम के आज बहाएँ सभी,
नन्द प्रेम के गीत में गायें सभी, प्यारा ओम……

भजन १५

'अमीचन्द जी'

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गंधर्व, मुनिजन धन्यवाद॥
मन्दिरों में, कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ—सौ बार मुनिवर धन्यवाद॥
करते हैं जंगल में मंगल पक्षीगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द, मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद॥
कूप में, तालाब में, सागर की गहरी धार में।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद॥
शादियों में, कीर्तनों में यज्ञ में, उत्सव में आदि।
मीठे स्वर में चाहिए करें नारि-नर सब धन्यवाद॥
गानकर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर-स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर-धर धन्यवाद॥

भजन १६

संसार में जिसका प्रभु से प्यार न होगा।
उसका तो भवसागर से बेड़ा पार न होगा॥
१—सुबह और शाम जो उसके खुले दर पर न आयेगा।
न मन मे प्रेम लायेगा न मस्तक ही झुकायेगा।
ईश्वर के वरदानों का वह हकदार न होगा।
२—प्रभु हर एक प्राणी को सदा देता ही देता है।

वह अपने दान के वदले कभी कुछ न लेता है।
दुनियाँ भर में ऐसा कहीं दरवार न होगा।
३—वो दुनिया से निराला है 'पथिक' तू जान ले इतना।
वह शक्ति सवसे ऊँची है अगर तू मान ले इतना।
तुझको उसकी भक्ति से फिर इनकार न होगा।

भजन १७

ओ३म् नाम के हीरे मोती मैं विखराऊँ गली-गली।
ले लो रे कोई ओ३म् का प्यारा आवाज लगाऊँ गली-गली।
१—माया के दीवानो सुन लो इक दिन ऐसा आयेगा,
धन दौलत और रूप खजाना धरा यहीं रह जाएगा।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली ।। ले लो……
२—मित्र प्यारे सगे-संबंधी, इक दिन तुझे भुलायेंगे।
कल तक जो कहते थे अपना, अग्नि में तुझे जलायेंगे।
दो दिन का ये चमन खिला है, फिर मुरझाये कली-कली ।।
ले लो……
३—क्यों करता है मेरी मेरी, तज दे इस अभिमान को,
छोड़ जगत् के झूठे धन्धे, जप ले प्रभु के नाम को।
गया समय फिर हाथ न आये, फिर पछताये घड़ी घड़ी ।।
४—जिसको अपना कह कह के, मूर्ख तू इतराता है,
छोड़ दे बन्दे साथ विपद में, साथ नहीं कोई जाता है।
दो दिन का ये रैन बसेरा, आखिर होगी चलो चली ।।
ले लो……

भजन—१८

१—आओ मिल के विचार करें।
पहले हम आप सुधरें फिर सबका सुधार करें।
२—ऐसा जीवन हमारा हो, चाँद सितारों से,
बढ़कर उजियारा हो ।।

३—वचें पाप की कमाई से, सदा शुभ कर्म करें,
रहें दूर बुराई से ॥
४—सब यहीं रह जाएगा, दिया होगा जो हाथ से,
वही साथ निभायेगा ॥
५—सभी हैं मेहमान यहाँ, करके भलाई जो गये,
उनका है निशान यहाँ ॥
६—हम भी वह काम करें, जब तक दुनियाँ रहे,
सूरज की तरह चमके ॥
७—भगवान को याद करें, जीवन कीमती है,
न इसे बर्बाद करें ॥
८—शुभ कामना सेवक की, प्रभु हमें दो सुमति,
यही भावना सेवक की ॥

भजन १९

तर्ज—इस भरी दुनियां में कोई भी हमारा ना हुआ…

उसके चरणों में अभी ध्यान तुम्हारा ही नही।
तुझको धन प्यारा है भगवान तो प्यारा ही नही॥

१—क्या सुनेगा भला परमात्मा आवाज तेरी।
सच्चे दिल से तो कभी तुमने पुकारा ही नही॥१॥
२—वो क्या उस पार किनारे पे भला पहुंचेगा।
जिसने मझदार में किस्ती को उतारा ही नहीं॥२॥
३—आज तो ये हवा उल्टी ही जमाने में चली।
भले इन्सान का दुनिया में गुजारा ही नहीं॥३॥
४—क्या हुआ कितने ही मैदान अगर मार लिये।
अपने इस मन को अब तक तूने मारा ही नही॥४॥
उसके चरणों में अभी ध्यान तुम्हारा ही नही।

भजन २०

(शहीदों का खूँ)

शहीदों के खूँ रंग लाते रहेंगे।
ये खूने जिगर को बहाते रहेंगे॥
चाहे कत्ल कर दो न कम होगी शुद्धि।
धरम पर यूँ ही सर कटाते रहेंगे॥
न डर कर कभी हम तो पीछे रहेंगे।
कदम आगे हरदम बढ़ाते रहेंगे॥
अलग हो गये पहले हमसे जो भाई।
उन्हें अब गले से लगाते रहेंगे॥
धरम पर मुसीबत जो आये वह सहना।
यह बच्चों को अपने पढ़ाते रहेंगे।
रहे कौम 'आजाद' अपनी धर्म पर।
सदा हम यही गीत गाते रहेंगे॥

भजन २१

(महर्षि को धन्यवाद)

धन्य है तुझको ऐ ऋषि तूने हमें जगा दिया।
सो सो के लुट रहे थे हम तूने हमें जगा दिया॥
अन्धों को आंखें मिल गई मुर्दों में जान आ गई।
जादू-सा क्या चला दिया अमृत-सा क्या पिला दिया॥
धन्य है तुझको···
वाणी में क्या तासीर थी तेरे बचन में ऐ ऋषि।
कितने शहीद हो गए कितनों ने सर कटा दिया॥
धन्य है तुझको···
अपने लहू से लेखराम तेरी कहानी लिख गया।

तूने ही लाला लाजपत शेरे बब्बर बना दिया ।।
धन्य है तुझको…
श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पे खाई गोलियाँ ।
हँस हँस के हंसराज ने तनमन व धन लुटा दिया ।।
धन्य है तुझको…
तेरे दिवाने जिस घड़ी दक्षिण दिशा को चल दिये ।
हैरत में लोग रह गए, दुनियाँ का दिल हिला दिया ।।
धन्य है तुझको…

भजन २२
(दयानन्द के वीर)

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे ।
दयानन्द का काम पूरा करेंगे ।।
उठाये ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे ।
उसी के लिए जियेंगे मरेंगे ।।
गुँजाएंगे वेदों को हम गीत गाकर ।
दिखायेंगे दुनियां पुरानी बनाकर ।।
उठायेंगे ऋषियों की आवाज को हम ।
बनायेंगे फिर स्वर्ग संसार को हम ।।
मिटायेंगे सब सम्प्रदायों के मत को ।
बनायेंगे फिर आर्य सारे जगत् को ।।
वही प्रेम गंगा यहां पर बहेगी ।
जो संसार की ताप-माला हरेगी ।।
कहेगा जगत् फिर इक स्वर में सारा ।
वही वृद्ध भारत गुरु है हमारा ।।

भजन २३

(आर्य वीर के उद्गार)

हम दयानन्द के सैनिक हैं, दुनिया में धूम मचा देंगे ।
गर आये पर्वत रास्ते में, ठोकर से उसे उडा देंगे ।।१।।
सव आफत और मुसीवत को, हस हंसकर सर पर झलेंगे ।
हम लाज धर्म की रखेंगे, गो अपना आप मिटा देंगें ।।२।।
हम पुत्र हैं भारत माता के, माता पर संकट आये जब ।
हम इसके संकट काटेंगे, गो अपना शीश कटा देंगे ।।३।।
हम भारतोंयों के सेवक हैं, यह सब अपने माँ-जाये है ।
जहां उनका पसीना टपकेगा, हम अपना खून वहा देंगे ।।४।।
दुनिया में जहालत फैली है पापों ने डेरा डाला है ।
हम नूरे वेद मुकद्दस से, यह सब अन्धकार मिटा देंगे ।।५।।
कह दो गुण्डों-मुशटण्डों से हरकतों से अपनी वाज आए ।
मैदान में गर डट जाएंगे, तो नाकों चने चवा देंगे ।।६।।
हम कृष्ण युधिष्ठिर अर्जुन की सन्तान हैं ऐ नादां दुश्मन ।
हम सफल मनोरथ तव होंगे, गर धर्म पै जान गँवा देंगे ।।७।।
उस परमपिता ने हमको भी वहदत की निशानी सौंपी है ।
हम डंका वेद-मुकद्दस का सारी दुनिया में वजा देंगे ।।८।।

भजन २४

(ओ३म् का झंडा)

यह ओ३म् का झण्डा आता है, सोने वालो ! जाग चलो ।
लेकर उगते रवि की लाली, ले नित बसन्ती हरियाली ।
यह ले ले लहरें आता है, धरती के जागे भाग चलो ।।
यह...

जव गोली गोले बरसेंगे, यह सिर कट कट कर सरसेंगे ।
हम मौत के भीषण आंगन में हँस-हँस खेलेंगे भाग चलो ।।
यह...

पर्वत से कह दो नम जाए, सागर से कह दो थम जाये।
यह एक वनाने दुनिया को, उमड़ा है अनुराग चलो ॥
यह...
अव प्रेम सच्चाई विद्या का, यह झण्डा लहराया वांका।
हिंसा पाखंड अविद्या से कह दो, कि अव तुम भाग चलो ॥
यह...

गीत २५

भारत का कर गया बेड़ा पार वह मस्ताना योगी।
सोतों को कर गया फिर बेदार वह मस्ताना योगी।
ईटें और पत्थर खाये, गोली से ना घबराए,
घातक से अपने कर गया प्यार वह मस्ताना योगी।
भूले थे वेद की वाणी, करते थे सब मनमानी,
वेदों का कर गया फिर प्रचार वह मस्ताना योगी।
विधवा-उद्धार करके, शुद्धी-प्रचार करके,
दलितों पे कर गया पर-उपकार वह मस्ताना योगी।
पापी थे पाप करते, ईश्वर से न थे डरते,
जड़ से मिटा गया अत्याचार वह मस्ताना योगी।
कोई शुभ काम ना था, प्रीती का नाम न था,
हर जा बढ़ा गया प्रेम की धार वह मस्ताना योगी।
वेदों की रक्षा करके, आर्यों में जीवन भर के,
देश का कर गया बेड़ा पार वह मस्ताना योगी।

धर्मवीर की भावना २६

सिर जावे तो जावे मेरा वैदिक धर्म न जावे।
धर्म की खातिर ऋषि दयानन्द जहर दूध में पीवे।
लेखराम जो धर्म को खातिर, छुरा पेट में खावे।

गुरुदत्त जी धर्म की खातिर, जिन्दगी घोल घुमावें।
धन-धन बालक वाल हकीकत, धर्म पै प्राण चढ़ावें।
आज्ञा ऋषि की पालन करना, पग पीछे न आवे।
धर्म पे तन मन जो भी वारे, धर्मवीर कहलावे।

गीत २७

जुग-जुग राज सवाया वेदां वाले दा
भगवा भेस-सी हत्थ कमंडल, महलाँ नूँ छड टुरया जंगल
देवता बन के आया। वेदाँ......
ऋषियाँ दा सिरताज दयानन्द, योगीश्वर महाराज दयानन्द
देवलोक तों आया। वेदाँ......
दुखियाँ दे दुख तारनवाला, डुवदा देस उभारनवाला
भारत माँ दा जाया। वेदाँ......
प्यारे ऋषि दे वचन पियारे, डुवदे भारतवासी तारे
सुत्ता देस जगाया। वेदाँ......

गीत—(शहीद श्रद्धानन्द का बसन्ती चोला) २८

मेरा रंग दे बसन्ती चोला, मेरा रंग दे बसन्ती चोला।
यही रंग रंगाने श्रद्धानन्द श्रद्धा से यहाँ आते है।
हिन्दु जाति की खातिर प्राणों को भेंट चढ़ाते हैं।
कातिल ने पी पीकर पानी फिर पिस्तौल को खोला॥ मेरा...
देहली चाँदनी चौक के अन्दर घंटा घर था खड़ा हुआ।
घंटाघर के नीचे लोगों शेर बबर था अड़ा हुआ।
खोलो गन मशीनें खोलो मैंने सीना खोला॥ मेरा...
जामा मस्जिद के मंबर पर स्वामी जी जब जाते हैं।
दयानन्द की जय के नारों से आकाश गुन्जाते हैं।
मस्जिद में छा गया सन्नाटा वेद मंत्र जब बोला॥ मेरा...
जलियाँ वाले बाग के अन्दर कौन मोर्चे पर आया।

काँग्रेस का अध्यक्ष बना और हिन्दी को ही अपनाया ।
अली बिरादर और गाँधी के आगे बीन डोला ।। मेरा…

गंगा और यमुना की धरती इनको मूल न भाती है ।
अरब की रेत और ऊंट की बोली इनको खूब सुहाती है ।
इसी वास्ते गाते फिरते मदीने बुला ले मौला ।। मेरा…
तुम्हें सौगन्ध उस लहू की आर्यों धर्म निभाओ तुम ।
गिरा है शुद्धि का ये झण्डा इसको फिर उठाओ तुम ।
आर्यसमाज 'आशानन्द' कहता है ये शहीदी टोला ।। मेरा…

गीत नं २६

तर्ज—जिस गली में तेरा घर ना हो बालमा

जिस डगर को दयानन्द बता के गये ।
वो डगर आर्यों अब भुलाना नहीं,
जो चरण बढ़ गये सत्य पथ के लिए,
अब चरण हमको पीछे हटाना नहीं ।
वह चला गृहस्थ के बन्धन तोड़ के,
प्यार जननी पिता बन्धु से तोड़ के,
कभी देखा नहीं जिसने मुख मोड़ के,
सारा जीवन दिया देश हित के लिये,
आर्यों ! ऋण क्या उसका चुकाना नहीं ।……१
जिन्दगी में कई बार विष भी पिया,
देश हित को मरा देश हित को जिया,
सर मुसीबत सही अपना तन मन दिया,
पग हटाया नहीं सत्य मार्ग से,
उनकी कहानी क्या "राघव" सुनाना नहीं……२
आँधी तूफानों से घबराये नहीं,
गोली सीने लगी डगमगाये नहीं,

एक छुरा खा गया पग हटाया नहीं,

जिस रक्त के लिए रक्त अपना दिया,
उस चमन को है पतझड़ बनाना नहीं।

भजन ३०

ऐ ऋषि दयानन्द तेरी युग-युग तक अमर कहानी।
हम भूल नहीं सकते हैं की तूने जो कुर्बानी॥

१. तू धर्म का था दिवाना, सच्चाई का परवाना।
तू झुका सत्य के आगे, तेरे आगे झुका जमाना॥
सुन तेरी अद्भुत वाणी, दुनिया हो गई दिवानी॥।

२. लाखों भूलों भटकों को तूने मार्ग दिखलाया।
जो श्रद्धा करके आया उसे श्रद्धानन्द बनाया॥
सच तो ये है मुर्दों को बख्शी तूने जिन्दगानी॥।

३. बन सच्चा सेवक तूने की देश धर्म की सेवा।
लाखों तेरे अनुयायो सबको बाँटा मेवा॥
मिलके जो आज हम बैठे सब तेरी मेहरबानी॥।

भजन ३१

वेदों का डंका

वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।
हर जगह ओ३म् का झन्डा फिर फहरा दिया ऋषि दयानन्द ने।
अज्ञान अविद्या की हरसू घनघोर घटायें छाई थी।
कर नष्ट उन्हें जग में प्रकाश फैला दिया ऋषि दयानन्द ने। वेदों...
सर पर तूफान बला का था, नजरों से दूर किनारा था।
बनकर मल्लाह किनारे पर पहुंचा दिया ऋषि दयानन्द ने।
घुस गये लुटेरे घर में थे सब माल लूटकर ले जाते थे।
सदाशुक्र हाथ सोतों का पकड़ बिठला दिया ऋषि दयानन्द ने।

मक्कारी दगा फरेबी से जो माल मुफ्त का खाते थे।

सब पोल खोलकर दिल उनका दहला दिया ऋषि दयानन्द ने।
उड़ गए होश मतवालों के मैदान छोड़कर रफू हुए।
हथियार तर्क जब निकालकर चमका दिया ऋषि दयानन्द ने।
कब्रों पर सिर को पटकते थे कोई दैरो हरम में भटकते थे।
दे ज्ञान मुक्ति का मार्ग उन्हें दिखला दिया ऋषि दयानन्द ने।
करते थे हमेशा चीख-२ तौहीन वेद अकदस की जो।
सर उनका वेदों के आगे झुकवा दिया ऋषि दयानन्द ने। वेदों···
सब भूल चुके थे धर्म कर्म, गौरव गुमान ऋषि मुनियों का।
फिर सन्ध्या हवन यज्ञ करना सिखला दिया ऋषि दयानन्द ने।
विद्यालय खुलवाये कायम हर जगह समाज किये।
आदर्श पुरातन शिक्षा का बतला दिया ऋषि दयानन्द ने। वेदों···
बलिदान किया वलिवेदी पर जीवन प्रकाश हंसते-हंसते।
सच्चे रहवर बनकर सबको चेता दिया ऋषि दयानन्द ने। वेदों···
हर जगह ओ३म का झण्डा·········

भजन ३२

वैदिक नाद बजाओ ऐ ? आर्य वीर गण जाओ।
समय नहीं सोने का प्यारो, करवट बदलो आंख उघारो।
बिगड़ी बात बनाओ। ऐ आर्य···
धर्म प्रचारक दयानन्द के देश सुधारक दयानन्द के।
बार-बार गुण गाओ। ऐ आर्य वीर······
प्रबल शत्रुओं ने है ठाना, छल प्रपंच से तुम्हें मिटाना,
सावधान हो जाओ। ऐ······
देश काल की ओर निहारो करो संगठन वैर बिसारो।
भ्रातृ भाव दर्शाओ। ऐ······
भूत मथकर छूतछात का, झूठा झगड़ा जातपात का।
डर से मार भगाओ। ऐ······

विधवा जारजार रोती है, कितनी हाय धर्म खाती है।

धीरज उन्हें बन्धाओ। ऐ......
इधर उधर जो भटके उनको कब्रो पर सिर पटके उनको।
सदमार्ग पर लाओ। ऐ......
बनो भीम अर्जुन से बल में, धूम मचा दो युद्ध स्थल में।
विजयी शूर कहाओ। ऐ......
प्राँत-प्राँत और नगर-नगर में, डगर में अरु घर-२ में।
ऋषि सन्देश पढ़ाओ हे आर्य वीर......
प्रकाश निज कर्तव्य कर्म पर, सत्य सनातन वेद धर्म पर।
निर्भय शीश कटाओ। ऐ......
वैदिक नाद बजाओ ऐ......

—महेन्द्रार्य

भजन नं ३३ (तर्ज फिरकी वाली)

टेक योगी आया था वेदों वाला किया था उजियाला
दुनियां में सच्चे ज्ञान का, वो तो देवता था सारे ही
जहान का

कली आदि में थी दया और अन्त में आनन्द था
नाम भी स्वयं कितना प्यारा था।
स्वयं जहर पिया हमको अमृत पिला गया।
तोड कभी ना हिम्मत हारा था ईश्वर भक्ति की शक्ति ही
इतनी शक्ति रखती जगती सारी ने, ऋषि
पहिचाना, और वेद जान माना जो कारण है कल्याण
का ॥ १ ॥

कली आड में धर्म की यहां दीन दुखियों पर जुलम गुजारे
जाते थे।
अनेकों ही द्रोपदी सरीखों सतियों के चीर उतारे जाते थे।

आठ वर्ष की विधवा रोती, रो रो आंसू खोती, सोती
तोड़ जाती को आन जगाया और पूज्य बताया सत्कार किया

प्राण का ॥ २ ॥
कली प्रेम की वहा के गंगा मिला गया वो अपने जिगर के
टुकड़ों को
मुद्दत से गुलामी थी मिटा गया वो भारत मां के
दुखड़ों को
देश दिवाना बन मर्दाना, जल गया वन परवाना लाना
तोड चाहता था वो आजादी, मर्यादा वादी ना भय था अपनी
जान का ॥ ३ ॥
कली करने को उपकार ऋषि सारे ही जहान का, डटकर

भजन ३४

हमको सब दुनियां जाने, हैं वीर दयानन्द के,
एक नहीं, दो-चार नहीं, लाखों हैं वीर खजाने में।
भीड़ लगी मिटने वालों की आगे वढ़-वढ़ जाने में
भर देंगे जेलखाने, हैं वीर दयानन्द के
गूँज उठेगी ध्वनि 'ओ३म्' की चक्की की गुञ्जारों में
झूम-झूम कर गायेंगे बेड़ी की झनकारों में
आजादी के तराने, हैं वीर दयानन्द के
वरछी-भाले खूब चलाओ, गरदन पर तलवार धरो
भर-भर गोली बन्दूकों के चाहे कितने वार करो
आयेंगे सीना ताने, हैं वीर दयानन्द के

खब डटेंगे, नही हटेंगे एक इन्च अपने पग से

खून के दरिया बह निकलें चाहे इस तन की रग-रग से
सीखे हैं शीश कटाने, हैं वीर दयानन्द के
वलिवेदी पर भीड़ लगी, मतवाले वीर जवानों की
खून वहा होली खेलेंगे ये सब अपने प्राणों की
आ देख ले जमाने, हैं वीर दयानन्द के
आठ-आठ घण्टे क्या मुश्किल हमको पत्थर तोड़ना
ये तो जय मालायें हैं चुन-चुनकर इनको जोड़ना
जो विखर रहे हैं दाने, हैं वीर दयानन्द के

भजन—३५

कविरत्न 'प्रकाश'

दयानन्द देव वेदों का उजाला ले के आए थे।
करों में ओम् की पावन पताका ले के आए थे ।।
न थे धन-धाम, मठ-मन्दिर, न संग चेली न चेला था।
हृदय में वह अटल विश्वास प्रभु का ले के आये थे ।।
अविद्या-सिन्धु से अगणित जनों को पार करने को।
परम सुखदायिनी सद्ज्ञान नौका ले के आए थे ।।
गऊ,विधवा,दलित,दुखिया,अनाथों,दीन जन के हित।
नयन में अश्रुकण, मानस में करुणा ले के आए थे।
कोई माने न माने, सच तो यह ऋषिराज ही पहले।
स्वराज्य स्थापना का मन्त्र सच्चा ले के आए थे ।।
पिलाया जहर का प्याला उन्हीं नादान लोगों ने।
कि वह जिनके लिए अमृत का प्याला ले के आए थे ।।
'प्रकाश' आदर्श शिक्षा का पुनः विस्तार करने को।
वही प्राचीन गुरुकुल का सन्देशा ले के आए थे ।।

भजन—३६

तर्ज—कसमें वादे प्यार वफा सब बातें हैं, बातों का क्या।

दुनियां वालो देव दयानन्द दीप जलाने आया था।
भूल चुके थे राहें अपनी वो दिखलाने आया था।।

१—घोर अंधेरा जग में छाया नजर नहीं कुछ आता था
मानव मानव की ठोकर से जब ठुकराया जाता था
आर्य जाति सोई पड़ी थी घर-घर जा के जगाता था

२—बट गया सारा टुकड़े-टुकड़े भारत देश जागीरों में
शासन करते लोग विदेशी जोश नहीं था वीरों में
भारत मां को मुक्त किया जो जकड़ी थी जंजीरों में

३—जब तक जग में चार दिशायें कुदरत के ये नजारे हैं
सागर, नदियां, धरती, अम्बर, जंगल, पर्वत सारे हैं
'पथिक' रहेगा नाम ऋषि का जब तक चांद सितारे हैं
दुनियां वालों.........
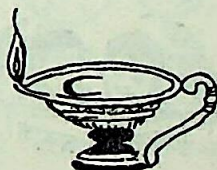
सत्यार्थ प्रकाश का प्रसिद्ध गीत—३७

स्वामी जी के अमर ग्रंथ ने किया बड़ा उपकार है,
सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर बदल गया संसार है।
अमरीका के पादरियों ने मीटिंग एक बुलाई है,
भारत सारा करेंगे ईसाई बाईबल से कसम उठाई है।

फादर्स स्टीक्स को जल्दी भेजो पोप ने ड्यूटी लगाई है,

हमने उसके पहुंचते ही सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाई है।
वदलने आया बदल गया मैं स्टोक्स ने तार खड़काई है,
शुद्ध हुआ सत्यानन्द वनकर कर रहा वेद प्रचार है।
कल की बात है गांधी के बेटे अब्दुल्ला वन जाते हैं,
मुसलमान सारे भारत के घी के चिराग जलाते हैं।
मां कस्तूरबा के आंसू थमने ही न पाते है,
आर्य युवक यथा योग्य की नीति को अपनाते हैं।
हीरे को शुद्ध करके माता के पास पहुंचाते हैं,
वैदिक धर्म की सारे जग में हो रही जय-जयकार है।
गृहस्थ आश्रम नरक वना सत्यार्थ स्वर्ग वनाती है,
वच्चे तुम्हारे फेल जो होते औषधि ये वतलाती है।
सौ वर्ष तक सुख से जीना ये हमको सिखलाती है,
जीते मात-पिता की पूजा का है फल समझाती है।
देश धर्म की सेवा का भी हमको पाठ पढ़ाती है,
इस पर चलने से मानव मानव में वढ़ता प्यार है।

श्री राम प्रसाद बिस्मिल का फांसी झूलने से पूर्व

गीत—३८

सात वजे जिस समय सवेरे, जब मैं फांसी जाऊंगा।
फांसी चढ़ने से पहले मैं संध्या हवन रचाऊंगा॥
आप होंगे सैकड़ों शस्त्रवन्द और मेरी जान अकेली है।
तुमने जिसको मृत्यु समझा वह तो मेरी सहेली है।

जेल काटी भूखा मरा, सकल तबाही झेली है।
अन्तिम हथियार था फांसी का वह भी बला ले ली है।
फांसी का डर नहीं मुझे ले जन्म दोबारा आऊंगा ॥ फांसी
ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर हवन मंत्रों की बोली हैं।
घृत सामग्री की आहुति इक-इक पिस्तौल की गोली हैं।
आजादी के जंग में डटकर लड़े जवानों की टोली हैं।
जो गोली से खून वहेगा वह होली में रोली है।
इस होली को आप देखना में तो चला ही जाऊंगा ॥फांसी···
कुर्बानी खाली न जाती यह भी तुमको याद रहे।
भारत का बच्चा-बच्चा बन बिस्मिल रामप्रसाद रहे।
जब तक आप रहें भारत में लड़ने का सिंहनाद रहे।
भारत के कोने २ में क्रान्ति की आग लगाऊंगा ॥फांसी···

क्रांन्ति वीरों का गीत—३६

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।
रहरवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में
लज्जते सेहरा न वर्दी दूरिये मंजिल में है।
यूं खड़ा मकतल में कातिल कह रहा है बार-बार
क्या तमन्ना-ए-शहादत भी किसी के दिल में है।
वक्त आने पर वता देंगे तुझे ऐ आसमां
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है।
ऐ शहीद-ए मुल्को मिल्लत तेरे जज्बों पर निसार
आज तेरी कुर्बानी की चर्चा गैर की महफिल में हैं।

खींचकर लाई है सवको कत्ल होने की उम्मीद
आशिकों का आज जमघट कूचा-ए-कातिल में हैं ।
एक जानिव है मसीहा एक जानिव है कजा
कशमकश में पड़ गया हूं जान किस मुश्किल में है
जख्म खाकर भी हमें है जख्म खाने की हविस
हौसला कितना तड़पने का तेरे विस्मिल में है ।
अव न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिट जानेकी हसरत अव दिले विस्मिल में है ।

—रामप्रसाद बिस्मिल

गीत--४०

कर जाओ काम भाइयो भारत की शान रहे ।
दुनियां में तुम रहो या न रहो यही निशां रहे ।।
तुफान वीर रात है रह रह कर जोश कर
उठ बैठो जिससे किश्ती बचे बांगवाँ रहे
तुम नस्ल के हफीज बनो, कुछ करके दिखाओ
ताकि नाम लेवा कोई मेहरवां रहे ।
कैसा जमाना आया तख्ता पलट गया
न वह गुल है न वह बाग न वह बांगवा रहे ।
अव गोर करले सोचने का वक्त है कहां
खून भरदो अपना जिसमें यह नीवजां रहे

—श्रीमती शास्त्री देवी (बिस्मिल)

गीत—५१

नया-नया है खून रगों में
दिल में नई जवानी है

बलिदानों की इस धरती के, हम रक्षक बलिदानी हैं।
नया नया है खून रगों में, दिल में नई जवानी है॥

शिवा प्रताप की सन्तानें, संकट हमने झेले हैं
अगर मौत भी आई सामने, डटकर उससे खेले हैं
रण में गर ललकार करें तो धरती भी कंप जाती है
पांव ठोककर चलें तो भू की छाती भी फट जाती है

हमने है वह यौवन पाया तूफानों से जो टकराता
हमने है वह पौरुष पाया गिरि पर चढ़ जो इठलाता
पृष्ठों पर इतिहास के देखो लिखी यही कहानी है
नया नया है खुन रगों में दिल में नई जवानी है

डरते नहीं हम कभी मौत से प्रणय प्रलय से करते हैं
रणचण्डी का खाली खप्पर लहू से अपने भरते हैं
हममें है वह शक्ति संचित मौत भी हमसे डरती है
उठकर गर हुंकार भरें खुद मौत ही भागी फिरती है

किसकी मां ने दूध पिलाया जो हम से टकरायेगा
हमसे जो टकरायेगा वह उल्टी मुंह की खायेगा
साहस के हम पुतलों ने पग पग पर दी कुर्बानी है
नया नया है खून रगों में दिल में नई जवानी है

उमड़-घुमड़ कर देखें ! साथी ! कैसी बेला आई है
आज वतन की सरहद पर संकट की बदरी छाई है
दूर हटा इस तम को साथी नया सबेरा लाना हैं

बलिदानों की स्वर्ण कथा को आज हमें दुहराना है

पाक चीन से कह दो,अब हम गीत प्रलय के गायेंगे।
बलिदान भरी गाथायें भू पर,लहू से लिखते जायेंगे।
खून खोलता बांहों में आंखों में आग-सा पानी है।
नया नया है खुन रगों में दिल में नई जवानी है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

गीत—४२

हम रूकना झुकना क्या जानें।
हम बढ़ते हैं सीना ताने॥
हम सैनिक वीर शहीदों के।
परहित में जिनके शीश कटे।
हम दयानन्द के दीवाने............

जो गया राज में नेहरू के।
हम वीर हैं वीर समेरु के।
हम वेद ज्योति के परवाने.........

हम हंस हंस के दुःख झेलेंगे।
सर्वस्व धर्म पर दे देगे ।
ये लेखराम से मस्ताने...............

हमकर्म वचन के सच्चे हैं ।
हम धुन अपनी के पक्के हैं।

सब दुनियां ही हम को जाने..........
दुःख आता है तो आने दो।
सुख जाता है तो जाने दो।
हम वीर हैं डरना क्या जानें.........

गीत—४३

जिस दिन के लिए, इस देश की माएं गोद में लाल खिलाएं।
समय वो आ गया है,
पालें, पोषें, कष्ट उठाएं, अपना दूध पिलाए,
समय वो आ गया हैं
ओ देशवासियों ! कहती है देखो मां, पुकार के।
ले ही न जाये कोई सर से, दुपट्टे को उतार के।
पुत्र भी अपना फर्ज निभाएं, माँ की लाज बचाएं
समय वो आ गया हैं। जिस दिन के.........
कृषको व्यापारियो ! अपने खजाने तुम भी खोल दो।
गेहूं, धान, सोना चांदी देश की मिट्टी के भार तोल दो,
सारे मिलके इक हो जायें शक्ति आज दिखायें। समय वो......
कवियो लिखारियो ! कलमों से फैंकों आज आग तुम।
सैनिकों में साहस भर के इनको बना दो काले नाग तुम
जो भी इनके सामने आये पानी मांग न पाये। समय वो......
ओ प्यारे सैनिकों ! उठा लो अपनी बन्दूकें चूम के,
वैरी का सफाया करके रण में दिखा दो आज तुम,
"पथिक" तुम्हारी सभी दिशाएं जय-जयकार मनाएं
समय वो आ गया है।।

भजन—४४

ऐ धर्म के दिवानों, उठो ये व्रत ठानों।
करेंगे करेंगे ज़माने को बेदार।।

१— अभी तक चल रही पन्थों की आंधियाँ।
प्रभु को विसार कर पुजती समाधियाँ।।
हैं अक्ल के ये अन्धें अनेकों यहाँ बन्दें।
इन्हें हैं समझाना बड़ा ही दुशवार।।

२— ऋषि सन्तान खाये दर-दर ठोकरें।
पग-पग पर परेशानी हर बात में।।
हुआ है काफी अरसा, है भूला राह घर का।
दिखाओ सही राह करो उपकार।।

३— ऋषि के समान वेद की बजाओ रे।
कवि 'हंस' सो रहे जा उनको जगाओ रे।।
निकालो दल दल से बचाओ छल बल से।
पाखण्डों का पनपे कहीं ना संसार।।

गीत—४५

जग को जगाने वाला आर्यसमाज है।
जग की पुकार है व युग की आवाज है।।

ईश को उपासना का रास्ता दिखा दिया।
जड़ को आराधना के पाप से बचा लिया।।
ढोंग ढांग जिसके भय से डोल रहा आज है,
आर्य समाज है जी, आर्य समाज है।
ठाकुरों की ठोकरों ने कर दिया बेहाल था।
दम्भियों का फैला हुआ ओर छोर जाल था।
जिसने दीन देश जाति की बचाई लाज है।

नारियां भी वेद का है पठन अब कर रहीं।
रूढ़ियाँ कुरीतियाँ हैं अपने आप मर रहीं।
वेद के प्रकाश का जो कर रहा सुकाज है............

कौन है जो आर्यों की भावना जगा गया।
कौन मौत से हमें जो जूझना सिखा गया।
श्रद्धानन्द, लेखराम, प्यारा हंसराज है.........

देश हित में वार दीं अनेक ही जवानियां।
रक्त से लिखी हैं इसने देश की कहानियां।
लाजपत लुटाके आज पा लिया स्वराज है।

कौन भोगवाद से जो विश्व को बचाएगा।
पाप पुण्य क्या है कौन आज यह सुझायेगा।
मानवीय रोग का तो एक ही इलाज है.........

श्री राजेन्द्र जिज्ञासु

भजन—४६

तर्ज—आओ बच्चों तुम्हें दिखायें झांकी हिन्दुस्तान की।

क्या कभी लाभ हुआ पूजा से पत्थर के भगवान की।
गर पूजा से लाभ हुआ तो सैनिक वीर जवान की—टेक-०
पत्थर के भगवान सदा शिल्पी से बनायें जाते है।
सैनिक वीरो द्वारा बिगड़े देश बनाये जाते हैं।
पत्थर के भगवान सदा मंदिर में बिठाये जाते हैं।
सैनिकवीर जवान समर करने को चढ़ाये जाते हैं।
देश की रक्षा करते है जब बाजी लगाकर जान की—टेक०
थे सैनिक श्री रामचन्द्र उनको भी पत्थर बना दिया।
श्री कृष्ण थे सैनिक उनको भी संगेमरमर बना दिया।
हनुमान बजरंग वीर पशुओं से बदत्तर बना दिया।
त्रिशूल धारी शूरवीर को भोला शंकर बना दिया।

भारत के किस काम में आयी यह मूरत पाषाण की।
पत्थर पूजा के कारण भगवान की सत पूजा छूटी।
लुटेरों ने मंदिर तोड़े अरबों की सम्पत्ति लूटी।
मूर्तियों से मक्खी तक की टांग तलक भी नहीं टूटी।
"ताराचन्द्र" अन्धे न समझे पत्थर की पूजा झूठी।
पत्थर पूजा कारण है दुर्गति का हिन्दुस्तान को—टेक॰

गीत—४७

(तर्ज—सारी-सारी रात तेरी याद सताये)

लहू से लिखाओ इतिहास में कहानियां।
देश पर वार दो ये उठती जवानियाँ।
खून से लिखाई भगतसिंह ने कहानी थी।
जुल्म से लड़नेवाली झाँसीवाली रानी थी।
ज़िन्दा कौम की हैं आखिर यही तो निशानियाँ।

बन्दा ने बन्द-बन्द अपना कटाया था।
शिवा-प्रताप ने ना सिर को झुकाया था।
नलवा के नाम से थीं डरती पठानियां।

कहे 'नन्दलाल' तिरछी आँख जो उठायेगा।
जीते-जी वो ज़िन्दा वापस जाने नहीं पायेगा।
कुचल के रख दो जो भी करे बदज़बानियां।

नौजवानों में जाकर गीत—४८

जवानी आ ही जाती है जवानों में जो जाता हूं।
मैं उनका संग करते ही बुढ़ापे को भुलाता हूं॥ टेक॥
शहीदों की शहादत के मिले चर्चे जो सुनने को।
मैं अपनी आत्मिक खोई हुई शक्ति जगाता हूं॥
निराशावाद का संसार मेरा नष्ट होता है।
मैं आशावाद की अपनी नई दुनियाँ बसाता हूं॥

तपे तप जो बने कुन्दन, बनाया मृत्यु को माता।
सफलता की मैं पा शिक्षा सफल जीवन बनाता हूँ ॥

खिले जीवन जो पाता हूं,तो भाँति फूल की खिलकर।
सभी कुछ 'देश' रक्षा में लुटा कर मुस्कराता हूं ॥

वीर-गान--४६

तर्ज—(आना सुन्दर श्याम हमारे कीर्तन में)

वीर हुए बलिदान आजादी तब आई।
सुनलो देकर कान आजादी कब आई।
नारे लगाने से नहीं आई।
गीत रचाने से नहीं आई।
है इतिहास प्रमाण, आजादी कब आई, वीर·········
गोदी उजड़ गई माता की,
मांग धुली नव विवाहिता की,
कर सिन्दूर का दान, आजादी तब आई। वीर·········
चरखे तकली से नहीं आई।
व्रत उपवासों ने न बुलाई।
करो सही अनुमान आजादी कब आई। वीर·········
बहिनों की राखी मुरझाई,
खुशियों की कलियां कुम्हलाई,
रुले शिशु नादान, आजादी तब आई। वीर·········

फांसी के तख्ते हंस चूमे काल कोठड़ी में गा झूमे ।

धरे हथेली प्राण, आजादी तब आई । वीर……
योवन की उमंग उलसाई, बलिवेदी पर भेंट चढ़ाई
करके हिया पाषाण, आजादी तब आई । वीर……
पहले देखीं रातें काली, दीप बुझाकर की दिवाली
तब हुआ स्वर्ण-विहान, आजादी तब आई । वीर……
कन्धे कफन लिए जब डोले देश दीवाने भाई भोले,
की मुश्किलें आसान, आजादी तब आई । वीर……
कैसे अद्‌भुत सौदागर थे, हँस २ किये शीश के सौदे
धुन ली मन में ठान आजादी…वीर……

जाग-जाग नौजवान--५०

है पुकारता स्वदेश जाग-जाग नौजवान ।
हो गया प्रभातकाल नींद त्याग नौजवान ॥
बन शिवा, प्रताप, राम, भीम, कृष्ण के समान ।
याद करके पूर्वजों की वीरता व स्वाभिमान ॥
शत्रुओं के रक्त से तू खेल फाग नौजवान ।
है पुकारता स्वदेश………

धांय-धांय कर समाज और देश जल रहा ।
देख पीड़ितों की आहों का धूआं निकल रहा ॥
लग रही है देश भर में एक आग नौजवान
है पुकारता………

है हमारे पूर्वजों की जो पुनीत यादगार ।
जिस पर प्राण दे गए हैं देशभक्त बेशुमार ॥
हो न जाए नष्ट देश का वो भाग नौजवान
है पुकारता………

उंठ स्वराष्ट्र में नवीन जाश की लहर चला ।
बन महान आर्यवीर ज्योति क्रान्ति की जगा ।।

रूढ़ियों, कुरीतियों से दूर भाग नौजवान ।

है पुकारता.........

है प्रभो ! हमें स्वपन में देश प्रेम भक्ति दो ।
ध्येय से डिगे नहीं अतुल प्रवल शक्ति दो ।।
वर जो माँगना है तो वर ये माँग नौजवान ।

है पुकारता.........

गीत—५१

(भारतीय सैनिकों की सिंह गर्जना-कव्वाली)

नौजवानों जंग में चलने का मौका आ गया ।
मातृभूमि के लिए मरने का मौका आ गया ।।
शान्ति के सन्देश को डाकू नहीं पहचानते ।
लातों के जो भूत होते बातों से न मानते ।
तोप बंब पिस्तौल लो बढ़ने का मौका आ गया ।। मातृ
नौ जवानों खून दो तुम जख्मियों के वास्ते ।
बहनों तुम भूषण उतारों शस्त्रों के वास्ते ।
आज सब कुछ दाँव पर धरने का मौका आ गया ।। मातृ
दूध माता का पिया है आ जा तू मैंदान में ।
देखना धब्बा न लग जाए वतन की शान में ।
सिर हथेली पर ही अब धरने का मौका आ गया ।। मातृ
जीता पाकिस्तान तो राजा तू ही कहलाएगा ।
मर गया तो देश सारा पूजा करने आएगा ।
गीता को इक वार फिर पढ़ने का मौका आ गया ।। मातृ
भगतसिंह और ऊधमसिंह का कारनामा याद है ।
मौत से जो खेलते थे उनकी तू औलाद है ।
आशानन्द हथियार ले लड़ने का मौका आ गया ।। मातृ

भजन—५२

(वीर रस के तराने)

टेक हमें उन देश भक्तों की कहानी याद आती हैं
वतन पर दे गए उठती जवानी याद आती है

कली धर्म अपना नहीं छोड़ा हकीकत बीर बालक ने ।
धर्म पर जान देने की निशानी याद आती है ॥१॥

कली साथ चौदह हजारों को जली लेकर के क्षत्राणि
पदमनी की चिता सुन्दर सजानी याद आती है ॥२॥

कली कमर से वांधकर बेटा लड़ी गोरों से मर्दानी
वीर माता तो झांसी की रानी याद आती है ॥३॥

कली असम्वली हाल में जाकर के वम्ब फैंका भगतसिंह ने ।
कहे निर्भय मचलती जिन्दगानी याद आती है ।

कली हवन फांसी के तख्ते पर किया जिस बीर ने निर्भय
वीर विस्मिल की जोशीली वो वाणी याद आती है ।

कली सिंगापुर की धरती पर लड़ा था बोस बंगाली
फौज आजाद हिन्द सेना उसकी बनानी याद आती है ।

कली मौत का खौफ ना खाया दयानन्द देव ब्रह्मचारी
जहर पी पी के ये दुनिया जगानी याद आती है ।

शहीदो की याद—५३

हमें तो उन शहीदों की कहानी याद आती है ।
चढ़ा दी भेंट में उठती जवानी याद आती है ।
गुरु गोविन्द के बच्चे चिने सरहिन्द दिवारों में ।
करी गंगू ने मिलकर के नादानी याद आती है ॥१॥
हकीकतराय बच्चे ने धर्म पर जान दे दीनी ।
करी थी काजी लोगों ने परेशानी याद आती है ॥२॥

वहादुर वीर वन्दे का वदन चिमटों से नोचा था।

चीर लड़का दिया मुंह में वेईमानी याद आती है ।।३।।
वहादुर नाना की सेना जलाई जिन्दा अग्नि में।
करी थी गोरों ने मिलकर वो शैतानी याद आती है ।।४।।
लड़ी थी गोरों के संग में पीठ से बांधकर वच्चा।
हमें तो वीर झांसी की वो रानी याद आती है ।।५।।
वाग जलियां वाले को क्या भारत भूल जायेगा।
वहाया खून डायर ने वो रवानी याद आती है ।।६।।
गिराया वम्व असेम्वली में काकोरी रेल को रोका।
खपी लठ्ठों से लाजपत की जिन्दगानी याद आती है ।।७।।
चलाया शुद्धि का चक्कर वचाया आर्य जाति को।
पंडित लेख श्रद्धानन्द की वलिदानी याद आती है ।।८।।
नहीं आनन्द नत्थासिंह यों फैशन वाज कहते हैं।
परन्तु हमको वो तर्ज वयानी याद आती है ।।९।।

—चौ० नत्थासिंह आर्य भजनोपदेशक

वीर-गान—५४

हो रही धरा विकल, हो रहा गगन विकल।
इसी लिए पड़ा निकल है आर्यों का वीर दल ।।

असंख्य कीर्ति-रश्मियां विकीर्ण तेरी राह में।
सदैव से विजय रही है वीर तेरी वांह में ।।

प्रवाह जोश का प्रवल, इसीलिए पड़ा निकल।
है आर्यों का वीर दल, ये आर्यों का वीर दल ।।

ऋचायें वेद की लिये, सुगन्ध होम की लिए।
जिधर से हम पड़े निकल, जले अनेक ही दिए ।।

सभी प्रकार से कुशल, सभी प्रकार से सवल।
है आर्यों का वीर दल, ये आर्यों का वीर दल ।।

क्रोध यदि हमें चढ़े तो सिन्धु सोख जायें हम ।
इस समग्र भूमि को ही गेंद-सा उठायें हम ।।

दिशायें दे उथल-पुथल, इसीलिए पड़ा निकल ।
है आर्यों का वीर दल, ये आर्यों का वीर दल ।।

झुका के शीश को हमें पहाड़ भी नमन करें ।
चलो अमर्त्य-पुत्र हम, अनीति का शमन करें ।।

दम्भ द्वेष दें कुचल, इसीलिए पड़ा निकल ।
है आर्यों का वीर दल, ये आर्यों का वीर दल ।।

स्वसभ्यता, स्वसंस्कृति, स्वदेश से ही प्यार है ।
स्वधर्म के लिए मरण ही अपना बस सिंगार है ।।

जवानियां उठीं मचल, इसीलिए पड़ा निकल ।
है आर्यों का वीर दल, ये आर्यों का वीर दल ।।

भजन—५५

तर्ज—छू लेने दो नाजुक होटों को।

कभी सोचा भी नौ जवान बता, था कितना बुलन्द इकबाल तेरा ।
जो कह दिया सो होके रहा, ना हुक्म सका कोई टाल तेरा ।।
सम्मुख तेरे डट जाये कोई, दुनियां में किसकी ताब थी यह
कोई आंख से आंख मिला न सका, ऐसा था जाहो जलाल तेरा—१
चरणों में तेरे झुकता था, आकर सारा संसार कभी ।
होता था हरसू भूतल पर, श्रद्धा से इस्तकबाल तेरा—२
तेरे लोहे और लहू का जग भर ने लोहा माना था ।
मुर्दे भी तुझे धमकाने लगे अब हो गया है क्या हाल तेरा-३
तू नाच क्लब रंगरलियो में, अपने को बिल्कुल भूल गया
धारण कौशल में कमाल कभी, अब फैशन में है कमाल तेरा—४
है पुतला खयालातो का यह, इन्सान "विरेन्द्र" सच जानो

जो बुलन्दो की जानिब चलता था है बदल गया वह ख्याल तेरा-५

—ब्र० जगदीश आर्यद्वारा

वीर गान—५६

महानाश की ज्वालाएं धरती पर दौड़ी आ रही
आर्यसमाज तुम्हें बढ़ना है मानवता चिल्ला रही
इस धरती पर कौन बढ़ेगा हमें बता दो…हमें बता दो हमें बता दो
आर्यसमाज, आर्यसमाज, आर्यसमाज

१- बोली धरती ध्वस्त स्वरों में भारत खोलो अपने कान
मांग रही है मानवता फिर सुखद शान्ति का छाया धान
ध्यान धारणा कौन धरेगा हमें बता दो

आर्यसमाज, आर्यसमाज, आर्यसमाज
महानाश…………

२- आर्याव्रत से भारतीय बनकर होकर हिन्दु हिन्दुस्तान
फिर वे हिन्दु बने मुसलमां अलग ले गये पाकिस्तान
इन्हें शुद्ध अब कौन करेगा हमें बता दो
आर्यसमाज, आर्यसमाज, आर्यसमाज
महानाश…………

३- बर्मा लँका जावा बाली श्याम मलाया चीन जापान
सभी बृहत्तर भारत में अफ्रीका तिब्बत व सुरनाम
इन्हें एक अब कौन करेगा हमें बता दो

आर्यसमाज, आर्यसमाज, आर्यसमाज
महानाश…………

४- आज धरा पर फिर होना है आर्य कुमारों का बलिदान
अरुण रक्त से धो देना है मां का कुटिल कलंक महान
रक्त राग यह कौन सुनेगा हमें बता दो

आर्यसमाज, आर्यसमाज, आर्यसमाज
महानाश............

गीत—५७

मानवता का पाठ पढ़ाने आये थे
वेदों का सन्देश सुनाने आए थे

१— जो जन थे मिथ्यावादी उन सब पर रोक लगा दी
अज्ञान मिटाकर सारा ऋषि ज्ञान की जोत जला दी
सभी हर्षाये थे। मानवता का पाठ.........

२— किसी चान्द के टुकड़े की ने किसी सूरज मुख में डाला
कोई बन के खुदा का बेटा आया मुक्ति दिलाने वाला
ऋषि हर्षाये थे। मानवता का पाठ.........

३— अमृत की वर्षा कीनी खुद जहर प्याले पीकर
जाति को जीवन बक्शा खुद अपना जीवन देकर
नहीं सुस्ताए थे। मानवता का पाठ.........

गीत—५८

निर्भय होकर हमें जगत में वैदिक नाद बजाना है
ऋषि राज का ऋण जो हम पर उसको हमें चुकाना है।

१— हमें पत्ता है सेवा करते लाखों संकट आएगे।
सीना ताने और लक्ष्य की हमको बढ़ते जाना है।
निर्भय होकर............

२— हाल काल हो कैसा लेकिन वैदिक चर्चा छोड़े न
यही हमारा मुख्य धर्म है जिसको हमें निभाना है।
निर्भय होकर............

३— वैदिक शिक्षा को अपनाकर ही जनता सुख पाऐगी।
हमें दुखी जनता का सारा संकट कष्ट मिटाना है।

निर्भय होकर............

४— विजय हमारी होगी निश्चित शंका की कोई बात नहीं
लगे यदि कुछ देर विजय में हमें नहीं घबराना है।
निर्भय होकर............

५— युवक सदाचारी हो इनके साथ युवतियाँ भारत की
यही देश की अभिलाषा है। वैदिक युग लौटाना है।
निर्भय होकर............

वीर गान—५६

करना है निर्माण हमें तो करना है।
आर्य राष्ट्र निर्माण हमें तो करना है ।।

१— देश में जन्म लिया है तूने।
माँ का दूध पिया है तूने।
जीवन अपना दान हमें तो करना हैं
करना हैं..............

२— कहाँ गयी वो तेरी जवानी।
खून तेरा बस बन गया पानी
कष्ट महान आसान हमें तो करना है
करना है...............

३— आर्यव्रत के टुकड़े हो रहे
आर्य वीरों तुम क्यों सो रहे
भारत का उत्थान हमें तो करना है
करना है निर्माण........

४— ऋषि ने जो मार्ग दिखलाया
श्रद्धानन्द ने है अपनाया
लेखराम बलिदान हमें तो करना है

करना हैं निर्माण.........

५— आर्य वीरों अब घर-घर जाकर
सोया आर्य फिर से जगाकर
वेदों का उत्थान हमें तो करना है
करना हैं निर्माण.........

भजन—६०

वह कौन आया चौक उठी है, दुनियां जिसके नाम से
पाखन्डियों में हल चल मच गई है जिसके प्रोग्राम से

कली गलियों से बाजारों से झोंपड़ियों चौबारों से।
वेद रिचायें गूंज उठी हैं स्वरों की झकारों से ।।

तोड जिसके दर्शन को उमड़ी थी जनता नगर ग्राम से ।। १ ।।

कली मसजिद से बुत खानों से पोंपो की मुलाओ की।
धज्जियाँ उड़ाई बाई बिल इन्जल पुराणों की पुष्टी
से प्रमाणों की ।।

तोड डेड़ अरब दुनियाँ थी विरोधी इकला लड़ा तमाम से । २ ।

कली धर्म है क्या अधर्म है क्या, पाप है क्या शुभ कर्म है।
ठीक ठीक सब को बतलाया, जाती वर्ण आश्रम है क्या
जीव को जग में भ्रम है क्या

तोड मोक्ष का साधन धर्म का पालन काम चलै नहीं दाम से
वेद के सूरज के आगे उल्लू चमगादड़ भागे।
मजहब को एक ढोंग समझकर मत मंतान्त वाले
भागे सब ऊलटे झगड़े त्यागे।

तोड वैदिक धर्म की दीक्षा लेने आ रहे शोभाराम ।। ४ ।।
वह कौन आया, चौक उठी है दुनिया जिनके नाम से

भजन—६१

ऐ ऋषि दयानन्द तेरी युग-युग तक अमर कहानी।
हम भूल नहीं सकते हैं की तूने जो कुर्बानी ॥

१— तू धर्म का था दीवाना, सच्चाई का परवाना।
तू झुका सत्य के आगे, तेरे आगे झुका जमाना ॥
सुन तेरी अद्‌भुत वाणी, दुनिया हो गई दीवानी ॥१॥

२— लाखों भूलें भटकों को तूने मार्ग दिखलाया।
जो श्रद्धा करके आया, उसे श्रद्धानन्द बनाया ॥
सच तो ये है मुर्द्रों को बख्शी तूने जिन्दगानी ॥२॥

३— बन सच्चा सेवक तूने की देश धर्म की सेवा।
लाखों तेरे अनुयायी सबको बांटा ये मेवा ॥
मिल के जो आज हम बैठे सब तेरी मेहरबानी ॥३॥

भजन—६२

खिदमते धर्म में जो कि मर जायेंगे,
वे अमर नाम दुनियां में कर जायेंगे।
ये न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे,
वह जिधर भेज देगा उधर जायेंगे ॥

देश उद्धार करने में एक-दो नहीं,
देख लेना हजारों ही सर जायेंगे।
आप दिखला रहे हैं किसे तुर्शियां,
ये नशे वो नहीं जो उतर जायेंगे ॥
तीर पर तीर बरसे, दबेंगे नहीं,
चोट खाकर तो सीने उभर आयेंगे।
टूट जाए न माला कहीं प्रेम की,
कीमती ये रतन सब बिखर जायेंगे ॥
लो अछूतों को छाती लगा आर्यो,
वर्ना ये लाल गैरों के घर जायेंगे।
गर मुहब्बत का मरहम लगाते रहे,
जख्मे दिल एक दिन इनके भर जायेंगे।
चाहे मानो न मानो खुशी आपकी,
हम "मुसाफिर" हैं कल अपने घर जायेंगे।
—श्री कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर

प्रेरणा गीत—६३

फूलों से तुम हंसना सीखो, भौंरों से तुम गाना।
सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना ॥
धुएं से तुम शिक्षा पाओ, ऊचीं मंजिल जाना
वायु के झोंको से सीखो, हरकत में ले आना···॥१॥

वृक्षों की डालीं से सीखो फल पाकर झुक जाना,
मेंहदी के पतों से सीखो, पिस पिस रंग चढ़ाना···॥२॥

पतझड़ पेड़ों से सीखो, दुःख में धीर धराना,
सुई और धागे से सीखो, बिछड़े गले मिलाना···॥३॥

मुर्गे की बोली से सीखो, उठना सुवह सवेरे
देव दयानन्द से सीखो, देश-धर्म पर मर जाना॥४॥

फूलों से तुम हंसना सीखो, भोरों से तुम गाना
सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना।

भजन—६४

तर्ज—हरियाणा की

टेक हस्ते हस्ते जिया करें, येही नौ जवानी होती है
देश धर्म पर मरे जो उनकी अमर कहानी होती है
वीर भगतसिंह एक रोज कचैरी अन्दर बुलाया गया,
हसना यहाँ पर सख्त मना है यों उसको समझाया गया
मगर हंसी को रोक सका ना बहुता उसे दवाया गया।
इसको फांसी होनी चाहिये ऐसा हुकम सुनाया गया
तोड़ तौहीन, अदालत की करना भारी शैतानी होती है ॥१॥
कली जज से बोला भगतसिंह आवै हसने में आनन्द मुझे
धधक रही है ज्वाला दिल में कभी बुझाई नहीं बुझे
सदा शहीदो की जै बुलाती कायर कमीन नहीं पुजे
फांसी पर हांसी आ गई तो कहां मरण नै जगह तुझे
तोड़ फाँसी गोली मरना वीरों की निशानी होती है।।
कली बैरागी बन्दे की घटना जज साहब तेरे याद नहीं,
सिन्डासियों से खाल नौचली तन से खून की धार बही
सरिया करके लाल घुसेड़े तन में और क्या कसर रही
बच्चा करके कत्ल मांस की बोटी मुंह में ठूस दई

तोड़ हंस हंस के बैरागी कहे मुझे ना परेशानी होती है ॥३॥
कली जिसने हंसना सीख लिया, वो ना जीवन में रोयेगा,
वीर वहादुर मिट सकता है, स्वाभिमान ना खोयेगा,
झूठा चापलूस मिन्नत कर मुहूं का थूक विलोयेगा,
ईश्वर का विश्वासी आर्वयिसन मार्ग ही टोहैगा,
तोड़ नित्त नई वीरों की गाथा नहीं पुरानी होती है
कली देश धर्म पर मिटने वाले बीर हमेशा ढ़ेठे हों
कभी नहीं मिटते हैं, जिन्होंने देश के संकट मैंटे हों
सौभाग्य यही श्रृंगार यही जो मौत के साथ लपेटे हों
खैमचन्द धन्य धन्य वो जननी जिनके ऐसे बेटे हो
तोड़ साहस वढ़ाए वच्चों का वो मां मर्दानी होती है ॥५॥

(कव्वाली)—६५

आर्यो संसार का उद्धार करना है तुम्हें।
मौत से जीने की खातिर प्यार करना है तुम्हें ॥
वेद की ज्योति से जग को जगमगा दो आर्यो।
पाप के पर्वत को तुम भू पर गिरा दो आर्यो।
अज्ञान के संसार का संहार करना है तुम्हें ॥
मौत से.........

स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों की तुम तस्वीर हो।
वन्दा बैरागी हो तुम और लेख जैसे वीर हो।
सोये अरमानों को फिर बेदार करना है तुम्हें ॥
मौत से.........

वाग अपने को ही अपनों ने लगा दी आग है।
प्रीत का संगीत एक बीता पुराना राग है।
डगमगाता आज बेड़ा पार करना है तुम्हें ॥
मौत से.........

कौन माता के मिटाएगा अरे सन्ताप को।

आग में डालेगा तुम बिन कौन अपने आप को।
आज अपने आप को तैयार करना है तुम्हें॥

मौत से.........

(हिन्दी भाषा) गीत—६६

हिन्दियो की शान हिन्दी, हिन्दियों का प्राण है।
हिन्दी की रक्षा करना हिन्दुओं का काम है॥

सूरदास, मीराबाई जब वीणा खोलते थे।
हिन्दी के ही मीठे मीठे पद प्यारे बोलते थे।
हिन्दी का ही रस लेता कवि रसखान है॥

हिन्दी में हिन्दी वीरो, राष्ट्रगान गाते हो।
भारत माता की हो जय, हिन्दी में बुलाते हो।
मां का मिटाये नाम, कैसी सन्तान है॥

आशानन्द बच्चों को जो शिखर पे चढ़ाना चाहो।
आरम्भ से बालकों को हिन्दी का ज्ञान कराओ।
कला कौशल शास्त्र का सब हिन्दी में ही ज्ञान है॥

(वीर बालक) गीत—६७

भारत मां के लाल कि जिनकी उम्र थी नौ-नौ साल
वीर कहलाते थे।

हाथ में लेकर भाल, सामने आ जाए गर काल
वहीं डट जाते थे॥

धर्म की निशानी, चोटी जन्जू थी हमारी
जीते जी न उतारते थे।

बच्चों का ही खेल, मौत जिन्दगी का मेल
जान हंस-हंस के वास्ते।

भला मृत्यु की कहां मजाल, कि काटे चोटी का इक वाल
आप कट जाते थे।
नन्हें नन्हें सुकुमार हाथ में लेकर कटार
जंग में जो ललकारते थे।
वालकों की शान देखो, वड़े वलवान देखो
आगे दम नहीं मारते थे।

गीत—६८
(सौ-साल जीने का नुस्खा)

अगर भूख कम कम है मेंदे में गिरानी।
तो पी रस नीबू और अदरक का पानी॥
अगर खून कम है और वलगम ज्यादा।
तो खाइये गाजर वा शलगम ज्यादा॥
जिगर के ही बल से है इन्सान जीता।
जोफें जिगर है तो खाले पपीता॥
अगर दांत दर्द से तू है व्याकुल।
तो तेल सरसों और सेन्धा नमक मल॥
वदहजमी में गर चाहते हो इफाका।
तो करिये एक या दो वक्त फाका॥
थकन से हो अगर तेरे अंग ढीले।
तो फौरन ही गर्मा गर्म दूध पीले॥
यदि दिल की कमजोरी का है अहसास।
तो खाइये मुरब्बा, आंवला या अनानास॥
जो दुखता गला हो नजले के मारे।
तो नमकीन पानी कर ले गरारे॥
अगर तेरा है दिमागी काम।
तो शहद के साथ खा भीगें बादाम॥

गर्मी में लगे गर्मी तो खूब नहायाकर।

सर्दी में लगे सर्दी तो तिल और गुड़ खायाकर ॥
प्यारे तमाम बीमारियों की जड़ कब्जी है।
ऊषा पानी पियो और खाने को सब्जी है ॥
यदि सौ साल की चाहते हो दौड़।
तो हरड़ और हरि को बिल्कुल न छोड़ ॥

भजन—६६

जिस दिन वेद के मन्त्रों से धरती को सजाया जायेगा।
उस दिन मेरे गीतों का त्योहार मनाया जायेगा ॥
खेतों में सोना उगलेगा झूमेगी डाली डाली।
वीरानों की कोख से पैदा जिस दम होगी हरियाली ॥
विधवाओं के मस्तक पर, चमक उठेगी जब लाली।
निर्धन की कुटिया में जिस दिन दीप जलाया जायेगा ॥१॥
उस दिन...

खलिहानों की खाली झोली भर जायेगी मेहनत से।
इन्सानों की मजबूरी जब टकरायेगी दौलत से ॥
सदियों का मासूम लड़कपन जाग उठेगा गफलत से।
भूखे बच्चों को जिस दिन भूखा न सुलाया जायेगा ॥२॥
उस दिन...

जिस दिन काले बाजारों में रिश्वतखोर नहीं होंगे।
जिस दिन मदिरा के सैदाई तन के चोर नही होंगे ॥
जिस दिन सच कहने वालों के दिल कमजोर नहीं होंगे।
झूठी रस्मों को जिस दिन नीलाम कराया जायेगा ॥३॥
उस दिन...

बिस्मिल और भगतसिह की कुर्बानी की पूजा होगी।
राजगुरु सुखदेव की जिन्दगानी की पूजा होगी ॥

वीर शिरोमणि लक्ष्मीबाई रानी की पूजा होगी।
दयानन्द के सपनों को साकार बनाया जायेगा ।।३।।
उस दिन···

भजन—७०

इश्क जिनको है अपने वतन का,
वे खुदी को मिटाते रहेंगे।
शमां महफिल में, जलती रहेगी,
तो पतंगे भी आते रहेंगे ।।
इश्क कहने से आता नहीं है।
इसका बुजदिल मे नाता नहीं है।
वही आशिक है अपने सरों को,
जो खुशी से कटाते रहेंगे ।।१।।
इश्क करने का जो है तरीका,
वो तो आजाद बिस्मिल ने सीखा।
उनका दुनियां से जाना न समझो
वे सदा याद आते रहेंगे ।।२।।
चल दिये छोड़कर निज वतन को,
उनकी दुनियां चमन बन गई है।
जिसमें इन्सानियत न दफन हो
ऐसी दुनियाँ बसाते रहेंगे ।।३।।
आशिको दर्दे दिल है तो बोलो,
नफ्स को इश्क कहकर न तोलो।
क्या वे नागर हविश के नशे में
जिन्दगानी गंवाते रहेंगे ।।४।।

प्रयाण गीत--७१

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला, स्वतन्त्रता पुकारती।
अमृत्य वीर, पुत्रहो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ है, वढ़े चलो वढ़े चलो।
असंख्य कीर्ति रश्मियां, विकीर्ण दिव्य दाहसी,
सपूत मातृभूमि के, रुको न सूर साहसी।
अराति सैभ्य सिन्धु में, सुवाग्वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो, जयी बनो-वढ़े चलो, बढ़े चलो।

आर्यों के लिये शुभ कामना

सब वेद पढ़े सुविचार वढ़े वल पायें चढ़े नित ऊपर को।
अविरूद्ध रहें ऋजुपन्थ गहे, परिवार कहें वसुधा भर को॥
ध्रुव धर्म धरे, पर दुःख हरे, तन त्याग तरे, भग सागर को।
दिन फेर पिता, वर दे सविता हम आर्य करे जगती भर को॥

प्रार्थना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम् देवदेव॥

गीत-७२

(वेद की वन्सी)

वेद की वन्सी वजाई जव ऋषि ने आन के।
सारा आलम झुक गया तेरी नजर के सामने ।।
जलते थे अंजलो-कुरान और पुराणों के चिराग।
मंद सारे पड़ गये तेरी चमक के सामने ।।
काशी के विद्वान आये जव मुकाविल में तेरे।
हार के झुंझला उठे तेरे इलम के सामने।
कर्ण की तलवार चमकी जव म्यां से निकल कर।
टुकड़े टुकड़े हो गई तेरी भुजा के सामने।
पान में विष देने वाला आया जव पकड़ा हुआ।
कह दिया छोड़ दो मेरी नजर के सामने।
कैद करवाने नहीं आया दयानन्द देश को।
दोस्त दुशमन हो गए हैरान दया के सामने।

गीत-७३

(निर्भय रहो)

कुछ उवालों से क्यूँ डर गये
वीर भालों से क्यूँ डर गये

सव अंधेरों को वो पी गया
तुम उजालों से क्यूँ डर गये
तुम हो चेले दयानंद के
चंद छालों से क्यूँ डर गए

जिंदगी नाम जव कर ही दी
विष के प्यालों से क्यूँ डर गए

तोड़ तलवार कल दी गये
आज ढालों से क्यूँ डर गये

सत्य बिकता कभी भी नहीं
इन दलालों से क्यूँ डर गये

तोड़ दो द्वार पाखण्ड के
वन्द तालों से क्यूँ डर गये

ओ 'मनीषी' तुम्हें क्या हुवा
कुछ सवालों से क्यूँ डर गये

गीत—७४

ऋषि के अनुयाई

तर्ज—हम तुम्हें चाहते हैं ऐसे···

चल पड़े हम ऋषि के दीवाने
जानो तन देके भी—ऽ ऽऽऽऽ
जानो तन देके भी, वेद संदेश जग को सुनाने
देश भक्ति के गाकर तराने
फूंककर जिन्दगी—नौजवानों में हलचल मचाने
पाठ ऐसा ऋषि ने पढ़ाया
देश का हर जवां—तख्तएदार पर मुस्कराया
किस से हमने भगतसिंह पाया
किस की कृपा हुई रामप्रसाद बिस्मिल बनाया
काम छोड़ा जो ऋषि ने अधूरा
आओ मिलकर करें उस अधूरी कहानी को पूरा
हे प्रभो तेरी इच्छा हो पूरण
हंसके बोले ऋषि कर चला अपना कर्त्तव्य पूरण

उसको श्रद्धा से सर को झुकाएँ
उसका ऋण जो चढ़ा शींश देकर भी उसको चुकायें

'भारती'

गजल—७५

तुम्हारे जो अहसाँ कभी याद आये।
तुम्हारी कसम तुम बहुत याद आये ॥१॥

किये तुम पै हमने बहुत जुल्म सचमुच।
मगर वो समझ में बहुत बाद आये ॥२॥

झुके हैं सभी सर ये आँखें हैं पुर नम।
औ होठों पं रहरह के फरियाद आये ॥३॥

जमाने में हम हो गये आज रुसबा।
कि करने को हम तुझपै बैदाद आये ॥४॥

तेरे दर पै जा ऐ खुलूसे-मुजस्सिम।
गये शादमाँ बन, जो नाशाद आये ॥५॥

तेरे दुशमने जां तिरे हर कदम पर।
तुझे करने दुनियां से बरबाद आये ॥६॥

मगर तूने उन पर भीं नजरे-करम की।
यूं तुझसा न पहले न फिर बाद आये ॥७॥

तेरे पाक नक्शे-कदम पर चले हम।
तेरी तुझसे लेने को इमदाद आये ॥८॥

—'श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री'

भजन—७६

देखा न कोई दूजा ऋषिवर महान जैसा।

१—इक ओर सारी दुनियां इक ओर वो अकेला।
कुछ पास में नहीं था, चेली न कोई चेला॥
दुनियां के हर सितम को, मरदानगी से झेला।
हर दम रहा अड़ा वो, सुदृढ़ चट्टान जैसा॥

२—देखा किसी का दुःख तो, ऋषिवर की आँख रोई।
जग के लिये ऋषि ने, रातों की नींद खोई॥
देखे अनेक त्यागी, ऋषि राज सा न कोई।
दिल था विशाल इतना है आसमान जैसा॥

३—हे आर्यो तुम समाधि, मेरी नहीं बनाना।
मेरे तन की राख लेकर खेतों जा गिराना॥
वेदों के पथ पे चलना, संसार को चलाना।
बन जाये श्याम जीवन ऋषिवर महान् जसा॥

वीर-गान—७७

आर्य वीर की पहचान

समझ लो वही आर्य वीर हो तुम!
जो दुखियों की सेवा में तन मन लगावे।

जो बर्बाद उजड़े घरों को बसावे।
जो औरों को सुख देके खुद दुःख उठावे।
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।
जो अन्याय के आगे झुकना न जाने।
मुसीबत से डर कर जो छिपना न जाने।
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।
जो मृत्यु का भय अपने मन में न लावे।
धधकती ज्वाला में जो कूद जावे।
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।
जो मैदान में लाजपत बनके निकले।
भगतसिंह सुखदेव और दत्त बनके निकले।
जो शेरों पे चढ़कर भरत बनके निकले।
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।
जो ब्रह्मचर्य से अपना बल थाम रखे।
जो रोशन दयानन्द का नाम रखे।
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।

गीत—७८

'वलवलों की तान है'

तर्ज—ओ३म् नाम प्यारा है जी ओ३म् नाम प्यारा है।

आन है हमारी और ईश का विधान है।
वेद ज्ञान आर्यों की जान और प्राण है।
लेखराम का लहू पुकार कर के कह रहा।
खून राजपाल का उसी को राह बह रहा।
राम भक्त आर्यों के वलवलों की तान है।। आन···

छूत छात भेद भाव का जो घोर घाती है।

वेद ज्योति हृदयों की वेदना मिटाती है।
वीर श्रद्धानन्द जिसका देवता महान है ।। आन···

धर्म प्यारे कपिल और कृष्ण योगिराज का।
लाज लाजपत की व मान हंसराज का।
देश के दीवाने वीर बिस्मिल की तान है ।। आन···

जिसके लिए जेल में सुमेर जान वार दी।
दयानन्द जिसकी सोई भावना उभार दी।
पवन पुत्र वीर धीर जिसका हनुमान है ।। आन···

जिसके वीरों को न वार छुरे के डरा सके।
जिसके सन्त सीना थे संगीनों से अड़ा सके।
जिसके वीर सैनिकों की भावना महान है ।। आन···

गीत—७९८

लेखराम का निराला देश प्रेम

लिफाफा हाथ में लाकर दिया जिस वक्त माता ने।
लगे झट खोलकर पढ़ने दिया है छोड़ खाने को ।।
लिखा था उसमें कुछ हिन्दु मुसलमां होने वाले हैं।
तो धोकर हाथ जल्दी से हुए तैयार जाने को ।।
कहा माता ने हे बेटा अभी तू आके बैठा है।
अभी तू हो गया तैयार तू परदेश जाने को ।।
तू माता और पत्नी को कुछ ऐसा भूल जाता है।

नहीं आता महीनों ही हमें सूरत दिखाने को ।।
हमारी सुध नहीं लेता है तो तू ले नहीं बेटा ।
तेरा इकलोता बेटा है, वह है तैयार जाने को ।।
मेरा इकलोता बेटा जाता है तो जाने दो लेकिन ।
मैं जाता सैंकड़ों ही लाल जाति के बचाने को ।
मुलाजिम भी सवारी उस समय ले आकर जा पहुंचा ।
लो माता जी नमस्ते है मैं हूं तैयार जाने को ।।
सुबह को तार यह पहुंचा कि लड़का चल बसा घर से ।
तो बोले फिक्र ही क्या है हर एक आता है जाने को ।।

वीर-गान-८०

उठो २ ऐ आर्य वीरो ओ३म का झण्डा लहरा दो ।

वेदों का संदेश सुनाओ, भूले भटके लोगों को ।
वेदों का सूरज चढ़ आया सब दुनियां को बतला दो ।।१

राम, कृष्ण और गोतम की शिक्षा का तुमको ध्यान रहे
घर घर में हो हवन यज्ञ वेदों का पढ़ना सिखला दो ।।२

दूर करो सब छूत छात और विधवाओं के संकट को ।
ऋषि दयानन्द के भक्तो, शुद्धि का डंका बजवा दो ।।३

वीर प्रताप शिवा, बैरागी के जौहर दिखलाओ तुम ।

वीर हरी सिंह नलवे जैसी धाक जहां पै बिठला दो ॥

जात पात और छूत छात के झगड़े एक दम बंद करो।
दयानन्द ने कहा है जो कुछ उसको करके दिखला दो ॥

गीत—८१

अकेला ? क्या नहीं कर सकता

यह मत कहो की जग में कर सकता क्या अकेला।
लाखों में वार करता, इक सूरमा अकेला ॥
होते है ओखली में, अनगिनत धान के कण
लेकिन सभी को मूसल दल डालता अकेला ॥
लोहे की पटरियों पर, होते अनेक डिब्बे।
लेकिन सभी को इजन है खींचता अकेला ॥
एक रोज शाहजहां के दरबार में अमर सिंह।
अपनी कटार का बल दिखला गया अकेला ॥
आकाश में करोड़ो तारे हैं टिम टमाते।
अन्धकार 'जग का हरता इक चन्द्रमाँ अकेला ॥
लाखों ही जन्तुओं पर विठला के धाक अपनी।
स्वाधीन शेर वन में है घूमता अकेला ॥
असुरों का मद मिटाकर, लंकापुरी जलाकर।

हनुमान राम दल में फिर आ गया अकेला ।।
जापान में सजाकर, आजाद हिन्द सेना ।
नेता सुभाष जौहर, दिखला गया अकेला ।।
था कुल जगत विरोधी तिस पर ऋषि दयानन्द ।
वैदिक धर्म का झण्डा, फहरा गया अकेला ।।

एक बात ! सब के नाम

आज संसार एक विषम स्थिति से गुजर रहा है। समाज के नैतिक धार्मिक मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं। जीवन को अपने तक सीमित कर सभी ऐशपरस्ती के लिए विलासिता के समान जुटाने में दिन रात संलग्न है। व्यक्ति का व्यक्ति पर विश्वास उठता जा रहा है। यदि इन सामाजिक मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने के लिए कुछ न किया गया तो समस्त मानव समाज का विनाश निश्चित है। चाहे कोई भी नियम कानून या मान्यता हो वह समाज में इसलिए मानी जाती है क्योंकि उसके पीछे उसे मानसिक बन्धन या कानूनी शक्ति नजर आती है किसी अपराध से भी मनुष्य इसलिए बचता है क्योंकि उसे समाज का भय रहता है, साथ ही राज्य द्वारा दण्डित व्यक्ति भी समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है।

दुनियाँ में आजतक कोई भी बदलाव या क्रान्ति लाल खून अर्थात युवा शक्ति ही लाया करती है। इस बिगड़ते माहौल में परिवर्तन लाने की आशा कर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् भी प्रयत्नशील है। इसके मुख्य उद्देश्यों में "युवा शक्ति को संगठित कर उसमें सत्य सनातन

वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के प्रति आस्था पैदा करना तथा उनमें अनु-

शासन, चरित्र निर्माण की भावना पैदाकर तथा सामाजिक कुरीतियों व अन्धविश्वासों के दायरे से बाहर निकाल एक आदर्श समाज के निर्माण के लिए कृत संकल्प करना है। हमें यह याद रखना चाहिये कि आदर्श नागरिकों से ही आदर्श समाज बनता है। आओ हम सब भी विचार करें।

अनिल कुमार आर्य
महामन्त्री
केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद्
दिल्ली प्रदेश

"वैदिक धर्म का सच्चा स्वरूप"

—स्वामी समर्पणानन्द जी

"जिस मुहल्ले में तुम रहते हो यदि उसकी नालियां दुर्गन्धयुक्त हैं और चारों ओर कीचड़ सड़ रहा हैं, मच्छरों की बस्तियाँ बस रही हैं, लोग मैले कुचैल अनपढ़, रोगों के मारे और निर्धनता के सताये हैं और तुम इन अवस्थाओं में परिवर्तन करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हो तो मत समझो तुम धर्मात्मा हो। चाहे तुम कितनी लम्बी समाधि भी लगाते हो, कितना भजन कीर्तन करते हो, कितने घण्टे घड़ियाल बजाते हो और कितनी भी सामग्री फूँक देते हो, तो भी तुम धर्मात्मा नहीं हो। यदि तुम्हारे मन्दिर की आरती ने, तुम्हारी लम्बी सन्ध्याओं ने और तुम्हारी पाँच नमाजों ने तुम्हारी आँखों को गरीबों का दुःख देखने के लिए, तुम्हारे कानों को उनकी दर्द भरी आहें सुनने के लिए और तुम्हारे हाथों को उनके कष्ट निवारण के लिए तुम्हें विवश नहीं किया तो तुम आँख रखते भी अन्धे हो, कान रखते भी बहरे हो, हाथ रखते भी लूले हो!"

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था को आधारशिला बनाकर आज हमें अपने राष्ट्र का 'कायाकल्प' करना होगा। वर्णाश्रम व्यवस्था का मूलमन्त्र हैं—जन्म के आधार पर किसी भी व्यक्ति को समाज में किसी भी प्रकार के (धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक या राजनैतिक) अधिकार नहीं दिये जा सकते। अधिकारों का आधार जन्माधिकार वाद या श्रमाधिकारवाद न होकर गुण कर्म स्वभाव पर आधारित सदुपयोगवाद होगा। समान प्रसव के आधार पर मनुष्य मात्र की एक जाति है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जाति नहीं पर वर्ण हैं। जिनका निर्णय प्रत्येक व्यक्ति के गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर होता है।

बारह अमर सूत्र

१—पुराने आर्य नेताओं ने अपने घरों को उजाड़ कर आर्यसमाज को बनाया था। नये आर्य समाजी नेता आर्यसमाज को उजाड़ कर अपने घरों को बना रहे हैं।

२—पौराणिकों में पुरोहित अपने यज्ञमान को ठगता है। आर्य समाजी यज्ञमान अपने पुरोहित को ठगता है।

३—पौराणिकों में ज्ञानी-अज्ञानियों को अपनी आज्ञा में चलाते है। आर्यसमाजी अज्ञानी-ज्ञानियों को अपनी आज्ञा में चलाते हैं।

४—पौराणिकों में अपूज्यों की पूजा होती है, आर्यसमाज में पूज्यों का अनादर होता है।

५—पौराणिकों में संन्यासी सबसे बड़ा माना जाता है आर्यसमाज में संन्यासी का कोई महत्व नहीं है।

६—पौराणिकों में सन्यासी जीवन निर्वाह के लिए निश्चिन्त होता है। आर्य समाजी सन्यासी को जीवन निर्वाह की चिन्ता ता

निरन्तर रहती ही है मरने के लिए भी चिन्ता रहती है कि कहा मरूं।

७—आर्यसमाज में एक ओर यज्ञ और योग के नाम पर पाखण्ड प्रबल वेग से बढ़ रहा है। दूसरी ओर राजनीति का राक्षस आर्यसमाज को जिन्दा ही खा जाना चाहता है।

"अमर स्वामी परिव्राजक"

८—आर्यसमाज को क्षति पहुंचाने वाला आर्यसमाजी ही हैं।

"प्रिंसिपल हंसस्वरूप जी डी० ए०वी० स्कूल"
चन्डीगढ़

९—आर्यसमाज वह अस्पताल है जिसमें मरीज आदमी भर्ती होते है तथा फिर इसमें से पारस मणी बनकर बिलकुल स्वस्थ निकलते हैं।

१०—आर्यसमाजी अगर खुश हो जावे तो धन्यवाद कर देता है, अगर रुष्ट हो जावे तो जीना भी हराम कर देता है।

"लाजपत राय आर्य"

११—आयसमाजी वही है जो न खुद चैन से बैठें तथा न किसी को वैठने दे।

"स्व० स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज

१२—आर्यसमाजी वही है, जो खुद ही अपनी बात को न माने तथा दूसरों से मनवाना चाहे।

स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती

---

१. मैं अकेला ही चला था,
जानिवें मंजिले की और।
हम सफर वढ़ते गये,
और कारवां बनता गया॥

२. वाधायें कब वाध सकी है,
आगे बढ़ने वालों को।
विपदायें कब रोक सकी है,
मरकर जीने वालों को॥

विशेष अवसरों हेतु शेर

१— न कभी दबे हैं, न कभी दब सकेंगे,
मिजाज अपना है बागियाना।
कुछ अपना ही नुकसान करेगा,
जो हमसे टकराऐगा जमाना॥

२— मुझे क्या बतायेगा ये दौरे जमाना।
मुझे अपनी मन्जिल खुद नजर आ रही हैं॥

३— वक्त आने दे बता देगे तुझे, ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बतायें, क्या हमारे दिल में है॥

४— हमसे जमाना है, जमाने से हम नहीं।
हमको मिटा सके, ये जमाने में दम नहीं॥

५— जिन्हें हम हार समझें थे, गला अपना सजाने को।
वही अब नाग बन बैठे, हमारे काट खाने को॥

६— मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
जिस पथ पर शीश कटाने, जाये वीर अनेक॥

७— हम कौन थे, क्या हो गए, और क्या होंगे अभी।
आओ मिलकर के विचारे, ये समस्याऐ सभी॥

८— वह पथ क्या- पथिक कुशलता क्या, जिस पथ पर बिखरे शूल न हो।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धारा ही प्रतिकूल न हों॥

९— होगी सफलता क्यों नहीं, कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।
वार सारे विपत्तियों के, वीर बनकर के सहो॥

१०—फूल तो खिलकर बहारे, जाफिजां दिखला गए।
हसरत तो उन गुच्चो पे है, जो बिन खिले मुरझा गए॥

११—[illegible] गुनाहगार बना देती है।
बाग के बाग को बिमार बना देती है।
ऐ! भूखे पेट को देश भक्ति सिखाने वाले,
भूख तो इन्सान को गद्दार बना देती है!!

१२—हजारों मन्जिलें होगी, हजारों कारवां होंगे!
बहारें हमको ढूंढेगी, न जाने हम कहां होंगे!!

१३—काट सकते हो तो बाहिर का हकीकत काटो।
काट सकती अस्ल हकीकत को ये तलवार नहीं॥

१४—खीचों न कमानो को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो॥

१५—जिन्दगी जिन्दा दिलो का नाम है।
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते है॥

१६—बशर राजे दिली कहकर, जलीलो खवार होता हैं।
निकल जाती है जब खुशबू, तो गुल बेकार होता है॥

१७—प्रभु ने आज तक उस कौम की हालत नहीं बदली।
न हो ख्याल जिस कौम को अपनी हालत बदलने का।

१८—कमर बाधें हुए सब यार बैठे हैं, तैयार चलने को।
कुछ आगे चले गए हैं, बाकी तैयार बैठे हैं॥

१९—अगर तू मर्तबा चाहे, मिटा दे अपनी हस्ती को।
कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है॥

२०—मजा जिन्दगी का कुछ वहीं जानते हैं।
जो मौत को जिन्दगी जानते हैं॥
नहीं जानते हैं कि अन्जाम क्या है,
मरना महज दिल्लगी जानते है॥

२१—मत करो निराशा की बातें, जीवन संभल की आशा है।

कर्तव्य कर्म करते जाओ, यह जीवन की परिभाषा है ।।

२२—गुनाहगारो में हूं शामिल, गुनाहों से नहीं वाकिफ।
सजा तो जानते है हम, खुदा जाने खता क्या है ।।

२३—उनकी तुर्बत पे नहीं एक भी दिया,
जिनके खू से चले ये चिरागे वतन ।
आज महकते है, मकवरे उनके ।
जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन ।।

२४—गिरते हैं सहसवार ही मैदाने जंग में ।
वह निफ्ल क्या गिरे जो घुटनों के वल चले ।।

२५—जो वन्दा बन्दगी से जुदा हो गया ।
खुदा की कसम वो खुदा हो गया ।।

२६—गिरते है ख्याल तो गिरता है आदमी ।
जिसने उन्हें सम्भाल लिया, वह सम्भल गया ।।

२७—आजादी के बाद वतन में सब उल्टे काम हुए हैं,
अन्जाम ये निकला हर चीज के चौगुने दाम हुए हैं ।
जिन्होंने जलाई थी वतन हित आजादो को शमां,
आज वहीं परवानें महफिल में क्यों बदनाम हुए हैं ।।

२८—इतने खुदा हैं, इस खुदा को खुदाई में ।
किस-२ खुदा के सामने सजदा करे कोई ।।

२९—वक्त गुलशन पे पड़ा तो लहु हमने दिया ।
अब बहार आई तो कहते कि तेरा क्या काम हैं ।।

३०—जिसको निज गौरव देश जाति का अभिमान नहीं ।
वह नर नहीं पशु निरा है, और मृतक समान हैं ।।

३१—बतमीजी कर रहे हैं, आज फिर भंवरे चमन में
साथियों ! आंधी उठाने का जमाना आ गया ।

वक्त को तकदीर स्याही से लिखी जाती नहीं,

खून में कलमें डुबोने का जमाना आ गया है ॥

३२—किस काम का है दरिया, जिसमें नहीं रवानी ।
जब जोश ही नहीं है, किस काम की जवानी ॥

३३—मेरे शोणित की लाली से,
कुछ तो लाल धरा होगी ही ।
मेरे वर्तन से परावर्तित,
कुछ तो धरा होगी ही ॥

सत्य असत्य के निर्णय के लिये
सत्यार्थ प्रकाश पढ़े

"शहीद बिस्मिल का प्रिय शेर"

वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है,
सुना है आज मकतल में हमारा इम्तहाँ होगा ।
जुदा मत हो मेरे पहलु से ऐ दर्दे वतन हर्गिज,
न जाने वादे मुर्दन मैं कहां और तू कहाँ होगा ॥ १ ॥
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हरबरस मेले ।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशा होगा ।
इलाही वह भी दिन होगा जब अपना राज देखेंगे,
जब अपनी ही जमी होगी,
अपना आसमा होगा ॥ २ ॥

ओ३म्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का
शारीरिक शिक्षा-क्रम

प्रथम श्रेणी

१. शारीरिक हल्का व्यायाम (पी० टी०)

२. आसन

१. शीर्षासन, २. शवासन, ३. उत्तानपादासन, ४. विपरीत कर्णी। ५. सर्वांगासन, ६. मत्स्यासन, ७. हलासन ८. मकरासन, ९. भुजंगासन, १०. शलभासन ११. धनुरासन, १२. वक्रासन, १३. अर्धमत्स्येन्द्रासन, १४. वज्रासन, १५. सुप्तवज्रासन, १६. मयूरासन, १७. चक्रासन, १८. गरुड़ासन, १९. योगमुद्रासन, २० शवासन, २१. पश्चिमतोसन।

प्राणायाम

१. कपालभाति, २. नाड़ी शुद्धि ३. बाह्यकुम्भक।
मूल वन्ध, उड्डियान वन्ध, जालन्धर बन्ध का अभ्यास

दण्ड-बैठक

दण्डों के लिए आदेश
क सज्ज ख- उपविश
ग सावधान, घ- विश्रम
१ साधारण दण्ड
२ पार्श्वदण्ड (बाजूदण्ड)
३ वृश्चिक दण्ड न० १

बैठक के लिए आदेश
क सावधान
ख माप लो
१ साधारण बैठक
२ सपाट बैठक
३ पहलवानी बैठक

४. हनुमान दण्ड न० १
५. राममूर्ति दण्ड
६. शेर दण्ड
७. पलट दण्ड
८. सर्प दण्ड

४. राममूर्ति बैठक
५, पवित्रा बैठक
६. लेहरा बैठक
७. हनुमान बैठक न० १
८. हनुमान बैठक न० २

लाठी

लाठीशिक्षण के आदेश :—लाठी लपेट (यष्टि वेष्ट)

सावधान, विश्राम।

१. सीधी बेल (मार हाथ)
२. उल्टी बेल (रोक हाथ)
३. दो दिक् (सामने दो सीधे हाथ, पीछे दो उल्टे हाथ)
४. मार चाल, रोक चाल
५. रणमार—१
६. रणमार—२
७. रणमार चाल
८. रणमार छलांग
९. कुक्षी मार, कुक्षी चाल, कुक्षी छलांग
१०. जनेऊमार, (दाहिने बायें जनेऊ मारते हुए आगे बढ़ना व पीछे आना)

लड़न्त

१. नमस्ते
२. शिरमार (तीन भेद)
३. शिर, कान, कमर, पैर मार
४. पवित्रा चाल

छुरी

आदेश-सावधान

१ कोहनी बन्ध — प्रथम अभ्यास
२ कोहनी बन्ध — द्वितीय अभ्यास
३ कलाई मरोड़ — प्रथम अभ्यास
४ कलाई मरोड़ — द्वितीय अभ्यास
५ कोहनी तोड़
६ कमर तोड़

सैनिक शिक्षा

आज्ञायें—

१. सज्ज २. विश्रमः ३. आरम ४. एक पंक्तिः ५. संख्या (१,२,३,४…) ६. द्वयो संख्या (१,२,१,२…) ७. त्रिषु संख्या (१,२,३,१…) ८. चतुषु संख्या (१,२,३,४,१…) ९. पंक्ति द्वयम्, पंक्ति त्रयम्, पंक्ति चतुष्टयम्, दक्षतो मिल-सम्मुख। १०. दक्षतो यास्यति—दक्ष भ्रम, वामतो यास्यति—वामभ्रम, पृष्ठे यास्यति—पृष्ठे भ्रम, पुरो यास्यति। ११. दक्षार्ध भ्रम, वामार्ध भ्रम १२. अग्रे चल, पृष्ठे चल, वाम चल, दक्ष चल। १३. क्षिप्रं चल १४. तिष्ठ १५. धावन चल, शनैश्चल १६. पूर्णमापतो मिल, अर्द्धमापतो मिल १७. दक्ष युज, वाम युज, मध्यतो युज १८. उपविश, उत्तिष्ठ १९. प्रारम्भः २०. अवकाश २१. मण्डलम् २२. अर्द्धमण्डलम् २२. हस्त-मण्डलम् २३. गायक ध्वजस्थानम् २४. स्वस्थानम् २५. सैनिक नमस्ते २६. विसर्जनम् (विकिर)।

विशेषः—सैनिकों को सर्वत्र आदेश देते समय दल नाम से सम्बोधित किया जायेगा।

खेल

१. नेता की तलाश २. सांप नेवला ३. मेंडक मच्छर ४. गोल-खो ५. शेर बकरी ६. नमस्ते ७. विष-अमृत ८. जल-थल ९. राम-रावण १०. रूमाल झपट ११. डंडा दोड़ १२. मैं शिवाजी।

द्वितीय श्रेणी

शारीरिक व्यायाम :—स्फूर्ति व्यायाम, दौड़,

आसन

पहली श्रेणी के आसनों का अभ्यास।

ध्यानात्मक आसन :—

१. सिद्धासन, २. पद्मासन, ३. स्वस्तिक आसन, ४. सुख आसन, ५. गो-मुखासन ६. वज्रासन, (किसी भी ध्यान के आसन में आध घण्टे तक बैठने का अभ्यास) ७. उत्तानपादासन, ८. पवनमुक्तासन ९. नौकासन १०. सेतुबन्धासन ११. लेटकर चक्रासन १२. आकर्ण-धनुरासन १३. पादाङ्गुष्ठासन १४. उष्ट्रासन १५. उत्कटासन १६. गरूड़ासन १७. बजरंग आसन १८. वृक्षासन १९. हस्तपादाङ्गु-ष्टासन २०. त्रिकोणासन।

प्राणायाम

१. सूर्य भेदी २. उज्जायी ३. शीतकारी ४. शीतली ५. भ्रस्त्रिका ६. भ्रामरी।

दण्ड-बैठक

दण्ड	बैठक
९. वृश्चिक दण्ड—२	९. घुटना मरोड़ (चार की संख्या में होगी)

१०. चक्रदण्ड—१
११. चक्रदण्ड—२
१२. मिश्रदण्ड

१०. चल बैठक
(चार की संख्यामें होगी)

लाठी

११. बाना
१२. वाना छलांग
१३. इकहरी बेल
१४. रणमार—३
१५. रणमार चौमुखी चलकर
१६. रणमार चौमुखी छलांग
१७. रणमार चौमुखी छलांग बैठकर
१८. कुक्षीमार चौमुखी छलांग
१९. जनेऊमार—२
(आगे मार-पीछे रोक)
२०. जनेऊमार—३
(दो आगे-दो पीछे जनेऊ)
२१. जनेऊमार छलांग
२२. जनेऊमार चौमुखी छलांग
२३. चमक चाल

लड़न्त

५. एक साथ चार हाथ मारना (दो कनपटी, हूल, शिर)
६. सिर, कान, कमर, पैर दोनों और पवित्रा चलकर सोलहां की गिनती में
७. ठुड्डीमार (दाहिने ओर से ठुड्डी, बांयी ओर से ठुड्डी, शिर)
८. बैठकमार (बैठकर पैर, खड़े होकर शिर पर मारना)
९. जनेऊमार (सीधा व उल्टा जनेऊ, हूल ओर शिर)

छुरी

७. टार्चग्रिप
११. साईड ग्रिप (पसलियों व ग्रीवा, पार्श्वभाग से प्रहार करना)

८. सामने पेट में वार करना   १२. वार मारना व इन सबका बचाव

९. हैमर ग्रिप

१०. शिर पर मारना

मलखम्भ

१. सलामी
२. सादा उड़ी की पकड़
३. बगल की पकड़
४. दो हत्थी की पकड़
५. दसरंग (उपरोक्त पकड़ों से ऊपर चढ़ना)
६. बगली की पकड़
७. सुई डोरा
८. बन्दर उड़ी
९. घोड़ा उड़ी
१०. एक हत्थी की पकड़

आसन

१. मच्छ आसन
२. पद्मासन
३. नमस्ते
४. सीढ़ी
५. चक्रासन
६. बजरंग आसन

लेजियम

लेजियम स्कन्ध

सावधान   विश्रमः

१. चार हाथ
२. एक जगह
३. दो दिक्
४. अड़ी लगाना
५. गज चाल
६. गज चाल से चलते हुए चक्र बनाना। गुण भाग एवम् सुदर्शन चक्र बनाना।

२७. संचलन (मार्चिंग) २८. त्रिषुवामतः क्षिप्रम् चल २९. दक्ष चक्रम् ३०. वाम चक्रम् ३१. पादताल ३२. पादपरिवर्तनम् ३३. दक्षतो नमस्ते, दक्ष दृग, पुरो दृग ३४. पंक्तिम-तनु, पंक्तिम् संकुच ३५. चलते समय एक से दो या अधिक पंक्ति बनवाना तथा कई पंक्तियों से एक पंक्ति बनवाना ३६. प्रहरीकर्तव्य ३७. लाठी, सीटी व हाथ के संकेत ।

प्राथमिक चिकित्सा

१. प्रथम सहायतता की रुपरेखा एवं आवश्यक नियम ।

२. विभिन्न प्रकार की गांठे तथा उनका उपयोग ।

३. पट्टी ।

१—तिकौनी पट्टी-कलाई, खोपड़ी, छाती, कन्धा, कुहनी, हाथ, कमर, कूल्हा, घुटना एवं पैर की तिकोनी पट्टी । पट्टी की माप एवं उपयोगिता ।

गोल पट्टी

साधारण पेचदार पट्टी लें, उल्टे पेचदार पट्टी, स्फाइका पट्टी

४. रक्तस्राव एवं उसका रोकना ।

५. जलने तथा पानी से झुलसने के साथ घाव ओर उसकी चिकित्सा ।

६. अग्नि तथा डूबने से बचाव ।

७. हड्डियों तथा जोड़ों की चोटें तथा उनका उपचार ।

८. विष और उसकी चिकित्सा ।

९. धक्का लगना । कृत्रिम श्वास ।

१०. घायल व्यक्तियों को पहुंचाना ।

खेल

१३. जादु की कुर्सी १४. घोड़ा कबड्डी १५. शक्ति परिचय १६. घोड़ा लड़ाई १७. स्कन्ध युद्ध १८. लाठी जिसकी भैंस उसी की १६. आर्य दस्यु २०. पताका २१. ध्वज रक्षा २२. जंजीर २३. भस्म २४. पदम् २५. कबड्डी २६. हनुमान युद्ध २७. मौत का कुआं २८. वैदिक धर्म की जय २६. चल भैया सब अच्छा

तृतीय श्रेणी

आसन

१. प्रथम दोनों श्रेणियों के पाठ्यक्रम को दुहराना

२. शुद्धि क्रियायें

३. नेति, सूत्रनेति, जलनेति, वोमन धोति, नौलि क्रिया, शंख प्रक्षालन।

लाठी

२४. छूट खेलना

२५. हल्ला फोड़

२६. बन्दिश

परशु

परशु स्कन्ध

सावधान विश्राम

१. सलामी

(वाहू, पलट, कटि २ धसर, वाहुछाट, उड्डान, शिर जैसे थे)

२. हाथ पहला (पूर्ववत करके वाहु छाट उड्डान, पौन चक्कर शिर चारों दिशाओं में इसी प्रकार वार करना।

३. हाथ दूसरा (हूल, पीछे पलट कर घुटन, बाहु पलट, कटि २ घसर वाहुछाट, उड्डान, दूसरी उड्डान में पौन चक्कर चारो दिशाओं में वार करना।

४. हाथ तीसरा (हूल, सामने घुटन, पलट, कटि शेष पूर्ववत् करना)

युयुत्सु

हाथ छुड़ाने के तीन प्रकार। पीछे से ग्रीवा छुड़ाने के तीन भेद।
ग्रीवा छुड़ाने के तीन प्रकार। सामने से कमर छुड़ाना।
पार्श्व से ग्रीवा छुड़ाना। पीछे से कमर छुड़ाना।
विभिन्न स्थानों पर प्रहार करना व उनका बचाव।

स्तूप

१ वृक्षासन	२ आरोहण-१	३ देवदार
४ तारजाल	५. शिखर	६ मंजिलें गिराना
७ हाथों पर उठाना	८ स्कन्ध समतोल	९ पैरों पर लटकना
१० यान	११ चक्रासन	१२ ऊंट
१३ सुदर्शन चक्र	१४ जहाज	१५ रेल
१६ पैरों पर चक्रासन	१७ चक्रासन पर शीर्षासन	१८ तीपाई पर शीर्षासन
१९ तम्बू	२० कुतुव मीनार	

तलवार

१. वाम स्कन्ध छेद क्रमशः
२. ,, ,, सिर रोक।
३. ,, ,, ,, दो दिक
४. ,, ,, ,, चौमुख
५. ,, ,, ,, पौन चक्र

६. वाछिन्धका वाम स्कन्ध छेद दो दिक ।

७. ,, ,, ,, सिर रोक दो दिक

८. ,, ,, ,, चौमुख

९. भेद (दो दिक् चौमुख)

१०. अमर बेल (छः गिनती में) चौमुख चौक

११. भेद वाम स्कन्ध छेद (चौमुख)

१२. भेद लोप चतुष्क ।

१३. नमस्ते ।

१४. लड़न्त पवित्रा चलकर वायें दाहिने प्रहार वायां चीर दाहिना चीर हूल शिर के वाद मारना और उनकी रोक ।

भाला

१. स्कन्ध शूल

२. अधः शूल

३. भूमि शूल

४. हस्त शूल

५. भेद सिद्ध (भाला सावधान)

भेद काम

१—भेद दौदिक् आगे पीछे अणी मारना

२—भेद त्रिमुख तीन दिशाओं में अणी मारना

३— ,, चौमुख

४— ,, पौन चक्र

भेद गोल

१—भेद गोल दो दिक्
२—भेद गोल त्रिमुख
(अणी और बट का प्रहार दोनों दिशाओं में मारना

३—भेद गोल चौमुख

४—भेद गोल पाव चक्र
५—भेद गोल पौन चक्र

गोल भेद

१—गोल भेद दो दिक्
२—गोल भेद चौमुख
३—गोल भेद चौक

(वट और अणी का प्रहार मारना

धनुष

खड़ी, बैठी तथा लेटी अवस्था से लक्ष भेद करना।

मौष्टिक युद्ध

१—मुष्टिका सावधान।
२—नृत्य।
३—चक्र।

वार—(क) सीधा वाम।
(ख) वाम मुक।
(ग) दक्षिण चीर।

सिद्धान्त—(क) प्रथम वार करना।
(ख) बलपूर्वक मारना।
(ग) लगातार प्रहार करना।

बौद्धिक-शिक्षण

१—आर्य युवक संगठन की आवश्यकता, महत्व, विधान, आदर्श तथा इतिहास।
२—अन्य संगठनों का तुलनात्मक परिचय।
३—आर्य ध्वज का निर्माण, उसका स्वरूप, महत्व, आरोहण, अवतरण आदि विधियों का ज्ञान तथा ध्वज-क्षेत्र का निर्माण।

४—आर्य धर्म और आर्य संस्कृति का विशुद्ध स्वरूप।

५—आर्यावर्त देश तथा आर्य जाति का प्राचीन व अर्वाचीन गौरव।

६—आर्य जाति के उत्थान-पतन के कारण।

७—आर्य राजनीति।

८--आर्य राष्ट्र, भाषा, तथा राष्ट्रीय लिपि, देवनागरी का महत्व उसकी वैज्ञानिकता, तथा उसकी रक्षा, और उसके साधन।

९—ब्रह्मचर्य, सदाचार, संयम, शिष्टाचार, अनुशासन तथा दक्षता सम्पादन।

१०—जाति भेद निवारण तथा आर्य जाति का संगठन।

११—शुद्धि आन्दोलन का धार्मिक तथा राजनैतिक दृष्टिकोण।

१२—सामाजिक सुधार तथा नशा निवारण।

१३—क्षात्र धर्म।

१४—गो रक्षा का सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक महत्व तथा गोरक्षा के वैज्ञानिक साधन।

१५—भारत का स्वातंत्र्य आन्दोलन।

१६—विश्व की सांस्कृतिक तथा सामाजिक क्रांतियां।

१७—संघर्ष।

१८—संगठन का स्वरूप तथा प्रकार।

१९—आर्य जाति के उद्धारक।

२०—हिंसा अहिंसा।

२१—आदर्श आर्य वीर।

२२—व्याख्यान-कला।

सामान्य-ज्ञान

महर्षि दयानन्द सरस्वती

१—महर्षि दयानन्द का जन्म कहाँ और किस सन् में हुआ ?

२—उनके जन्म का नाम क्या था ?

३—वे कौन-सी घटनाएं थी। जिन्होंने उनके वैराग्य भाव को जागृत किया ?

४—ब्रह्मचर्य-दीक्षा के समय उनका क्या नाम रखा गया ?

५—उनकी सन्यास-दीक्षा के गुरु कौन थे ?

६—वे कितने वर्ष की अवस्था में घर से निकले। कितने वर्ष योगाभ्यास के लिये भ्रमण करते रहे ?

७—गुरु विरजानन्द के पास कितने वर्ष रहे ?

८—दक्षिणा के रूप में स्वामी दयानन्द, विरजानन्द जी के पास क्या लेकर गये थे। विरजानन्द जी ने दक्षिणा के रूप में किस चीज की मांग की।

९—उन्होंने कितने वर्ष तक प्रचार कार्य किया।

१०—उनके ब्रह्मचर्य जीवन के कोई तीन उदाहरण दो।

११—लार्ड नार्थ बुक के साथ देश की स्वाधीनता के विषय में क्या बातचीत हुई।

१२—स्वामी जी की क्षमा शीलता का कोई उदाहरण दीजिए।

१३—ठाकुर कर्णसिंह तथा रतीराम पहलवान के आक्रमण का कैसे सामना किया ।

१४—किन्हीं दो स्थानों का नाम लिखो जहां पर स्वामी जी के शास्त्रार्थ प्रसिद्ध हों ।

१५—जोधपुर के महाराजा के साथ वैश्या को देखकर स्वामी जी ने क्या उपदेश दिया था ।

१६—उनके प्रमुख चार ग्रन्थों के नाम बताईये ।

१७—राजस्थान के देसी रियासतों में उनके भ्रमण एवं प्रचार का क्या लक्ष्य था ।

१८—उनकी मृत्यु कैसे और कहां हुई ।

१९—उनकी मृत्यु के पीछे क्या षड्यन्त्र था ।

२०—मृत्यु के समय उनके अन्तिम शब्द क्या थे ?

आर्य समाज

—:प्रश्नोत्तरी:—

१—आर्य समाज के कितने नियम हैं ? उनमें कौन-सा नियम आपको प्रिय है ?

२—डी० ए० वी० आन्दोलन के संचालक कौन थे ?

३—आर्य समाज के इतिहास में निम्न स्थान क्यों प्रसिद्ध हैं ? टंकारा, मथुरा, हरिद्वार, बम्बई, लाहौर, अजमेर, करतारपुर, बनारस, हैदराबाद ।

४—आर्य समाज के किन्ही दो प्रसिद्ध दिवंगत नेताओं के नाम लिखिए ।

५—आपने आर्य युवक परिषद् से क्या सीखा ?

६—सत्यार्थ प्रकाश में कुल कितने समुल्लास हैं ?

७—पंच महायज्ञ कौन से हैं ?

८—ओ३म् तीन अक्षरों के योग से बना है, कौन-कौन से ।

९—ज्ञान का आदि स्रोत क्या है ।

१०—सृष्टि के तीन मूल कारण क्या हैं ?

११—परमेश्वर का श्रेष्ठ सर्वोत्तम नाम क्या है ?

१२—वेद पौरुषम है या अपौरुषम तथा उनमें इतिहास है या नहीं ।

१३—चार वर्ण तथा चार आश्रम कौन से हैं ?

१४—स्वर्ग और नरक क्या है तथा कहां है ?

१५—तीर्थ किसे कहते हैं ?

१६—मुक्ति किसे कहते हैं ।

१७—आर्य शब्द का क्या अर्थ हैं ?

१८—क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है ?

१९—आर्य समाज कितने संस्कार मानता है । किन्हीं दो संस्कारों का नाम लिखिए ।

२०—सर्व प्रथम डी०ए०वी० कालेज की स्थापना कब, कहां और किसने की ?

२१—स्वामी श्रद्धानन्द ने किस शिक्षा पद्धति का संचालन किया ?

२२—महर्षि दयानन्द की अमर पुस्तक कौन सी है ?

२३—पं० गुरुदत्त विद्यार्थी नास्तिक से आस्तिक कैसे बने ?

२४—वेद का ज्ञान सर्वप्रथम किन महर्षियों के हृदय में प्रकट हुआ ?

२५—आर्य समाज किन ग्रन्थों को स्वतः प्रमाण मानता है ।

२६—ईश्वर एक है अथवा अनेक तथा वह अवतार धारण करता है या नहीं ?

२७—नारी जागरण का अग्रदूत बनकर कौन आया ?

२८—आर्य समाज तथा आर्य युवक परिषद् की स्थापना का क्या उद्देश्य है ?

२९—स्वामी दयानन्द की मृत्यु कैसे हुई ?

३०—आर्य समाज के किन्हीं दो प्रसिद्ध बलिदानियों शहीदों के नाम बताईये ।

३१—भगवान कृष्ण अथवा राम क्या परमात्मा के अवतार थे। आर्य समाज इनका क्या स्वरूप मानता है ।

३२—ऋषि दयानन्द के गुरु कौन थे ?

३३—आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी कौन हुए हैं ।

३४—ऋषि दयानन्द कृत हिन्दी की पांच पुस्तकों के नाम लिखें ।

३५—महर्षि दयानन्द ने कितनी बार विषपान किया ?

३६—आर्य समाज को देश की वर्तमान राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए अथवा नहीं ।

३७—आर्य समाज किस धर्म को मानता है ?

३८—आर्य समाज क्या एक समुदाय है ? नहीं तो क्यों ?

३९—सृष्टि कब से बनी ?

४०—मनुष्य योनि और पशु योनि में क्या भेद है ?

४१—संस्कृति और सभ्यता में क्या अन्तर है।

४२—हवन से क्या लाभ हैं ?

४३—आप श्राद्ध का क्या भाव समझते हैं।

४४—यज्ञोपवीत की तीन तारें क्यों होती हैं।

४५—यम पांच हैं ? नाम निदेश कीजिए।

४६—वैदिक धर्म की अन्य धर्मों से किसी एक विशेषता को वताईये ?

४७—यज्ञ में कितने प्रार्थना मन्त्र हैं।

४८—आर्य समाज की स्थापना कव, कहां और किसने की।

४९—एक आर्य को क्या-२ धारण करना चाहिये।

५०—शुद्धि किसे कहते हैं। भारत वर्ष में शुद्धि कार्य में स्वामी श्रद्धानन्द जी का क्या योगदान है।

५१—आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में क्या अन्तर है।

५२—शान्ति पाठ का उच्चारण कीजिए।

५३—गायत्री मन्त्र अर्थ सहित लिखिए।

५४—मनुष्य कौन है ? परिभाषा लिखिए।

५४—मानव जीवन का लक्ष्य क्या है ?

५६—वैदिक और साम्यवाद से क्या अभिप्राय है ? साम्यवाद तथा वैदिक समाजवाद में क्या अन्तर है।

५७—यज्ञ का क्या अर्थ है ? इस का वैज्ञानिक दृष्टि कोण क्या है ?

५८—शहीद राम प्रसाद विस्मिल को फाँसी क्यों दी गई थी ? उनके साथ शहीद होने वाले दूसरे क्रान्तिकारी कौन-२ थे।

५९—आर्य समाज जाति-पाति को जन्म से मानता है या कर्म से।

६०—दहेज-शराब-छूआछूत तथा अन्धविश्वास को समाप्त करने के लिए आप क्या उपाय सोचते हैं।

६१—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किसानों के विषय में क्या

लिखा है ?

६२—संघर्ष पहले या संगठन ?

६३—संध्या किसे कहते हैं ?

६४—संध्या से क्या लाभ होता है ?

६५—नमस्ते शब्द का क्या अर्थ है ?

६६—संध्या में कितने मन्त्र हैं ?

६७—संध्या कितने भागों में विभाजित है।

विशेष-द्रष्टव्य

१— शाखा, नगर, मण्डल, प्रान्त व केन्द्र के वही अधिकारी बन सकेंगे जो न्यूनतम दो श्रेणियां उत्तीर्ण करेगे।

२— प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण करने पर शाखानायक, द्वितीय श्रेणी उत्तीर्ण करने पर सह-शिक्षक व तृतीय श्रेणी उत्तीर्ण करने पर शिक्षक की उपाधी दी जायेगी।

३— प्रत्येक सैनिक को अपने उच्च अधिकारी का आदेश मान्य होगा व अनुशासन का पालन करना होगा।

ध्वज आरोहण विधि

१. ध्वजा-रोहण के पहिले झण्डे को तह बनाकर रस्सी से इस प्रकार बांध देना चाहिए ताकि खीचने पर तुरन्त खुल जाए तब रस्सी को ध्वज स्तम्भ से बांध देना चाहिए।

२. ध्वजारोहण के समय सब को सज्ज: (Attention) की अवस्था में खड़ा हो जाना चाहिए। इसके लिए समय पर शिक्षक आज्ञा देगा।

३. सबसे प्रथम आर्य वीर ईश प्रार्थना करेंगे। तदुपरान्त बौद्धिक नायक अध्यक्ष महोदय से ध्वज फहराने के लिए प्रार्थना करेगा

और ध्वज स्तम्भ के पास जाकर डोरी खोलेगा और अध्यक्ष के हाथ में डोरी पकड़ा देगा।

४. ध्वज फहराते ही बिगुल, बाजा इत्यादि बजेंगे।

५. शिक्षक तब आर्य वीरों को आराम की आज्ञा देगा, बौद्धिक नायक डोरी को ध्वज स्तम्भ से बांध देगा और अध्यक्ष को नमस्ते करके अपने स्थान पर खड़ा हो जायेगा।

६. इसके पश्चात् सज्जा की आज्ञा शिक्षक देगा और तब ध्वज-गान होगा।

७. अन्त में अध्यक्ष का भाषण होगा। भाषण के पश्चात् निम्न तीन जय घोष होंगे।

(अ) वैदिक धर्म की—जय हो।

(ब) आर्ययुवक परिषद्—अमर रहे।

(स) आर्य राष्ट्र—बनायेंगे।

८. वि-किर।

आर्य ध्वज का स्वरूप

१. भित्तिका (Surface) अरुण वर्ण की।

२. सूर्य मण्डल—मध्य में श्वेत वर्ण का।

३. ओंकार—सूर्य मण्डल के मध्य में श्वेत वर्ण में चिन्हित 'ओ३म्' का चिन्ह।

४, दो तलवारें एक दूसरी को काटती हुई !

५ लम्बाई चौड़ाई—ध्वज की लम्बाई। (पृथ्वी की समानान्तर बाजू) तथा चौड़ाई (ध्वज स्तम्भ के समानान्तर बाजू) का अनुपात ३ : २ होगा। अर्थात् यदि लम्बाई ६ फीट होगी तो चौड़ाई ४ फीट होगी।

६. ध्वज वस्त्र—ध्वज का कपड़ा शुद्ध स्वदेशी होगा।

७. ध्वज स्तम्भ—सफ़ेद रंग का होना चाहिए।

ध्वजावतरण-विधि

(१) सज्जा की अवस्था में ध्वज-गान होगा।

(२) ध्वज-गान के अन्त में तीनों जय घोष बोले जायेंगे।

(३) तदुपरान्त गायक द्वारा ध्वज उतारा जायगा। साथ बिगुल बजेगा।

नोट—(१) ध्वजारोहण और अवतरण के समय किसी व्यक्ति के नाम का नारा नहीं लगाना चाहिए।

(२) शिक्षक के "गायक" कहने पर गायक अपने स्थान पर आयेगा और सीटी का संकेत होने पर गान प्रारम्भ करेगा।

शिक्षक के गुण:—

१. स्वास्थ्य, सदाचार, नियंत्रण और आज्ञा देने का ढंग (Command) शिक्षक में उच्च कोटि का होना चाहिये।

२. अपनी विद्या का पूरा पंडित होना चाहिये।

३. शिक्षक को अपने शिष्यों में से प्रत्येक की पूरी जानकारी होनी चाहिये।

४. शिक्षक को अपने शिष्यों के साथ घनिष्ट सम्पर्क स्थापित करना चाहिये परन्तु उनके साथ हंसी, मजाक नहीं करना चाहिये, वरना वह नियंत्रण नहीं रख सकता।

५. शिक्षक को अपने वीरों के सुख-दुःख का पूरा ध्यान रखना चाहिये।

६. कार्य कराते समय शिक्षक को अनुशासन (Discipline) का पूरा

ध्यान रखना चाहिये और अनुशासन पालन कराने में उसे अति कठोर होना चाहिये।

७. कार्य समाप्त कराने के पश्चात् सैनिकों को किसी न किसी भांति हंसाने का गुण उसमें होना चाहिये।

८. जो कार्य कराना है उसका शिक्षक को पहले स्वयं उदाहरण देना चाहिये। कार्य को टुकड़े-टुकड़े करके पहले गिनती से करना चाहिये और अन्त में बिना गिनती।

९. कार्य का उदाहरण देते समय टोली को आराम में खड़ा कर देना चाहिये।

१०. कार्य कराते समय अशुद्ध कार्य करने वाले सैनिक को तुरन्त टोकना चाहिये।

११- किसी स्थान पर कार्य कराने से पूर्व उसे वहाँ की जलवायु स्थान कार्य करने वालों के स्वास्थ्य और आयु का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

१२- शिक्षक को सैनिकों के शारीरिक और आत्मिक उन्नति दोनों का बराबर ध्यान रखना चाहिए।

१३. शिक्षक को कार्य कराते समय या टोली को आज्ञा देते समय स्वयं सज्जा (attention) की अवस्था में रहना चाहिए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्‌की वेषभूषा तथा चिन्ह

सैनिक समानावेष—१. सफेद फ्लीट।
२. सफेद छोटे मोजे।
३. निकर सफेद।
४. काले रंग की चमड़े की फौजी पेटी।
५. लंगोट।

६. सफेद कमीज (फौजी)
७. टोपी केसरिया रंग की
८. गार्ड सीटी तथा लाल रंग की सूती डोरी।

व्यायाम-वेष—१. सफेद बनियान (सैंडो कट)
२. केसरिया कच्छा।
३. सफेद छोटे मोजे।
४. सफेद फ्लीट।

आर्य युवती परिषद्—१. जम्पर (सफेद, शोल्डर डब्बल जेब वाली)
२. शलवार या साड़ी (सफेद)।
३. चुंदरी (केसरिया)
४. काले रंग की चमड़े की पेटी।
५. छोटे सफेद मोजे।
६. सफेद फ्लीट।
७. गार्ड सिटी तथा लाल रंग की सूती डोरी।

अधिकारी वर्ग—१. बुश-शर्ट सफेद
२. टोपी केसरिया रंग
३. पैन्ट सफेद
४. आधा मोजा सफेद
५. सफेद जूता
६. गार्ड सीटी तथा काले रंग की सूती डोरी
७. काले रंग का बेल्ट।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् शाखाओं के लिए कुछ साधारण नियम

१. शाखा प्रतिदिन नियत समय पर लगना अनिवार्य है। विशेषअवस्था में नगर नायक अथवा शाखा नायक इसमें परिवर्तन भी कर सकता है। परन्तु शाखा नायक को

इसकी सूचना अपने नगर नायक को अवश्य देनी होगी।

२. सैनिकों की सुविधानुसार प्रातः या सन्ध्या समय कम से कम एक घण्टे प्रति दिन कार्य होगा।

३. शाखा में नित्य ईश प्रार्थना, व्यायाम, आत्म-रक्षा तथा बौद्धिक शिक्षण और ध्वजगान होना अनिवार्य है। सैनिक शिक्षा तथा खेल सप्ताह में कम से कम दो दिन अवश्य होने चाहिए। खेल यदि समय आज्ञा दे तो नित्य भी कराये जा सकते हैं।

४. कार्य-स्थल पर पूर्ण सैनिक अनुशासन बर्ता जाना चाहिए।

५. शाखा के संवर्द्धन तथा परिवर्द्धन का उत्तरदायित्व शाखा नायक पर, शारीरिक शिक्षण का उत्तरदायित्व शिक्षक पर, बौद्धिक शिक्षण का उत्तरदायित्व बौद्धिक नायक पर, तथा सैनिकों को कार्य-स्थल पर ठीक समय उपस्थित करने तथा उनकी प्रत्येक गति विधि पर ध्यान रखने का उत्तरदायित्व वर्ग नायकों पर होगा।

६. नगर की समस्त शाखाओं का छोटे नगरों में सप्ताह में एक बार, तथा बड़े नगरो में मास में एक बार सामूहिक कार्य अवश्य होगा।

७. नगर की समस्त शाखायें तीन मास में एक बार भ्रमण के लिये नगर के बाहर अवश्य जायेंगी।

८. शाखा में ध्वज का फहराना अनिवार्य है।

९. शाखा नायक को अपनी शाखा का कार्य विवरण अपने नगर नायक को प्रति सप्ताह अवश्य देना होगा।

११. सप्ताह में एक दिन विशेषकर बौद्धिक शिक्षण-व्याख्यान, निबन्ध, कविता तथा गाने आदि कराये जाने चाहिए।

१२. शाखा के सैनिकों से उनकी आयु के अनुसार व्यायाम तथा अन्य कार्य कराने चाहियें।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद

चिन्ह

१—आर्यवीर
२—वर्ग नायक — १ फीता लाल (भुजा पर)
३—टोली नायक — बौद्धिक नायक तथा शिक्षक २ फीते लाल (भुजा पर)
४—शाखा नायक — ३ फीते लाल (भुजा पर)
५—नगर नायक (नगराध्यक्ष) — दोनों कन्धों पर पीतल के तीन 'ओ३माङ्कित सूर्य चक्र।
६—उपनगर नायक — दोनों कन्धों पर पीतल के दो 'ओ३मांकित सूर्य चक्र'।
७—नगर के अन्य अधिकारी-दोनों कन्धों पर एक-एक पीपल का 'ओ३मांकित सूर्य चक्र'।
८—ग्राम नायक — दोनों बाहों पर तीन-तीन लाल फीते तथा उनके ऊपर सूर्य चक्र।
९—मण्डलपति (मण्डलाध्यक्ष) — दोनों कन्धों पर एक-एक 'ओ३म्ाङ्कित सूर्य-चक्र तथा एक-एक फीता लाल'
१०—उप मण्डलपति — दोनों कन्धों पर 'ओ३म्ाङ्कित सूर्य चक्र'।
११—मण्डल के अन्य अधिकारी — दोनों कन्धों पर तीन-तीन लाल फींते।
१२—महामन्त्री (संचालक) दोनों कन्धों पर तीन 'ओ३म्ाङ्कित सूर्य चक्र'।

१३—उपमन्त्री (संचालक) दोनों कन्धों पर दो-दो 'ओ३म्।ङ्कित सूर्य चक्र'।

१४—प्रान्तीय शिक्षा, बौद्धिक अर्थाध्यक्ष, तथा कार्यालय मन्त्री। दोनों कन्धों पर पीतल का एक एक बिल्ला तथा तीन तीन लाल फीते।

१५—अध्यक्ष (प्रधान सेनापति) (क) दोनों कन्धों पर लाल मखमल पर रूपहरी सलमें से कढ़ी हुई दो तलवारें एक दूसरे को काटती हुईं। और उनके ऊपर सूर्य मंडल में ओङ्कार (ओ३म्) होगा।

(ख) बाकी जेब पर लाल मखमल का गोल बिल्ला होगा—जिसमें सूर्य मण्डल के मध्य मण्डल में ओङ्कार ओ३म् होगा।
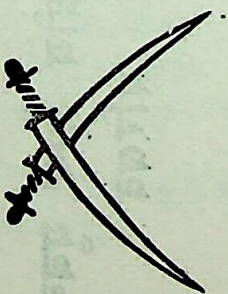
१८—उपाध्यक्ष स० प्र० संचालक दोनों कन्धों पर लाल मखमल पर रूपहली सलमे से कढ़ी हुई दो तलवार एक दूसरे को काटती हुई और उनके ऊपर सर्य मण्डल में (ओ३म्) होगा।

१७—विविध द्रष्टव्य आर्यवीर का बैज प्रत्येक को अन्य चिन्हों के साथ धारण करना होगा।

विशेष निमन्त्रित सज्जन

उच्च अधिकारी

\+ \+

दो पग

ध्वजगायक बिगुलर

\+ \+

३ फीट

शाखा नायक

शिक्षक

दो पग वर्ग नायक

१० फीट

३ फीट २ पग

ध्वज रक्षक

दो पग दो पग

अन्य अधिकारी

\+ \+ \+ \+ सैनिक

नोट—ध्वज स्थान पर आर्यवीरों के खड़े होने का ढंग।

१—एक से अधिक शाखाओं के खड़े होने के लिए वर्गों के स्थान पर शाखायें खड़ी होंगी। शाखाओं के बीच में दो पग का अन्तर होगा।

२—समस्त शाखा नायक अन्य अधिकारियों की ओर खड़े होंगे और नगर के प्रमुख अधिकारी शाखा के वांई ओर खड़े होंगे, जिसका क्रम शिक्षक, बौद्धिक नायक तथा कोषाध्यक्ष होगा।

३—दर्शक गण शाखा के दायें, वाय तथा पीछे १० फीट की दूरी पर खड़े हो सकते हैं।

आज्ञायें Commonds

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी
१· वर्गः	वर्ग	Section or Squad
२. पंक्तिः	एक लाइन	Fall in
३. सज्जः	सावधान	Attention
४. विश्रम	विश्राम	Stand-at-ease
५. आरम	आराम	Stand-easy
६. दक्षतो मिल	दाहिने सज	Right-Dress
७. सम्मुखः	सामने देख	Eyes-Front
८. संख्या	गिनती कर	Number

९. मापतः दक्ष-मिल	माप से दाहिने सज	With interval Right-Dress
१०. दक्ष भ्रम[1]	दाहिने मुड़	Right-Turn
११. वाम भ्रम	बायें मुड़	Left-Turn
१२. पृष्ठं भ्रम	पीछे मुड़	About-Turn
१३. वामतः दक्षतः पृष्ठे पुरे यास्यसि	बांये, दाहिने चलेगा, पीछे लौटेगा, आगे बढ़ेगा	
१४. दक्ष चक्रम्	दाहिने घूम	Right·wheel
१५. वाम चक्रम्	बायें घूम	Left-Turn
१६. पादतालः	कदम ताल	Mark-Time
१७. क्षिप्रं चलः	तेज चल	Quick-March
१८. तिष्ठ	रुक जा	Halt
१९. शनैश्चल	धीरे चल	Slow-March
२०. धावन् चलः	दौड़ के चल	Double-March
२१. लम्बपादः	लम्बा कदम	Step-out
२२. लघुपादः	छोटा कदम	Step-shart
२३. पृष्ठे पादः	पीछे कदम	Places step Back-march
२४. अग्रे पादः	आगे कदम	Places Forward-march

[1]दक्षिण को सुविधा की दृष्टि से दक्ष बोला जायेगा।

२५ पादपरिवर्तनम्	पांव बदल	Change-step
२६. दक्षं युज	दाहिने मिल	Right-close
२७. वामं युज	बायें मिल	Left-close
२८. दक्षार्ध-भ्रम	आधा दाहिने मुड़	Right-Incline
२९. वामार्ध भ्रम	आधा बायें मुड़	Left-Incline
३०. नमस्ते	सामने सैल्यूट	Salute
३१. विकिर	विसर्जन	Disperse
३२. सम संख्या	सम संख्या	Even Numbers
३३. विषम सख्या	विषम संख्या	Odd-Numbers
३४. पूर्ववत्	जैसे थे	As you were
३५. पंक्ति तनु	खुली लाइन चल	Open-Ranks-march
३६. पंक्ति संकुच	निकट लाइन चल	Reform-Rank-march
३७. दक्ष दिक् परिवर्तनम्	दाहिनी दिशा बदल	Change direction right
३८. दक्ष पंक्तिः	दाहिनी लाइन	Right-Form
३९. वाम दिक् परिवर्तनम्	बांयी दिशा बदल	Change direction Left
४०. वाम पंक्तिः	बांयी लाइन	Left-Form
४१. अग्रे सर	आगे चल	Forward
४२. दक्षिणे एक पृष्ठ पंक्तौ	दाहिने को एक फाइल	Move to the right in Single

दक्ष भ्रम	दाहिने मुड़	File Right Turn
४३. वामत एक पृष्ठ पंक्तौ	बांये को एक फाइल	Move to the left in Single file.
वामं भ्रम	बाँये मुड़	Left-Turn
४४. दक्ष दिक् परिवर्तनम्	दाहिनी दिशा बदल	Change direction right
दक्ष चक्रम्	दाहिने घूम	Right-Wheel
४५. वाम दिक् परिवर्तनम्	बांयी दिशा बदल	Change direction left
वाम चक्रम्	बांये घूम	Left-Wheel
४६. पृष्ठगामी पंक्ति	पिछली लाइन	Rears, Files. Cover-up
सम्मिल	एक लाइन बन	
४७. दक्षिणत एक पंक्ति	दाहिने पर एक लाइन बनेगी	On the Right
दक्षपंक्ति	एक लाइन बन	Form-Squad
४८. वामत एक पंक्तिः वाम	बांये पर एक लाइन बनेगी	On the left
पंक्तिः	एक लाइन बन	Form-Squad
४९. स्थित्वा दक्षिणत एक पंक्तिः	रुककर दाहिने पर एक लाइन	At the halt, On the right
दक्ष पंक्तिः	बनेगी एक लाइन बन	Form-Squd
५०. स्थित्वा वामत एक पंक्तिः	रुककर बांये पर एक लाइन बनेगी	At the halt, On the left
वाम पंक्तिः	एक लाइन बन	Form-Squad
५१. सावधानम्	सावधान	Ready

५२. पृष्ठ पंक्ति	एक के पीछे एक लाइन बन	File
५३. दक्षत एक पृष्ठ पक्तौ चलनीयम् क्षिप्रंचल।	दाहिने से एक लाइन में आगे बढ़ना है तेज चल	Advance in Single from the Right. Quick-March
५४. दक्षतस्तनु	दाहिने से खुल जा	From the Right Open-Out
५५. दक्षतो युज	दाहिने मिल	Right-close
५६. पंक्तिद्वयम्	दो लाइन बन	Form Two-deep
५७. पंक्ति त्रयम्	तीन लाइन बन	Form Three-deep
५८. पंक्तिचतुष्ठयम्	चार लाइन बन	Form Four-deep
५९. अवकाशः	अवकाश, लाइन तोड़	Interval
६०. उत्तिष्ठ	खड़े हो	Stand-Up
६१. उप-विश	बैठ जा	Sit-down
६२. स्वंस्थानम्	स्व स्थान	Flag-place
६३. ध्वजस्थानम्	ध्वज स्थान	Cover-up
६४. सम्यक्	आगे पीछे हो	Cirble
६५. मण्डलम्	चक्र में	Semi-Circle
६६. अर्धमण्डलम्	आधा चक्र	
६७. प्रा-रभ	शुरू कर	Begin
६८. अवतानम्	औंधे लेटो ना	Pro-straight

६९. उत्-तानम्	पेट के बल लेट जा	Lie-On the back
७०. दक्ष-दृग्	दाहिने देख	Eyes-Right
७१. वाम-दृग्	बांये देख	Eyes-Left
७२. पुरो दृग्	सामने देख	Eyes-Front
७३. कोऽयम्	कौन	Who-comes-there
७४. प्रहरिणां परिवर्तनं	प्रहरी बदल	Guard-Turn out
७५. सन्नद्धः	तैयार हो	Preset yorself
७६. स्कन्धास्त्रम्	कन्धे शस्त्र	Slop Arms
७७. अधोऽस्त्रम्	नीचे शस्त्र	Order Arms
७८. उत्तोलास्त्रम्	बाजू शस्त्र	Trail Arms
७९. भूम्यस्त्रम्	भूमि शस्त्र	Ground Arms
८०. हस्तास्त्रम्	हाथ में शस्त्र	Take Up Arms
८१. अस्त्रं परिवर्तय	शस्त्र बदल	Change Arms (At short)
८२. हस्त परिवर्तनम्	हाथ बदल	Change Arms (At Trail)
८३. सज्जास्त्रम् प्रहरि परिवर्तनम	सावधान शस्त्र में प्रहरी बदल	Guard Turn out

८४. अस्त्र-संग्रह	शस्त्र संग्रह कर	Pic Arms
८५. अस्त्र-नमस्ते	सलामी शस्त्र	Present Arms
८६. त्रिषु वामतः क्षिप्रं चल	तीनों तीन में बायें चलेंगे तेज चल	In three's from the Left-Quick March
८७. दक्षतो नमस्ते दक्षदृग्	दाहिने सैल्यूट देगा दाहिने देख	Right Salute
८८. पुरो दृग्	सामने देख	Eyes Front

ओ३म्
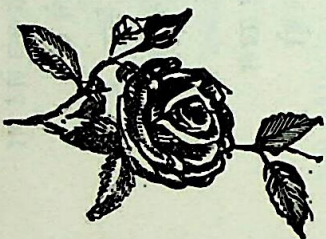
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश

कार्यालय :—आर्यसमाज मार्ग, कबीर बस्ती, दिल्ली-११०००७

क्षेत्र......................

क्रम सं०.........   प्रवेश सं०.........

सदस्यता-प्रवेशपत्र

अध्यक्ष महोदय,

मैं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के उद्देश्य, नियम एवम् कार्यक्रम से पूर्णतया सहमत हूं तथा इस कार्य में सहयोग देना चाहता हूं। अतः निवेदन है कि मेरी सदस्यता स्वीकार करें।

मेरा नाम.....................सुपुत्र श्री..............................

जन्म तिथि........... आयु ....शिक्षा...................

कार्य..........................तथा आर्यसमाज..........................

का सदस्य हूं। घर का पता..

..................................दूरभाष..............................

विद्यालय/कार्यालय का पूरा पता...................................

..................................दूरभाष.........................है।

वार्षिक शुल्क...............रुपये दूँगा। वर्ष १६.........१६.........

मैं परिषद् को प्रतिदिन.......घण्टे समय दिया करूंगा, मेरी रुचि के कार्य इस प्रकार हैं।............................

१.

२.

३.

दिनांक............ आवेदक के हस्ताक्षर............

अनुमोदन

मैं श्री..जी से व्यक्तिगत रूप से सुपरिचित हूं तथा विश्वास दिलाता हूं कि आप संगठन के अनुशासन में रहकर कार्य कर सकेंगे। मैं इनकी सदस्यता के लिए सिफारिश करता हूं।

हस्ताक्षर अनुमोदक......... प्रवेश सं..........

कार्यालय के लिए

रसीद स०............शुल्क............अध्यक्ष/महामंत्री............
दिनांक............कोषाध्यक्ष............स्वीकृति तिथि............

ओ३म्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

उद्देश्य

(क) युवक शक्ति को संगठित कर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक मान्यताओं के आधार पर आर्य राष्ट्र का निर्माण करना।

(ख) युवकों में ब्रह्मचर्य पालन, अनुशासन तथा आस्तिकता की भावना पैदा कर शारीरिक तथा मानसिक शक्ति का विकास कर आत्म रक्षा के लिए समर्थ करना।

उद्देश्य पूर्ति के प्रकार

१—आर्यसमाज व आर्य युवक संगठनों का सहयोग प्राप्त करना तथा उनको सहयोग करना।

२—युवकों में चारित्रिक तथा राष्ट्रीय विचारों का प्रचार करना।

३—वाद-विवाद व्याख्यान तथा निवन्ध लेखन द्वारा युवकों में तर्क एवं वाक् शक्ति को वढ़ाना तथा स्वाध्याय मन्दिरों की स्थापना करना।

४—ब्रह्मचर्य साधना के लिए कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना।

५—शारीरिक और आत्मिक उन्नति के लिए योगाश्रम, व्यायामशालायें, अखाड़े आदि खोलना तथा खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।

६—आत्मरक्षा के लिए राजकीय अथवा सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से शस्त्र-प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

७—युवकों को वर्णाश्रम की दीक्षा देकर व्यवसाय तथा जीवन-लक्ष्य सम्बन्धी तथा भौतिक विद्याओं विषयक् तकनीकी प्रशिक्षण देना तथा दिलवाना।

८—संस्कृत तथा आर्य भाषा का प्रयोग, प्रचार तथा प्रसार करना तथा करवाना।

९—वाल-विवाह, दहेज-प्रथा, छूत-छात, जाति-पाति, कामुकता-प्रधान सिनेमाओं, अश्लील साहित्य आदि सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयत्न करना।

१०—मादक द्रव्यो तथा अभक्ष्य पदार्थों के सेवन तथा अनावश्यक व्यय से बचाकर भोग-विलास के जीवन का तिरस्कार कर सादे जीवन की प्रवृति बढ़ाना।

११—सुयोग्य किन्तु साधनहीन आर्य छात्रों की सहायतार्थ ट्रस्ट बनाना।

१२—आर्य युवक साधनाआश्रम व गुरुकुल इत्यादि स्थापित करना।

१३—चल अचल सम्पत्ति प्राप्त करना।

१४—विचार प्रसारण हेतु पत्राचार पाठ्यक्रम, पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करना।

१५—विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने के लिए समिति, उपसमिति गठित करना।

१६—अराष्ट्रीय प्रवृतियों और विधर्मियों के षड़यन्त्र के विरुद्ध आर्यों को संगठित करना और शुद्धि आन्दोलन में सक्रिय सहयोग करना।

१७—जन्म के आधार पर सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक अधिकारों को समाप्त कर गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित अधिकारों को प्रश्रय देना।

१८—उद्देश्य पूर्ति हेतु न्यायोचित संघर्ष करना।

हस्ताक्षर.................

वीर भोग्या वसुन्धरा

ओ३म्

पं० गुरुदत्त-पुस्तक निधि में प्राप्त दान

१. २५१ रुपये, श्री ओमप्रकाश गुप्त एवं श्री ऋषि राम जी
शक्तिनगर, दिल्ली-७.

२. २५१ ,, महाशय धर्मपाल जी (महाशियां दी हट्टी,
कीर्ति नगर) नई दिल्ली-१५

३. २५० ,, श्री रोशनलाल, वीरेन्द्रकुमार (वी० आई० पी टैक्सटाइल्स) मार्केट नं० १, एन०आई०टी०
फरीदाबाद।

४. २५१ ,, आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिरमार्ग,
नई दिल्ली-१

५. १६० ,, आर्य युवक परिषद् गुरुतेग बहादुर नगर,
दिल्ली-६.

६. १०१ ,, श्री जगदीशलाल आर्य, नेताजी सुभाष शाखा,
रानीबाग, दिल्ली-३४

७. १०१ ,, ब्र० प्रदीपकुमार आर्य, बैरक नं० २८।एफ
औट्रम लाईन दिल्ली-९

८. १०० ,, श्रीमति लीलावती गुप्त, १३।६ शक्तिनगर,
दिल्ली-७.

९. १०१ ,, श्रीमति प्रतिभा सपड़ा, एन-२२, डा० मुखर्जी
नगर, दिल्ली-९

१०. १०१ ,, श्री प्रकाशचन्द आर्य, ४६३ सैक्टर-२२,
फरीदाबाद

११. १०१ ,, श्री सूर्यप्रकाश अग्रवाल, जे ए।७ ए अशोक

विहार-I, दिल्ली-५२

१२. १०१ रु० श्री देवभगत जी, डी-२६८ अशोक विहार-I, दिल्ली-५२

१३. १०० ,, श्रीमति वालमती जी, २-एफ कमला नगर ने अपनी पति स्व० श्री दीपचन्द आर्य की पुण्य स्मृति में दिए।

१४. १०० ,, श्री सुरेश आर्य व अविनाश आर्य १०८१५ प्रताप नगर, दिल्ली-७

१५. १०१ ,, श्री राजेश्वर दयाल जी रस्तोगी, अलंकार वूल स्टोर, घण्टाघर, दिल्ली-७

१६. १०१ ,, श्री विशम्भरनाथ भाटिया, एच-१४ कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

१७. १०१ ,, श्री अशोक कुमार मल्होत्रा, टी-१६६७ मल्कागंज रोड, दिल्ली-७

१८. १०१ ,, आर्यसमाज अशोक विहार-I, दिल्ली-५२

१९. १०१ ,, श्री चन्द्रमोहन कोहली, मैट्रो रैस्टोरेण्ट मेनबाजार सब्जीमण्डी, दिल्ली-७

२०. १०१ ,, चौ० जवाहर सिंह जी, ५८२५ चन्द्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२१. १०१ ,, गुप्ता बैक लाईट फैक्टरी, २२० पुरानी सब्जी-मण्डी, दिल्ली-७

२२. १०१ ,, ला० रामकला, टी-१६६७ गली वशेसर नाथ, सब्जीमण्डी, दिल्ली-७

२३. १०१ ,, श्री प्रकाशचंद आर्य, डी-१३६० जहांगीर पुरी दिल्ली-३३

२४. १०१ रु० श्री जीतेन्द्रकुमार आर्य व अजयकुमार आर्य

गांधीनगर, दिल्ली-३१

२५. १०१ ,, श्री भीमसेन चौधरी, ५०० कूचापातीराम
सीताराम बाजार, दिल्ली-६

२६. १०१ ,, श्री विद्याप्रकाश सेठी, श्री हरीराम आजाद
सेठी बिल्डिंग, कृष्णनगर, दिल्ली-५१

२७. ५१ ,, श्रीमति चित्रा चौधरी, सी-३४ न्यू फ्रैन्डस
कालोनी, दिल्ली-३४

२८. ५१ ,, श्री विरेश बंसल, फिल्मी बुक डिपो
८७९२, पुलबंगश, दिल्ली-६

२९. ५१ ,, श्री रामलाल मलिक, रामजस रोड,
करोलबाग, नई दिल्ली-५

३०. ५१ ,, श्री भारतभूषण सुपुत्र श्री हीरालाल आर्य
मकान नं० ४०/८ शिवाजी कालोनी, रोहतक

युवकों के लिए प्रेरणास्रोत

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

मुलतान निवासी छात्र गुरुदत्त ने पंजाब विश्वविद्यालय में विज्ञान विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये थे। आर्य समाज के सम्पर्क में आया। गवर्नमेंट कालेज में विज्ञान का सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुआ। नास्तिकता के विचारों का प्राधान्य था। महर्षि दयानन्द के रुग्ण होने का समाचार सुन अजमेर गया। एकटक हो इस महापुरुष की अन्तिम घड़ी का निरीक्षण करता रहा। योगीराज की एकनिष्ठ ईश्वरार्पण भावना को देख नास्तिक युवक प्रभावित हुआ। अटल ईश्वर विश्वासी बनकर लाहौर आया। आते ही डी० ए० वी० कालेज के लिए धन संग्रह किया। मुनिवर ने वैदिक शब्दों की व्याख्या पर एक कोष तैयार किया जो आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में रखा गया। १४ बार सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय किया। स्वामी अच्युतानन्द अपने शिष्य की प्रतिभा से प्रभावित हो उसके ही शिष्य बन गये थे।

प्रचार-यात्राएं करते रहे और क्षय रोग के शिकार हो गये। २६ वर्ष की अल्पायु में ही १६ मार्च १८८६ को आर्य समाज का यह देदीप्यमान नक्षत्र अस्त हो गया।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी कहा करते थे यदि सत्यार्थ-प्रकाश की एक प्रति का मूल्य १००० रु० होता तो भी सारी सम्पति बेचकर उसे खरीदता।

ओ३म्

सामान्य ज्ञान

महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रश्नों के उत्तर

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात में मौरवी राज्य के अन्तर्गत टंकारा ग्राम में १२ फरवरी सन् १८२५ में हुआ था।

२. उनके जन्म का नाम मूलशंकर था। उन्हें मूल जी और दयाल जी के नाम से भी पुकारते थे।

३. उनके वैराग्य भाव को जगाने वाली तीन घटनाएं प्रमुख थी—

(क) शिव की पण्डी पर चूहों का चढ़ना, इस घटना से उन्हें मूर्ति-पूजा से घृणा हो गई और सच्चे शिव को पाने की इच्छा जाग्रत् हुई।

(ख) बहन की मृत्यु (ग) चाचा की मृत्यु—इन दो घटनाओं से उन्हें आजीवन ब्रह्मचारी रहकर मृत्युञ्जय बनने की प्रेरणा मिली।

४. ब्रह्मचर्य दीक्षा के समय उनका नाम शुद्ध चैतन्य रखा गया था।

५. उनको संन्यास दीक्षा के गुरु स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती थे।

६. वे इक्कीस वर्ष की अवस्था में घर से निकले और पन्द्रह वर्ष तक योगाभ्यास के लिए भ्रमण करते रहे।

७. गुरु विरजानन्द दण्डी के पास वे ढाई वर्ष रहे और उनसे अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का अध्ययन किया।

८. स्वामी दयानन्द जी गुरु दक्षिणा के रूप में लौंग लेकर गये थे परन्तु विरजानन्द जी ने लौंगे स्वीकार न करके उनसे उनका जीवन मांगा था।

९. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लगभग बीस वर्ष तक प्रचार कार्य किया।

१०. उनके ब्रह्मचर्य जीवन के तीन उदाहरण निम्न हैं—

(क) दो घोड़ों की बग्घी को रोक देना।

(ख) हलाहल विषपान करके मौत को भी ठोकर लगा देना।

(ग) भारी बोझ से लदे हुए छकड़े को, जिसे दो बैल नहीं निकाल पा रहे थे, दलदल से बाहर निकाल देना।

११. लार्ड नार्थ ब्रुक ने स्वामी जी से पूछा था—"हमारे राज्य में आपको धर्म प्रचार में कोई बाधा तो नहीं है? आपके जीवन को कोई भय या संकट तो नहीं है?"

स्वामी जी ने उत्तर दिया—"आपके राज्य में न तो मुझे धर्म-प्रचार में कोई बाधा है और न ही किसी का कोई भय है।"

यह सुनकर नार्थब्रुक ने कहा—"तब आप अपनी प्रार्थना में परमेश्वर से यह भी प्रार्थना कर दिया करें कि अंग्रेजों का राज्य भारत पर सदा बना रहे।"

यह सुनकर स्वामी जी ने उत्तर दिया—"इस विषय में मेरे विचार बिलकुल भिन्न हैं। मैं तो प्रतिदिन यह प्रार्थना करता हूं—कि अंग्रेजी राज्य भारत से शीघ्र समाप्त हो और अंग्रेज अपना बिस्तर गोलकर इंगलैण्ड चले जाएं।

१२. स्वामी जी ने अपने विष देने वाले जगन्नाथ को ५०० रु० की थैली देकर उसे नेपाल भाग जाने का आदेश दिया। इससे श्रेष्ठ क्षमा उदाहरण मिलना कठिन है।

१३. स्वामी जी ने राव कर्ण सिंह की तलवार उसके हाथ से छीन ली और उसके दो टुकड़े कर दिये।

१४. वाराणसी और बरेली

१५. स्वामी जी ने कहा था—"राजा—सिंह होता है और वेश्या कुतिया। राजा को कुतिया का संग करना शोभा नहीं देता।"

१६. सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय

१७. सभी राजाओं को संघठित करके भारत को स्वतन्त्र और स्वाधीन कराना।

१८. उनकी मृत्यु जगन्नाथ रसोइया के द्वारा उनको दूध में कालकूट विष मिलाकर देने से हुई। विष उन्हें जोधपुर में दिया गया। यहां से चिकित्सा के लिए उन्हें आबू ले गये, वहां से अजमेर लाया गया। अजमेर में ही स्वामी जी की मृत्यु हुई।

१९. उनकी मृत्यु के पीछे अंग्रेजों का हाथ था। अंग्रेज उन्हें बागी फकीर समझते थे।

२०. मृत्यु के समय उनके अन्तिम शब्द थे—"हे ईश्वर तूने अच्छी लीला की तेरी इच्छा पूर्ण हो।"

आर्यसमाज

प्रश्नों के उत्तर

१. आर्यसमाज के नियम दस हैं। सारे ही नियम अति श्रेष्ठ है। मुझे तीसरा नियम सबसे अधिक प्रिय है।

तीसरा नियम है—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

यह नियम आर्यसमाज को सारे मत-मतान्तरों और पन्थों से पृथक् करता है। वेद आर्यसमाज का मूलाधार है। वेद आर्यसमाज की विशेषता है। वेद नहीं तो आर्यसमाज नहीं।

२. महात्मा हंसराज जी

३. टंकारा—महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म भूमि है।

मथुरा—गुरूवर विरजानन्द की पाठशाला और महर्षि दयानन्द सरस्वती की विद्यास्थली।

हरिद्वार—यहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराई थी।

बम्बई—सर्वप्रथम आर्यसमाज यहां ही स्थापित की गई थी। वस्तुतः इससे पूर्व राजकोट में २. १. १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना हुई थी परन्तु कुछ दिन चलने के पश्चात् बन्द हो गई थी।

लाहौर—आर्यसमाज के वर्तमान दस नियमों का निर्माण यहां ही किया गया था। व प्रथम डी० ए० वी० कालेज की स्थापना यहीं हुई थी।

अजमेर—महर्षि दयानन्द का निधन यहीं हुआ था, महर्षि द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा का कार्यालय भी यहीं है।

क़र्तारपुर—महर्षिदयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी की जन्मभूमि है।

बनारस—यहां ऋषि दयानन्द का २७ पण्डितों के साथ शास्त्रार्थ हुआ था जिस में महर्षि दयानन्द की अभूतपूर्व विजय हुई थी।

हैदराबाद—आर्यों ने निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह करके विजय प्राप्त की थी।

४. श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा और लाला लाजपत राय।

५. प्रतिदिन सन्ध्या, स्वाध्याय और व्यायाम करना तथा अनुशासन।

६. चौदह समुल्लास हैं और अन्त में स्वमन्त व्यामन्तव्य है।

७. पञ्च महायज्ञ निम्न हैं—

१. ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या और वेदाध्ययन), २. देवयज्ञ अग्निहोत्र, ३. पितृ यज्ञ, ४. अतिथि यज्ञ ५. वलि वैश्व देव यज्ञ।

८. ओ३म् शब्द अ+उ+म्—इन तीन अक्षरों के योग से बना है।

९. ऋग्यजुसाम और अथर्व—ये चारों वेद ज्ञान के आदि स्रोत हैं।

१०. सत्त्व, रज और तम—ये तीन सृष्टि के मूल कारण हैं।

११. परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम नाम 'ओ३म्' है।

१२. वेद अपौरूषेय है (परमात्मा प्रदत्त ज्ञान है ये मनुष्यों के द्वारा नहीं वनाये गये।) वेद का ज्ञान परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में दिया था, अतः वेद में इतिहास नहीं है।

१३. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—ये चार वर्ण है तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास—ये चार आश्रम हैं।

१४. सुखविशेष और उसकी सामग्री का प्राप्त होना स्वर्ग है। दुःख विशेष और उसकी सामग्री का प्राप्त होना नरक है। स्वर्ग और नरक आकाश में नहीं हैं। यहीं पृथिवी पर हैं। उत्तम गृहस्थ का नाम स्वर्ग है और विगड़े हुए गृहस्थ का नाम नरक है।

१५. जिनके द्वारा मनुष्य तर जाए उन्हें तीर्थ कहते हैं। माता-पिता, आचार्य, अतिथि, सत्संङ्ग, ब्रह्मचर्य, सत्य, अहिंसा, सर्वभूत दया, क्षमा, जितेन्द्रियता, यज्ञ आदि का नाम तीर्थ है। नौका आदि भी तीर्थ हैं क्योंकि इनके द्वारा नदियों को पार करते हैं। जलवाले स्थल हरिद्वार आदि का नाम तीर्थ नहीं है।

१६. संसार के वन्धनों से छूटने का नाम मुक्ति या मोक्ष है।

१७. आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ मनुष्य। जो शान्त, मन को वश में रखने वाला, सहनशील, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, दानशील, दयालु और नम्र होता है, उसे आर्य कहते हैं।

१८. ज्योतिष दो प्रकार का होता है—गणित और फलित इनमें गणितशास्त्र सत्य है और फलित ज्योतिष झूठा और पाखण्ड है।

१९ आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने १६ संस्कार लिखे हैं। सभी महत्त्वपूर्ण हैं। दो संस्कार निम्न है—

(१) नामकरण संस्कार

(२) उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार

२०. ८ जून १८८६ को लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालिज की स्थापना की गई। तपोमूर्ति महात्मा हंसराज ने सर्वप्रथम इसके लिए अपना जीवन और जवानी होम दी।

२१. स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति का संचालन किया।

२२. सत्यार्थ प्रकाश

२३. गुरुदत्त विद्यार्थी महर्षि दयानन्द के जीवन के अन्तिम दृश्य को देखकर आस्तिक बना। उन्होंने देखा जिस व्यक्ति के रोम-रोम पर फफले हो रहे हैं, मर्मान्तिक वेदना है परन्तु मुखमण्डल पर दिव्य आभा, तेज और मुस्कराहट है, इसका कारण क्या हो सकता है। मृत्यु से इन्हें भय नहीं, मृत्यु का आलिंगन करने के लिए ऐसे तैयार हैं जैसे प्रभु से मिलने जा रहे हों—इस दृश्य को देखकर नास्तिक गुरुदत्त परम आस्तिक बन गये।

२४. वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में चार ऋषियों को मिला था जिनके नाम है—१. अग्नि २. वायु ३. आदित्य और ४. अङ्गिरा।

२५. आर्यसमाज चार वेद संहिताओं (ऋग्यजु साम और अथर्व) को स्वतः प्रमाण मानता है।

२६. ईश्वर एक है, अनेक ईश्वर नहीं है। हां, एक ही ईश्वर के नाम अनेक हैं। ईश्वर अवतार नहीं लेता।

२७. महर्षि दयानन्द सरस्वती

२८. आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने वेद और योग के प्रचार तथा प्रसार के लिए की थी। इस बात का उल्लेख आर्य समाज के नियमों में है। आर्यसमाज का तीसरा नियम है—"वेद

सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है।"

छठा नियम है—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्योद्देश्य है—अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्ययुवक परिषद् का उद्देश्य है—नई पीढ़ी को आकर्षित करके आर्यसमाज की ओर लाना।

२९. महर्षि दयानन्द की मृत्यु उनकेपाचक जगन्नाथ द्वारा उनको दूध में कालकूट विष मिलाकर पिलाने से हुई थी।

३०. आर्यसमाज ने धर्मरक्षा के लिए अनेक पुरुषों का बलिदान दिया है, दो नाम निम्न हैं—

(१) अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी

(२) आर्य पथिक पं० लेखराम जी

३१. मर्यादापुरुषोत्तम राम तथा योगिराज कृष्ण परमात्मा के अवतार नहीं थे। परमात्मा सर्वव्यापक है फिर उसका अवतरण कैसा? कहीं ऊपर चढ़ा हुआ होता तो उतरता। श्रीराम, कृष्ण आदि महापुरुष थे, महामानव थे। आर्यसमाज उन्हें इसी रूप में मानता है।

३२. महर्षिदयानन्द के योग के गुरु थे—ज्वालानन्द गिरी और शिवानन्द पुरी और विद्या के गुरु थे स्वामी विरजानन्द दण्डी।

३३. आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथियों की नामावली वहुत लम्बी है। यहां कुछ नामों का निर्देश किया जाता है—महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्य पथिक पं० लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं० गणपति जी शर्मा, पं० मुरारी लाल जी, पं० मनसाराम जी वैदिक तोप, पं० बुद्ध देव जी मीरपुरी, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० शान्ति प्रकाश जी, पं० रामचन्द्र जी देहलवी, श्री अमर स्वामी जी महाराज, पं० राम दयालु जी, पं० विहारी लालजी शास्त्री आदि

३४. १. सत्यार्थप्रकाश २. संस्कार विधि ३. गोकरुणा-निधि ४. व्यवहार भानु ५. आर्योद्देश्य रत्न माला।

३५. महर्षि दयानन्द ने १७ वार विषपान किया। (इस विषपान में तलवार से आक्रमण, पानी में डुवोने के प्रयत्न आदि भी सम्मलित हैं)

३६. आर्यसमाज को देश की वर्तमान राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए परन्तु भाग लेने से पूर्व व्यक्तियों का निर्माण करना चाहिए जो सदाचारी, चरित्रवान् धर्मनिष्ठ हों जिन्हें किसी भी मूल्य पर खरीदा न जा सके।

३७. आर्यसमाज वेद को मानता है। वेद में जो कुछ प्रतिपादन किया गया है, वह धर्म है जो वेद विरुद्ध है, वह अधर्म है।

३८. आर्यसमाज दो शब्दों के मेल से वना है—आर्य+समाज। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ और समाज का अर्थ है समूह, संगठन। श्रेष्ठ मनुष्यों के समूह अथवा समुदायको आर्यसमाज कहते हैं।

३९. सृष्टि को वने हुए (संवत् १९३९ में) १९६०८५३०८२ होते हैं।

४०. मनुष्य और पशुओं में आत्मा तो एक-सा ही है अन्तर यह है कि मनुष्य योनि उभय योनि है (कर्म और भाग) है। इस योनि में मनुष्य पिछले जन्म में किये हुए कर्मों का भोग भी भोगता है और नये कर्म भी करता है। पशु योनि केवल भोग योनि है। मोक्ष की प्राप्ति केवल मानव योनि में ही हो सकती है, अन्य किसी योनि में नहीं।

४१. संस्कृति आन्तरिक वस्तु है और सभ्यता वाह्य। एक सूटिड-बूटिड मनुष्य सभ्य हो सकता है परन्तु वह संस्कृत भी हो यह आवश्यक नहीं है।

४२. हवन के लाभ निम्न है।

(क) वेद की रक्षा होती है।

(ख) परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

(ग) वायु शुद्ध होती है उससे उत्तम वृष्टि होती है।

(घ) अनेक प्रकार के रोगों कानाश होता है।

(च) अति वृष्टि और अनावृष्टि को रोका जा सकता है।

४३. श्रद्धा का अर्थ—श्रत्+धा=सत्य में धारणा। जो वस्तु जैसी है, उसे वैसा ही मानना। मानव जीवन के उत्कर्ष के लिए श्रद्धा की महती आवश्यकता है।

४४. यज्ञोपवीत की तीन तारें हमें अनेक सन्देश देती हैं—

(१) देव ऋषि और पितृऋण से उऋण होओ।

(२) माता-पिता और आचार्य की सेवा करो।

(३) सत्त्व, रज और तम—तीन गुणों से ऊपर उठकर त्रिगुणातीत बनो।

(४) आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतक-तीन प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाने का प्रयत्न करो।

(५) ज्ञान, कर्म और उपासना को अपने जीवन का अङ्ग बनाओ।

(६) प्रातः, मध्याह्न और सायं के कर्तव्यों को निष्ठा पूर्वक करो।

४५. पांच यम निम्न हैं:—

(१) अहिंसा—मन, वचन, कर्म से किसी के प्रति वैर की भावना न रखना (२) सत्य, (३) अस्तेय—चोरी न करना (४) ब्रह्मचर्य का पालन करना (५) अपरिग्रह, अभिमान न करना और पदार्थों का बहुत संग्रह न करना।

४६. वैदिक धर्म एकेश्वरवाद का समर्थक है जब कि अन्य मत और पन्थ अनेक देवी, देवताओं, पीर, पैगम्बर और कहानियों में विश्वास करते हैं।

४७. यज्ञ में प्रार्थना मन्त्रों की संख्या ८ है।

४८. आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में चैत्र शुक्ल पञ्चमी (१० अप्रैल १८७५) में की थी।

४९. प्रत्येक आर्य को यज्ञोपवीत और चोटी धारण करनी चाहिए।

५०. जो वैदिकधर्म से भिन्न मत और पन्थावलम्बी हैं, उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित करने को शुद्धि कहते हैं।

श्रद्धानन्द जी ने लाखों मलकानों की शुद्धि की। उनके शुद्धि कार्य को देखकर मुसलमान बौखला उठे और एक धर्मान्ध मुसलमान ने उन्हें गोली मार दी।

५१. सैद्धान्तिक रूप से दोनो में कोई अन्तर नहीं है। वैदिक धर्म के प्रचार के दृष्टिकोण से आर्य प्रतिनिधि सभा की मान्यता है कि वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार गुरुकुल प्रणाली से अधिक व्यापक रूप में हो सकता है जबकि आर्यप्रादेशिक सभा इसके लिए स्कूल कालिजों को अधिक उपयुक्त समझती है।

५२. द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति-रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेवः शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

५३. ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ हे सर्वरक्षक! हे सच्चिदानन्द स्वरूप पर-मात्मन्। हम संसार को उत्पन्न करने वाले प्रकाशकों के प्रकाशक आप वरण करने योग्य तेज स्वरूप को हृदय में धारण करते है। धारण किया हुआ वह तेज हमारी बुद्धियों को सुमार्ग में प्रेरित करे।

५४. मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं कि चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हो उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे

चक्रवर्ती, सनाथ, महा बलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रिया चरण सदा किया करें।

५५. मानव जीवन का लक्ष्य है—धर्मपूर्वक अर्थ=धन का उपार्जन करते हुए, इष्ट कामनाओं को भोगते हुए मोक्ष की प्राप्ति।

५६. वैदिक समाजवाद धर्म और परमेश्वर में विश्वास रखता है जब कि साम्यवाद में धर्म और ईश्वर का कोई स्थान नहीं है। साम्यवाद केवल मनुष्यों तक ही सीमित है जबकि वैदिक समाजवाद में बलि-वैश्वदेव यज्ञ के द्वारा कुत्ता, कौआ, कीट और पतंग को भी भोजन देने का निर्देश किया गया है। साम्यवाद 'खाओ, पिओ और मोज करो' के सिद्धान्त को मानता है। इस वाद में परलोक की सत्ता नहीं है। वैदिक समाजवाद त्यागपूर्वक उपभोग करने का उपदेश देता है और पुनर्जन्म में विश्वास करता है।

५७. यज्ञ शब्द यज् धातु से बनता है जिसका अर्थ है—देव पूजा, संगतिकरण और दान।

हवन में भी पदार्थों का संगतिकरण होता है। देव=जड़ और चेतन दोनों प्रकार के देवों की दान—आहुति दान से तृप्ति की जाती है।

यज्ञ में जो पदार्थ डाले जाते हैं वे नष्ट नहीं होते क्योंकि Matter is undustru ctable and uncreatable अग्नि में डाले हुए पदार्थ सहस्रों गुण सूक्ष्म हो जाते है। यज्ञ के द्वारा वायुप्रदूषण दूर होता है। उत्तम वृष्टि होती है, रोगों का नाश होता है।

५८. शहीद राम प्रसाद और उनके साथी भारत को स्वतन्त्र कराना चाहते थे। अपने संगठन के कार्यकलाप के लिए धन प्राप्यर्थ इन्होंने काकोरी में सरकारी कोष को जिस रेल द्वारा ले जाया जा रहा था लूटा। इसी अपराध में उन्हें पकड़ लिया गया और फांसी दी गई। शहीद अशफाकुल्ला को भी उनके साथ फांसी दी गई थी।

५९. आर्यसमाज जाति-पाति को जन्म से नहीं कर्म से, गुणकर्म और स्वभाव से मानता है। यदि ब्राह्मण के घर में उत्पन्न होकर कोई

मूर्ख है तो वह ब्राह्मण नहीं शूद्र है। इसी प्रकार शूद्र के घर में उत्पन्न होकर यदि कोई विद्वान बन जाए या शूरवीर हो जाए तो वह शूद्र न रह कर ब्राह्मण या क्षत्रिय की श्रेणी में आ जाएगा।

६०. दहेज, शराब और छूआछात को दूर करने के लिए इनके विरुद्ध लगंर लंगोटे व सकर खड़ा होना होगा। दहेज के लिए युवक आगे आएं और प्रतिज्ञा करें कि हम किसी भी प्रकार का दहेज नहीं लेंगे। युवतियां प्रतिज्ञा करें कि हम दहेज लेने वाले युवकों से विवाह नहीं करेंगी, चाहे जीवन भर कुंवारी भले ही रहें। शराब की दुकानों पर-पिकेटिंग होनी चाहिए साहित्य लिखकर लोगों में वितरित करना चाहिए। छूआछात को दूर करने के लिए लोगों को समझना चहिए कि अछूत तो सिंह, व्याघ्र, मधुमक्खी आदि हैं।

अन्ध विश्वास को समाप्त करने के लिए ज्ञान की ज्योति जगानी चाहिए। जितना ज्ञान बढ़ेगा, उतना ही अन्ध विश्वास नष्ट होगा।

६१. महर्षि दयानन्द ने किसानों को 'राजाओं का राजा' लिखा है।

६२. पहले संगठन फिर संघर्ष। संगठित होकर ही संघर्ष किया जा सकता है।

६३. सम्यक् ध्यायन्ते ध्यायते वा यस्यां-सा सन्ध्या।

जिसमें परमात्मा का भली भांति ध्यान किया जाता है, उसे सन्ध्या कहते है। सन्ध्या दो सन्धि वेलाओं में की जाती है प्रातः और सायं।

६४. सन्ध्या से आत्मा का परमात्मा से मेल होता है। सन्ध्या में अपने जीवन की पड़ताल करते हुए हम दोषों को दूर करते हैं इन्द्रियों को पवित्र एवं वलिष्ठबनाते हैं।

६५. अयोध्याप्रसाद जी वैदिक मिश्नरी ने नमस्ते का अर्थ इस प्रकार किया है—With all the Knowledge of my mind, with all the strength of my arms, with all the love of my heart, I bow to the sould unto you अर्थात् मेरे मस्तिष्क में

जितना ज्ञान है, मेरे हाथों में जितनी शक्ति है और हृदय में जितना प्यार है—उस सबके साथ मैं आपकी आत्मा के प्रति नमन करता हूं। संक्षेप में नमस्ते का अर्थ है मैं आपका मान्य—आदर करता हूं।

६६. सन्ध्या में १९ मन्त्र हैं।

६७. सन्ध्या निम्न ११ भागों में विभाजित है—

(१) शिखाबन्धन (२) आचमन (३) इन्द्रिय स्पर्श ४ मार्जन मन्त्र, (५) प्राणायाम (६) अघमर्षण (७) मनसा परिक्रमा, (८) उपस्थान (९) गायत्री जप (१०) समर्पण और (११) नमस्कार।

उत्तर दाता—
स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

ओ३म्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश

ब्र० राजसिंह आर्य (अध्यक्ष)
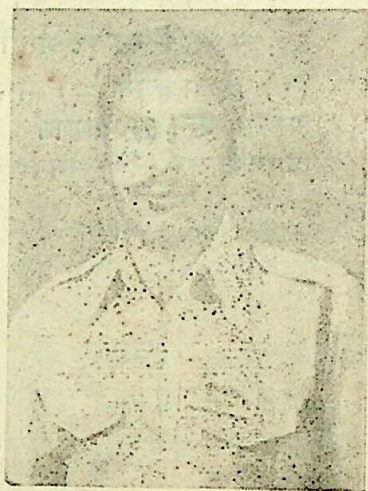
अनिल कुमार आर्य (महामन्त्री)

प्रकाशचन्द्र आर्य (उपाध्यक्ष)

विश्वनाथ आर्य (उपमन्त्री)

ओ३म्
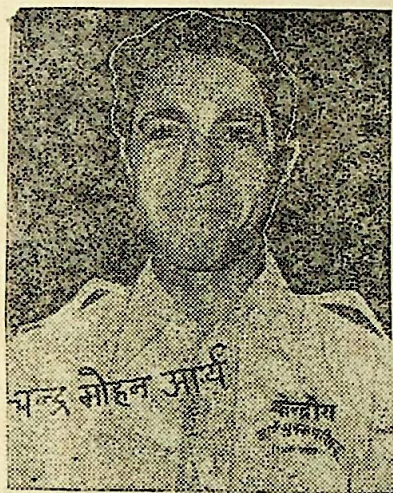
चन्द्रमोहन आर्य (कार्यालय मंत्री)
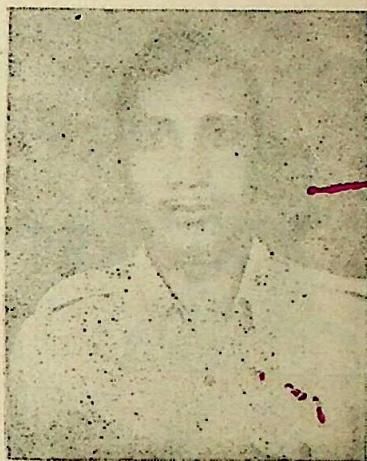
मुन्नालाल आर्य (प्रधान शिक्षक)
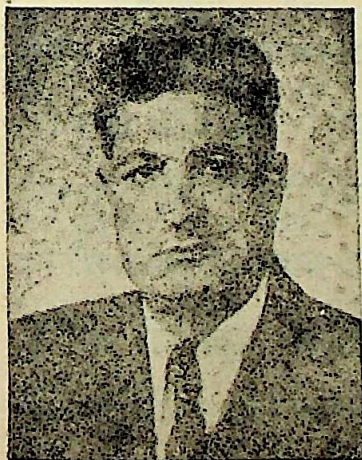
रामनाथ सहगल (लेखानिरीक्षक)

प्रवीणकुमार (कोषाध्यक्ष)

ओ३म्

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ यजु० २२ । २१ ॥

।। ओ३म् ।।

संगठन-सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इलस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।।१।।

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन वृष्टि को ।।

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।।२।।

प्रेम से मिल कर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।३।।

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों ।।

समानी व आकूतिःसमाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।४।।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत् ।।

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिः रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

भाटिया प्रेस रघुवरपुरा नं॰ २ दिल्ली-३१

आर्य्य समाज के नियम

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है—अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्य को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।